ओ३म्

बाबू मिश्रीलाल आर्य

एक प्रेरक व्यक्तित्व

सम्पादक

डॉ. वेद प्रकाश आर्य

एम. ए., पी.-एच. डी.

वटवृक्ष की छाँह

"कालिज के पेड़ों से सरकती धूप नीचे तक फैलने लगी थी, नहीं तो शायद और चलती चर्चा। पता लगा दूर दूर तक कोई लड़कियों का स्कूल नहीं, छात्रावास की तो बात ही दूर, फिर यहां तो फीस के नाम पर जौ बाजरा गेहूं मक्का सब कुछ स्वीकार्य है। उन कन्याओं के माता पिता को मिश्रीलाल जी पर इतना विश्वास कि बच्चियां यहां जितनी सुरक्षित हैं उतनी शायद घर में नहीं। हर कन्या के घर से सीधा सम्पर्क है मिश्रीलाल जी का। वे अग्निहोत्र में भी भाग ले रही थीं। भारत के अनेकों आर्यसमाजों में जाने का अवसर मिला है, छोटे मोटे तीखे शास्त्रार्थों को सुनने का भी कभी-कभी। पर यह सुरक्षा का आश्वासन, बिना किसी भेदभाव के अपनापन देकर, इनके परिवारों के सुख-दुःख से सीधे जुड़कर, इन्हें शिक्षा, अध्ययन का अवसर देकर मुस्लिम युवा पीढ़ी को राष्ट्रीय धारा से जोड़ने का काम जो यहां हो रहा था, बिना किसी प्रचार के, बिना किसी आडम्बर, प्रदर्शन के, सहज सांस सा, वह इससे पूर्व मुझे कहीं देखने को नहीं मिला था। शायद यही थी मिश्रीलाल जी के व्यक्तित्व की विशिष्टता, टाण्डा के प्रत्येक वर्ग से वे जुड़े थे, प्रत्येक सम्प्रदाय में उनका मान था, समाज का प्रत्येक व्यक्ति उन्हें अपना समझता था। सबके सुख-दुःख के भागी थे, सबकी सेवा में तत्पर। सब उन्हें पितृ तुल्य मानते थे। वटवृक्ष की छांह थे वह।"

-डॉ. शान्तिदेव बाला

बाबू मिश्रीलाल आर्य
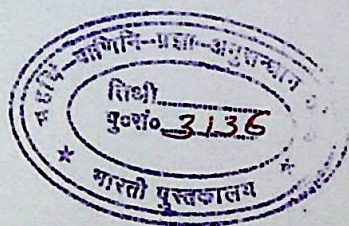
एक प्रेरक व्यक्तित्व

संपादक

डॉ. वेद प्रकाश आर्य

एम.ए., पी-एच.डी

मुद्रक
प्रिंटेक, हिमांशु सदन
पार्करोड, लखनऊ

बाबू मिश्रीलाल आर्य : एक प्रेरक व्यक्तित्व

(स्व. मिश्रीलाल जी के जीवन में अर्जित कार्यों का संग्रह)

●

संपादक

डॉ० वेद प्रकाश आर्य

प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता

वेदाधिष्ठान, 234 हरीनगर, पो. इन्दिरानगर, लखनऊ–16

●

प्रकाशक

आनन्द कुमार आर्य

प्रधान आर्यसमाज, टाण्डा,

●

●

प्राप्ति स्थान

1– टाण्डा, जनपद–अम्बेडकरनगर, उ.प्र.

2– 77/1A, Park Street, 20 Janki Mension,
KOLKATA-700 016

●

प्रथम संस्करण : 2002
प्रकाशन तिथि : 15 नवम्बर 2002
मूल्य : रू0 100.00

●

आभार

मनीष आर्य

अमिताभ आर्य

●

मुद्रक

प्रिंटेक, हिमांशु सदन

पार्करोड, लखनऊ

●

सन् 2002 जिनका जन्मशताब्दी वर्ष है

आर्य कन्या इंटर कालेज के संस्थापक - आर्यसमाज टांडा के भू. पू. प्रधान

बाबू मिश्रीलाल आर्य
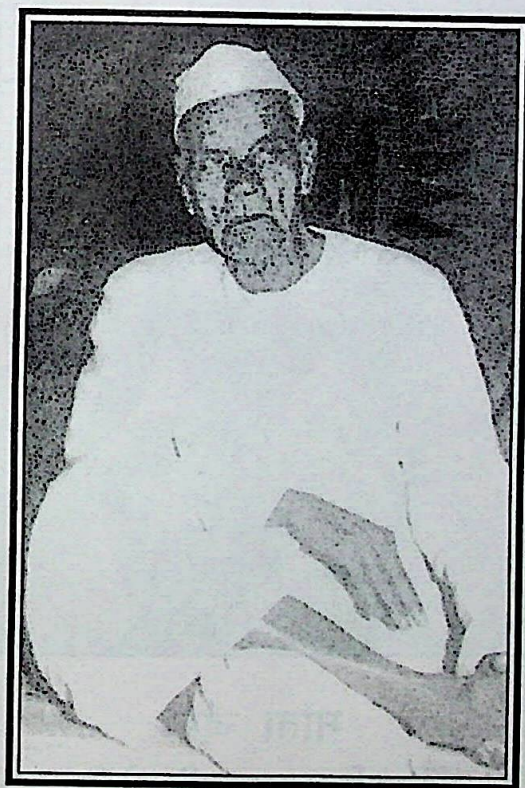
जिसने जग में दी जला, वैदिक धर्म मशाल।
उस विभूति का नाम था- बाबू मिश्री लाल।।

(डॉ. वेद प्रकाश आर्य विरचित)

माता जी
श्रीमती रामप्यारी देवी

समर्पण

पूजनीया माता जी
के
श्रीचरणों में
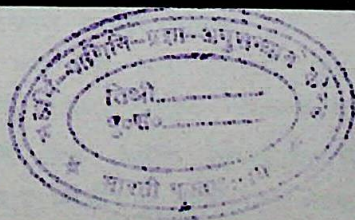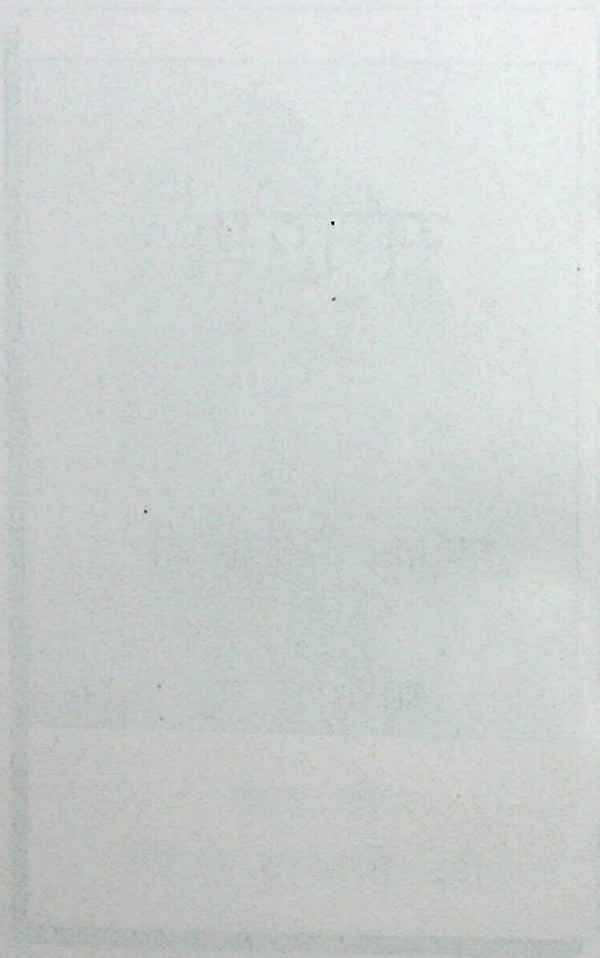
प्रकाशकीय

सन् १९९१ में आर्य समाज टाण्डा स्थापना समारोह के अवसर पर वावू मिश्रीलाल जी की वर्णित आत्मकथा को उनकी इच्छा के अनुरूप 'जीवन ज्योति' के नाम से प्रकाशित किया गया था, (ध्यातव्य है कि वावू मिश्रीलाल जी का आकस्मिक निधन २८ दिसम्बर १९९० को हो गया था) जिसे विद्वानों समेत सभी शुभ चिन्तकों ने सराहा था, अतः सभी की भावनाओं का सम्मान रखते हुए 'बाबू मिश्रीलाल आर्य-एक प्रेरक व्यक्तित्व' पुस्तक आज पूज्य पिताजी की जन्मशताब्दी के अवसर पर प्रकाशित की जा रही है, जिसमें चार आध्याय - धार्मिक, राजनैतिक, शिक्षा-सम्बन्धी तथा उनके जीवनादर्श कुछ सामयिक संशोधनों के साथ 'जीवन-ज्योति' से उद्घृत किये गये हैं। संस्मरणों में भी अनेकों संस्मरण वाद में प्राप्त हुए हैं उनको तथा आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वानों की सम्मतियां भी प्रकाशित की जा रही हैं, जो कि अवश्यमेव आर्य जनों को प्रेरणा प्रदान करेंगी।

हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि हमारी पूजनीया माताश्री श्रीमती रामप्यारी देवी का आशीर्वाद हम सभी को प्राप्त हो रहा है अतः यह प्रेरक ग्रन्थ माताश्री के चरणों में सादर समर्पित है।

इस पुस्तक को संपादन करने का भार पिताश्री के सान्निध्य में रहने वाले आर्यजगत् के विद्वान् डॉ. वेद प्रकाश आर्य, सम्पादक 'आर्य लोक वार्ता' लखनऊ ने सहर्ष स्वीकारा है और बहुत ही योग्यता तथा परिश्रम से संपादन किया है, मैं व्यक्तिगत रूप से डॉ. वेद प्रकाश आर्य का आभारी हूं। साथ ही सभी विद्वानों, शुभचिन्तकों के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने हमारी प्रार्थना पर आपनी सम्मतियां भेजी हैं, इसके अतिरिक्त हम उन सभी के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से हमें अपना अमूल्य योगदान दिया है।

जिस प्रकार पाठकों ने 'जीवन ज्योति' का स्वागत किया है, आशा करते हैं कि उसी प्रकार 'वावू मिश्रीलाल आर्य-एक प्रेरक व्यक्तित्व' का

भी स्वागत होगा।

ईश्वर की महती कृपा से आज अपने मध्य में विद्यमान आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान पूज्यवर आचार्य विशुद्धानन्द जी, जिनमें पूज्य पिताश्री की अटूट श्रद्धा थी, एवं आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के माननीय यशस्वी प्रधान कैप्टेन देवरत्न जी आर्य से इस पुस्तक का विमोचन एवं लोकार्पण कराने में मुझे आत्मसंतोष का अनुभव हो रहा है।

— प्रकाशक

●●●

अनुव्रतः पितुः पुत्रो
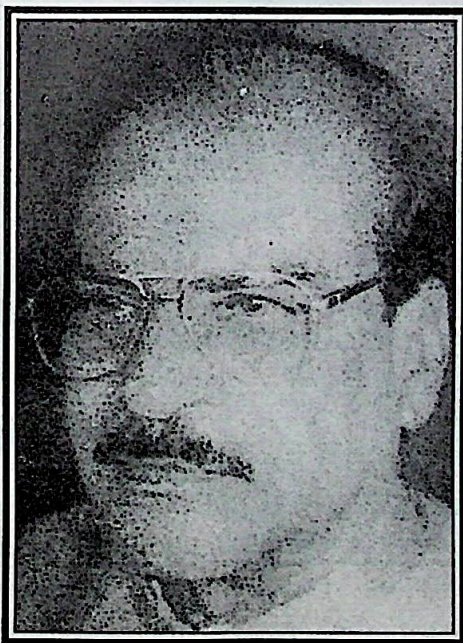
श्री आनन्द कुमार आर्य

ग्रन्थ—सम्पादक

डॉ. वेद प्रकाश आर्य

(वक्ता, कवि, लेखक)

•••

भू.पू. रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
जवाहरलाल नेहरू स्मारक परास्नातक महाविद्यालय, बाराबंकी

सम्पादकीय

आर्यसामाजिक परिदृश्य में टाण्डा पूर्वांचल का सिंहद्वार है। बाबू मिश्रीलाल आर्य वह महारथी थे; जिन्होंने यह सिंहद्वार मेरे लिए खोल दिया था। यह बात १९६१-६२ की है, जब डी.ए.वी. इंटर कालेज आजमगढ़ में हिन्दी प्रवक्ता के रूप में मेरी नियुक्ति हुई थी और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से पूर्वांचल मेरे लिए अनजाना था। उन दिनों श्री रामकिशोर मौर्य, जो कि आर्यसमाज मऊनाथभंजन के प्रधान श्री धर्मदत्त जी के प्रतिष्ठान में कार्यरत थे; से आर्यसमाज आजमगढ़ के उत्सव पर मेरी भेंट हुई। रामकिशोर जी के अनुज रामबहोर मौर्य, आर्य कन्या इंटर कालेज टाण्डा में लिपिक थे तथा बाबू मिश्रीलाल जी के विश्वासपात्र थे। बाबू मिश्रीलाल जी के बारे में यह प्रसिद्ध था कि वे गहरी छानबीन के उपरान्त ही किसी व्याख्याता को आर्यसमाज टाण्डा में आमंत्रित करते थे। श्री राम किशोर से पूर्णतया आश्वस्त होने के बाद ही मुझे टाण्डा आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव हेतु बाबू मिश्रीलाल जी का आमंत्रण मिल सका। 'नवयुवक वक्ता' कहकर उन्होंने मेरा परिचय जनता से कराया। प्रथम बार जो स्नेह सम्बन्ध स्थापित हुआ; वह दृढ़तर होता ही गया। और फिर अनेक वर्षों तक निरन्तर आर्यसमाज टाण्डा के उत्सवों में मैं आमंत्रित होता रहा। यह सिलसिला उस समय जाकर टूटा; जब १९६८ में डी.ए.वी. परास्नातक हिन्दी विभाग में नियुक्ति के पश्चात वेदप्रचार तथा शैक्षणिक कार्य के मध्य मेरा सन्तुलन गड़बड़ाने लगा और कार्यक्रमों में समय पर पहुंचने में मुझे कठिनाई होने लगी।

बाबू मिश्रीलाल के जनमानस पर प्रभाव को रेखांकित करने वाली एक घटना का उल्लेख करना कदाचित् प्रासंगिक होगा। आर्यसमाज टाण्डा का हीरक जयन्ती महोत्सव १९६५ में मनाया गया। सप्ताह भर चलने वाले इस महोत्सव में स्वीकृति देने के बावजूद मैं समय पर नहीं पहुंच पाया। अन्तिम दिन पहुंचा तो ऐसे समय, जब रात्रि में अन्तिम व्याख्यान चल रहा था। उत्सव में न पहुंचने की ग्लानि तो पहले से थी, अंतिम दिन भी अत्यधिक विलम्ब से पहुंचने से वह ग्लानि और भी बढ़

गई। पहले तो मैंने सोंचा कि मंच पर पहुंचे बगैर ही वापस चला

जाऊं? किन्तु वापसी की रात्रि में कोई साधन नहीं था। किसी तरह साहस जुटाकर मंच पर पहुंचा और बाबूजी तक अपने पहुंचने का संवाद पहुंचाया। बाबूजी की सम्भावित रोषपूर्ण प्रतिक्रिया की आशंका से मेरे हृदय की धड़कनें तेज हो रही थीं। तभी धन्यवाद भाषण, समापन तथा शान्तिपाठ के साथ ही बाबू जी ने एक विचित्र घोषणा कर दी– 'हमारे नौजवान वक्ता वेद प्रकाश आर्य आ गये हैं। उनका व्याख्यान कल सायं ७ बजे आर्यसमाज मंदिर में होगा।'

बाबूजी की इस घोषणा से मुझे थोड़ी राहत अवश्य हुई किन्तु चिन्ता बढ़ गई। राहत इस बात की कि उनकी रोषपूर्ण प्रतिक्रिया से बच गया किन्तु चिन्ता इस बात की कि सप्ताह भर के इस विशाल आयोजन में आये हुए बड़े बड़े विद्वानों के भाषण से संतृप्त जनता अब उत्सव समाप्ति के पश्चात आर्यसमाज मंदिर में अगले दिन केवल मेरे व्याख्यान को सुनने भला क्योंकर आयेगी? लेकिन बाबू जी घोषणा कर चुके थे। मुझे रुकना पड़ रहा था; जबकि अन्य उपदेशक–प्रचारक एक एक करके विदा हो रहे थे।

रात्रि और आगे का दिन बड़ी बेचैनी से बीता। मैं सोच रहा था कि विलम्ब से आने का शायद यही उपयुक्त दंड था कि मैं जनशून्यता में व्याख्यान देने की फजीहत झेलूं। ज्यों ज्यों समय बीत रहा था–मैं इसके लिए अपने का तैयार कर रहा था। अन्ततोगत्वा सात बजा और मैं आर्यसमाज मंदिर के सभागार में पहुंचा। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नही रहा, जब आशा के विपरीत मैंने देखा आर्यसमाज का हाल आर्यजनों से भरा हुआ था। उस दिन 'गो–रक्षा' पर मेरा व्याख्यान हुआ। जनता प्रफुल्लित और प्रोत्साहित थी। बाबू जी मंद मंद मुस्करा रहे थे। मैं अपने से ही पूंछ रहा था– क्या आज की जनता इतनी बड़ी संख्या में मेरा व्याख्यान सुनने आई है? उत्तर 'नहीं' में था। वस्तुतः यह बाबू मिश्रीलाल के जनमानस पर प्रभाव का परिणाम था। यह उस व्यक्ति का प्रभाव था जिसकी वाणी और कर्म में कोई भिन्नता नहीं थी। और जिसने अपने तपश्चर्यापूर्ण जीवन से जनता का अगाध विश्वास अर्जित कर लिया था।

आज जब मैं बाबू मिश्रीलाल के बारे में सोंचता हूं तो मेरी आंखों के सामने उस देवतात्मा की धवलखादी वस्त्रावेष्ठित गौरवर्णी प्रौढ़ काया मूर्तिमान हो जाती है और आर्यशक्ति को जागृत और सुसंगठित करने

वाली वाणी कानों में गूंज उठती है। काश ! आज कुछ और मिश्रीलाल हमारे बीच में होते; कुछ और प्रधान जी हमारे संरक्षक के रूप में होते!

'अनुव्रतः पितुः पुत्रो' की वेदोक्ति को साकार करने वाले श्री आनन्द कुमार आर्य ने 'मिश्रीलाल आर्य : एक प्रेरक व्यक्तित्व' ग्रंथ के सम्पादन का भार मेरे कमजोर कंधों पर डालकर मुझे शक्तिसम्पन्न और गौरवान्वित करने का सुअवसर ही प्रदान किया है। परमात्मा से प्रार्थना है कि यह 'आनन्द' ऋषिपथ पर अमन्द गति से बढ़ता चला जाये।

हिन्दी के मनीषी गीतकार अमृत खरे के परामर्शों तथा प्रिय श्री आलोक वीर आर्य के सम्पादन सहयोग एवं श्रमसाधना के बलबूते ही इस ग्रंथ के प्रकाशन की आकांक्षा फलीभूत हो सकी है। किन्तु सर्वोपरि है, साहित्यचिन्तक, पत्रकार एवं व्यंग्यलेखक श्री अम्बिका प्रसाद ओझा का स्नेह-सम्बल। उक्त सभी के प्रति धन्यवाद, आभार और शुभकामनाएं।

'जन्मशती वर्ष' पर प्रकाशित यह ग्रंथ वस्तुतः आर्यसमाज टाण्डा स्थापना शताब्दी वर्ष में प्रकाशित 'जीवन-ज्योति' का परिवर्द्धित रूपान्तरण है। मैं समस्त रचनाकारों का हार्दिक आभार मानता हूं, जिनकी लेखनी ने इस ग्रंथ को संवारने में अपनी अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है और उस देवात्मा की स्मृति को साहित्यिक वैभव से समृद्ध किया है जिसका ध्यान आते ही एक शायर की पंक्तियां मेरे जेहन में उभरने लगती हैं-

क्या कमाले जिन्दगी है कि जब आफताब डूबे,
फलक को नूर दे के, नई अंजुमन सजा दे।

भातृ-द्वितीया, ०६.११.०२
'वेदाधिष्ठान'
२३४, हरीनगर(इंदिरानगर)
लखनऊ - २२६०१६

वेदप्रकाश शास्त्री

•••

शुभाकांक्षा

२००२ ई, श्रद्धेय बाबू मिश्रीलाल जी आर्य 'प्रधान' जी का जन्मशती वर्ष है। इस शताब्दी को अत्यन्त ही धूमधाम से आर्यसमाज टाण्डा तथा आर्य कन्या इण्टर कालेज टाण्डा दोनों संस्थायें मना रही हैं। इसका सफल संयोजन श्री आनन्द कुमार आर्य (मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल तथा उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) कर रहे हैं। आनन्द बाबू आर्य समाज टाण्डा के प्रधान भी हैं

यह शताब्दी रस्मी तौर पर नहीं है। इसे देखकर लोग प्रेरणा लें ऐसी आकांक्षा आनन्द बाबू की है। इन्होंने नारी-शिक्षा से सम्बन्धित १०० वेद मंत्रों के ऋषि दयानन्द के भावार्थ सहित शिलालेख खुदवाये हैं। इसे पुस्तक रूप में भी उपलब्ध कराया है। आर्य कन्या इण्टर कालेज का छात्रावास, मुस्लिम कन्याएं और उनके मुखारविन्द से गूंजती ऋचाएं, सन्ध्या और हवन मंत्रों के पाठ - यह बिलकुल अकेला उदाहरण है, आर्यजगत में। बाबू मिश्रीलाल जी की इस थाती को सम्भाला है आनन्द बाबू ने। बड़े से बड़े राजनीतिक प्रलोभन को ठुकरा कर आर्य कन्या इण्टर कालेज की गौरवशाली परम्परा को बरकरार रखा है। परमात्मा की असीम अनुकम्पा से बाबू मिश्रीलाल जी के सुयोग्य उत्तराधिकारी हुए आनन्द बाबू तथा पूर्व प्रधानाचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर की उत्तराधिकारिणी हुईं सुश्री वीना वर्मा। इन दोनों के कठिन परिश्रम तथा आर्य भाइयों सहित अपने परिवार के सभी सदस्यों के सहयोग से बाबू जी की जन्मशताब्दी चिरस्मरणीय रहेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं है। प्रायः शीर्षस्थ आर्य नेता और विद्वान् इस शताब्दी कार्यक्रम का अंग बन रहे हैं, यह सब आनन्द बाबू जी की सूझबूझ का प्रभाव है। इनके भाई, श्री नरेन्द्र कुमार (इंग्लैंड) तथा श्री राजेन्द्र कुमार जी (सलेम) तथा बहनें सभी सपरिवार आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन से जुटे हुए हैं, ऐसा सौभाग्य किसी गौरवशाली परिवार को ही प्राप्त होता है। विद्वान् मंत्री पं. विश्वमित्र शास्त्री और इनके सहयोगियों का, साथ ही कन्या कालेज की सभी अध यापिकाओं तथा सभी कर्मचारियों का अप्रतिम सहयोग सदा-सर्वदा आनन्द बाबू को प्राप्त रहा है। आनन्द बाबू आर्यसमाज टाण्डा, या आर्य कन्या विद्यालय टाण्डा तक ही सीमित नहीं हैं, इनकी परिकल्पना सम्पूर्ण पूर्वोत्तर-भारत में आर्यसमाज को गतिशील करना है। आर्यविद्वानों को एक जुट करना है। वैदिक धर्म प्रचार को नयी स्फूर्ति प्रदान करना है। इस कार्य में इन्हें सफलतायें भी मिल रही हैं। भगवान् इन्हें बल प्रदान करें, जिससे ये अपने पिता के प्रशस्त पथ पर चलते हुए आर्य-जनता, आर्य-धर्म और वैदिक परम्पराओं को सार्वजनीन और सर्वोपयोगी बना सकें।

-डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री
सदस्य, सार्वदेशिक धर्मार्य सभा
अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग
रणवीर रणंजय महाविद्यालय, अमेठी

अपनी बात

सन् १९१९ ई. में जलियाँवाला बाग की हिंसात्मक घटना के पश्चात् सन् १९४७ तक जो स्वराज्य आन्दोलन चला उससे देश में राजनैतिक चेतना जाग उठी। जन साधारण यह समझने लगा कि अंग्रेजों की मंशा भारत सेवा नहीं बल्कि शासन और शोषण करने की है। श्री मिश्रीलाल जी उन्हीं दिनों अपने हृदय की वेदना लिये हुए प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता सेनानी के रूप में कार्य करने लगे।

सन् १९३७ में देश में प्रथम बार लोकप्रिय मंत्रिमंडल बना। लोगो में उत्साह फैला कि पूर्ण स्वराज्य न सही, अर्द्ध स्वराज्य तो मिला किन्तु मुस्लिम लीग के नेता मिस्टर जिन्ना को महात्मा गांधी, पंडित नेहरु और सरदार पटेल की लोकप्रियता अच्छी नहीं लगी फलस्वरूप देश के दो टुकड़े हो हुए।

मुसलमान और हिन्दू वहीं उलझते रहे जहां मुस्लिम संख्या मे अधिक थे। दंगे फसाद बड़े शहरों में अधिक हुए। वहीं पर अपवाद भी है कि टांडा मुस्लिम बाहुल्य नगरी में न कोई दंगा हुआ और न फसाद यह मिश्रीलाल जैसे निष्पक्ष, दूरदंर्शी स्थानीय नेताओं की सूझबूझ का परिणाम था। जो भी हो भारत स्वाधीन हुआ -खण्डित- १४-१९ अगस्त १९४७ की रात्रि को पंडित नेहरू, सरदार पटेल तथा राजेन्द्र बाबू ने महात्मा गांधी की प्रशंसा की मगर हिन्दुस्तान के टुकड़े होने पर खेद भी प्रकट किया। दूसरी तरफ मुहम्मद अ़ली जिन्ना ने अपने भाषण के अन्त में 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' का नारा लगाया जिससे ऐसा लगा-वे कह रहे थे कि अब कोई भय नहीं क्योंकि पाकिस्तान बनने की घोषणा भारत की स्वतंत्रता से पहले हो चुकी थी। ३० जनवरी १९४८ की शाम को दिल्ली के बिड़ला-भवन के मैदान में प्रार्थना सभा में एक नवयुवक नाथूराम गोडसे ने गांधी जी के सीने पर गोलियां दाग दी मरते समय उनके मुख से 'हे राम' के शब्द निकले। भारत की स्वाधीनता के प्रेरक महापुरुष का कैसा अन्त!

इन सभी घटनाओं ने मिश्रीलाल जी की सक्रिय राजनीति से विदाई कर दी। उनका मुख्य उद्देश्य, जैसा कि महर्षि दयानन्द ने कहा

था कि 'विदेशी राज्य, किसी देश की जनता को पुत्र तुल्य भी रखे तो भी अपने देश के राज्य की तुलना नहीं कर सकता।' पूर्ण हो चुका था, देश स्वतंत्र हो गया था, अपने देश का शासन स्थापित हो गया था।

पुराने ग्रन्थों में गुरुकुल की चर्चाएं हैं कि राजा और गरीब दोनों के बच्चे आश्रम में रहकर एक साथ पढ़ते थे। इसको साकार करने का निश्चय करके मिश्रीलाल जी ने कन्या विद्यालय सन् १६४४ में स्थापित किया और गुरुकुलीय प्रणाली से छात्राबास संचालित किया। उसमें आशातीत सफलता प्राप्त की। वह एक कालजयी पुरुष थे। उनमें ओज और तेज का संयोग था।

मुझे सार्वजनिक और व्यावसायिक जीवन में बहुत स्थानों पर जाने को अवसर मिला। व्यावसायिक जीवन में अच्छी सफलता प्राप्त नहीं कर सका किन्तु जन जीवन के निकट आ सका और बहुत कुछ देखा सुना और समझने की कोशिश की।

हर २४ घन्टे में कितने बड़े और अनगिनत छोटे काम होते हैं। प्रतिपल इतनी घटनायें घट रही हैं कि हर दिन की मर्यादा बराबर है। सुख-दुःख से लिपटा प्रत्येक क्षण भिन्न परिस्थिति में भिन्न महत्व रखता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने को, अपने कार्य को संसार में सबसे अधिक महत्व देता है।

अनुभव हुआ मानव चेतना का उद्‌बोधन संस्कारों पर निर्भर है न कि धन-वैभव अथवा पांडित्य-विद्वता पर। वैदिक संस्कृति में आत्मशुद्धि, अपरिग्रह और संयम पर अधिक बल दिया गया है। पिता से अर्जित संस्कारों को परिमार्जित कर सका जिससे स्वतः लोक-कल्याण सहज संभव हो पाया।

व्यवसाय में तथा सामाजिक कार्यों हेतु पर्यटन में काफी रहा। घर के लोग तथा मित्र कहते हैं कि मेरे पैर में चक्कर है। शायद सही भी है। एक जिज्ञासा लेकर नई जगह जाता हूं और वहां पहुंचकर ताजगी महसूस करता हूं। पर्यटन की एक घटना को दर्शाना समीचीन समझकर उद्‌धृत कर रहा हूं कि हमारे देश की शिक्षा पद्धति कितनी बिगड़ी हुई है और उसके परिणाम कितने भयानक हैं कि वह हमारी संस्कृति को अक्षुण्ण रखने में असमर्थ हैं-

बात सन् १६६२ की है, मैं कालका-हावड़ा मेल ट्रेन से कलकत्ता जा रहा था। डिब्बे में एक नवविवाहित दम्पति थे। अलीगढ़ स्टेशन पर

गाड़ी ठहरी, बीस-पच्चीस युवक हाथों में हाकी स्टिक लिये हुए डिब्बे में घुस आये और आपस में भद्दा मजाक करने लगे। अश्लील गजलें और कव्वाली गानी शुरू कर दी। युवती शर्मिन्दा होकर एक कोने में दुबक गई। युवक पति ने आपत्ति की तो झगड़ा करने पर उतारू हो गये, बेचारी लड़की रोने लगी। थोड़ी देर यह सब देखने के पश्चात् नहीं रहा गया तो उनसे बहस करना फिजूल समझकर गाड़ी की जंजीर खींच ली तो गार्ड व टिकट निरीक्षक तथा अनेक यात्री इकट्ठे हो गये, सबने मनचले नौजवानों को बुरा भला कहा परन्तु वे बेशर्म थे, दूसरे डिब्बे में चले गये और उस समय बात वहीं समाप्त हो गई। टिकट निरीक्षक ने बतलाया कि यह रोज की दिनचर्या है, हम लोग आंख बचाकर लाचारी में सबकुछ देखते सुनते हैं। आजादी की आड़ में तहजीब, संस्कृति की बलि दी जा रही है। आधारभूत सिद्धान्तों का हनन हो रहा है। वोट की घिनौनी राजनीति ने देश का बंटाधार कर रखा है। हम मूक दर्शक बने रहे।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से भारतीय शिक्षा का रूप बदलने लगा, यहां तक कि हमारे इतिहास को भी पूरे तौर पर बदल दिया गया। प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और शिक्षाशास्त्री मैकाले ने कहा था कि जो काम भारत में हमारी बन्दूक और तोपें नहीं कर सकी हैं वह काम हमारे द्वारा चालू की गई शिक्षा-प्रणाली पूरा कर देगी और लोग मन से अंग्रेज बने रहेंगें। आज सौ वर्ष बाद भी मैकाले की भविष्यवाणी सत्य प्रतिलक्षित है। परिणाम प्रत्यक्ष है कि आज न तो अंग्रेजी भाषा का पुष्ट ज्ञान हो पाता है और न ही मातृभाषा का। इसके परिप्रेक्ष्य में इतना अवश्य कहना चाहूंगा कि शिक्षा-प्रणाली में आमूल चूल परिवर्तनों की आवश्यकता है। अब समय मूक दर्शक बन कर सबकुछ सहने का नहीं है। इतिहास का पुनर्लेखन करना होगा, आर्य (श्रेष्ठ) बाहर से नहीं आयें, भारतवर्ष की संस्कृति के साथ भारत के ही मूलनिवासी हैं। भारत की संस्कृति वेदों के आधार पर है। वेदों में सबकुछ निहित है जो आज हम सब वर्तमान में देख सुन रहे हैं। शिक्षा के माध्यम से ही हम युवाशक्ति को सही रूप में ला सकेंगे, उनको उनके कर्तव्य, निष्ठा, सदाचार, अनुशासन का बोध कराने में सफल होंगे।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य तो अच्छे नागरिक बनाना है। इसमें जनता और सरकार की जिम्मेदारी तो है ही परन्तु इसके लिए शिक्षकों का उत्तरदायित्व सबसे अधिक है। हमारी शिक्षण-संस्थाएं इस दिशा में

घोर चिंतन करें। प्रत्येक आर्य विद्यालय की कर्मशाला देशभक्त, चरित्रवान

युवक युवतियां निर्मित करने में सक्षम हैं। उस शक्ति के आधार पर संसार के प्राणिमात्र को आर्य (श्रेष्ठ) बनाया जा सकता है। गुरुकुलीय प्रणाली को विज्ञान सम्मत बनाकर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सफलता प्राप्त की जा सकती है। उदाहरणार्थ कनखल (हरिद्वार) से दो मील पर 'महाविद्याल ज्वालापुर' और 'गुरुकुल कांगड़ी' है। स्वामी श्रद्धानन्द और स्वामी दर्शनानन्द के ये दोनों अमर स्मारक हैं जो त्याग, तपस्या और बलिदान की अमर गाथा सुना रहे हैं। दोनों ही संस्थाओं ने देश को बड़े बड़े विद्वान्, चिन्तक दिये हैं।

पिछले दस वर्षों में समय समय पर बहुत से ऐसे ही आदर्शों को व्यक्तिगत रूप से जान पाया, कुछेक के बारे में सुना भी। अनकहे अनजाने और प्रचार प्रसार से अनेकों विभूतियों से प्रभावित हुआ। अर्जित ज्ञान, अनुभव के आधार पर आर्य विद्यालयों की कर्मशाला को सुव्यवस्थित, संगठित करने का उद्देश्य हृदय में संजोये हुए प्रयत्नशील हूं।

पिताजी को दिए वचनों को भरसक अपने में आम्मसात् करने का प्रयास किया है और वे मेरे जीवनादर्श हैं। उससे जो उपलब्धि हुई है उससे मुझे आत्मसंतोष है।

कर्मक्षेत्र, कार्यक्षेत्र विस्तृत हो गया है। देश और वैदिक धर्म की सेवा करने की सीमा नहीं, मैं उस असीम को छूना चाहता हूं, ईश्वर मुझमें वह शक्ति दे !

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः !

दिनांक १५ अक्टूबर २००२ —आनन्द कुमार आर्य

●●●

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड : व्यक्तित्व

काव्यस्तवन

संस्मरण

द्वितीय खण्ड : आत्मकथ्य

(बाबू मिश्रीलाल आर्य द्वारा १६६० में लिखित आत्मकथा)

प्रथम खण्ड

श्रद्धांजलि-समर्पण

–आचार्य डा. विशुद्धानन्द मिश्र
विद्यामार्तण्डः(डी.लिट्.)

वेदोद्धारण-सुव्रते प्रथितिमायातस्तपो विग्रहः,
योगक्षालित कल्मषोऽमलमतिश्चानन्द वारान्निधौ।
मज्जन् नित्यमकल्मषं प्रतिपलं पश्यन् समाधिस्थितौ,
लोकोद्धार-परायणो भुवि दयानन्दो जयत्यञ्जसा॥1॥

वेदोद्धार के शुभ संकल्प-व्रत पालन में अविरल निरत, तपोमूर्ति, योगाभ्यास के द्वारा अन्तःकरण को निर्मल करके, ऋतम्भरा प्रज्ञा के धनी, आनन्द और दया के सागर में निरन्तर निमज्जन करते हुए, समाधि की स्थिति में निष्कल्मष ब्रह्म का प्रतिपल दर्शन करते हुए, लोकोद्धार-परायण ऋषिवर दयानन्द का भूमण्डल में जय-जयकार हो रहा है।

तस्यर्षेः श्रुति शास्त्र सम्मत मति-प्रख्यापिता युक्तयः,
सिद्धान्ताः खलु तीक्ष्ण-तर्क-निचिताः प्राभावन् पण्डितान्।
सत्यासत्य-बिनिर्णये शुचि मनास्तात्कालिकैः पण्डितैः
शास्त्रार्थेषु जिगाय तान् प्रतिबुधान् तेने समज्ञां पराम्॥2॥

उस ऋषि की वेदशास्त्र-परिष्कृत बुद्धि द्वारा प्रतिष्ठित युक्तियों से परिपूर्ण, तीखे तर्कों की कसौटी पर खरे उतरने वाले सिद्धान्तों ने निष्पक्ष सत्यान्वेषी पण्डितों को अतितरां प्रभावित किया है। पवित्र मानस ऋषिवर की सत्यासत्य का विनिर्णय करने में तात्कालिक पण्डितों के साथ शास्त्रार्थ करके प्रतिपक्षी विद्वानों को परास्त कर सर्वत्र कीर्ति फैल गई।

बाल्यादेव विलक्षणः सुमतिमान् सद्भाव-सम्भूषितः,
सत्याचार-विचार-साधु पुरुषैः सार्धं गतः सङ्गतिम्।
कालेनैव शनैः शनैः सुरुचिरमावर्धयत् स्वां रुचिराम्,
अश्रौषीदयमार्यपण्डितवरैर्गाथामृषेः कीर्तिदाम्॥3॥

बाल्यकाल से ही विलक्षण-बुद्धिसम्पन्न, उत्तमभावों से विभूषित, श्री

बाबू मिश्रीलाल जी आर्य को उत्तम आचार-विचार वाले साधुपुरुषों की सगति मिल गई। कालान्तर में धीरे धीरे इनको अपनी रुचि और मनोवृत्ति को परिष्कृत करने के पुण्यावसर मिलते रहे। इन्होंने कहीं पर आर्यपण्डितों के द्वारा ऋषिवर दयानन्द की कीर्त्तिगाथा सुनी।

औत्सुक्यं समभूद्यदार्यजनताया योजितानुत्सवान्,
तत्रैवायमुपागतः सुविदुषां सत्योपदेशान् द्रुतम्।
श्रोतुं वेदविचारणां सुविपुलान् पाखण्ड-खण्डानपि,
स्वाध्यायं च गभीरमेवमकरोदाजीवनं सुव्रती॥5॥

इनके हृदय में ऋषिवर के सिद्धान्तों को समग्रतया जानने की उत्कण्ठा प्रबल-रूप में जागृत हो गई, ये जब सुनते थे कि अमुक स्थानों पर आर्यसमाज के द्वारा उत्सव आयोजित हो रहा है, वहीं वहीं ये पहुंच जाते और सत्योपदेशक विद्वानों के उपदेशों को बड़ी ललक से सुनते वा शंकाओं का समाधान करते थे। इन उपदेशों मे वेदमन्त्रों पर आधारित विचारों को शीघ्र हृदयग्म कर लेते थे, यत्र तत्र उत्सवों में प्रचलित पाखण्डों के खण्डनों को बड़ी अभिरुचि से सुनते थे। ये आजीवन गम्भीर स्वाध्यायी रहे, नित्य स्वाध्याय करना इनका शुभ संकल्प और व्रत था।

तस्मै वै समये समाज विदुषामान्दोलनेऽभूद्रुचिः,
क्रान्तेः शंखमवादयन् खलु दयानन्दस्य भक्ताः समे।
दुर्भाग्यं यदि चार्यसंस्कृति जुषां प्राण-प्रिया मातृभूः,
आर्याणां निवसेदियं सुरधरा दास्येन सम्पाशिता॥6॥

उसी समय आर्यसमाज के विद्वानों द्वारा परिचालित स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रति इनकी अभिरुचि तीव्र हो गई। तब ऋषि दयानन्द के अनुयायी श्रद्धालु, आर्यजनों ने एक स्वर से मातृभूमि को स्वतन्त्र करने के लिए क्रान्ति का शंखनाद फूंक दिया और कहा कि हमारा यह दुर्भाग्य है कि आर्य संस्कृति के पुजारियों की प्राणों से प्यारी माता देवभूमि विदेशी अंग्रेजों की दासता की शृंखलाओं में जकड़ी रहे और आर्यजन जीवित रहकर माता की इस दुर्दशा को देखते रहें, तो हमें धिक्कार है।

मिश्रीलाल-महोदयस्य हृदये चण्डःप्रचण्डोऽनलः,
तीव्रं सञ्ज्वलितोऽप्रशाक्यदहनः प्रोज्ज्वालमालाकुलः।
तत्काले व्रतमेव मातृधरणेः सङ्कल्पमाधारयत्,
पाशच्छेदकृतौ स्वजीवनमहं दास्यामि शिष्टं ध्रुवम्॥7॥

यह सारा हृदय विदारक दृश्य देखकर बाबू मिश्रीलाल आर्य जी के भावुक हृदय में जाज्वल्यमान ज्वालाओं की मालाओं से घिरा हुआ, कभी प्रशान्त न होने वाला तीव्रतापमय अखण्ड और प्रचण्ड अनल (अग्नि) जलने लगा। बस, उसी समय अपनी जननी-भूमि की दासता की बेड़ियां काटने का सत्संकल्प धारण कर लिया और शेष जीवन इसी क्रान्ति की निष्ठा में आहुत करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

स्वाधीनं निजराष्ट्रमीक्षितुमहं सत्यव्रताऽऽपूर्त्तये,
कारागार निषेवणस्य सरणिं वर्या स मेने धिया।
घोरोत्पीडनयातनासुसहनं स्वे जीवने सोऽवृणोत्,
वीरा मातृसुरक्षणाय ददते प्राणान् हसन्तो मुदा॥७॥

अपने इस संकल्पित सत्यव्रत की पूर्ति के लिए एवं अपने देश को स्वतंत्र देखने के लिए कारागार की यातनायें सहन करने के मार्ग का वरण करना श्रेयस्कर समझा, क्योंकि वीरपुरुष माँ की रक्षा करने में अपने प्राणों का समर्पण हंसते हुए प्रसन्नता से कर देते हैं।

एवं स्वीयसुजीवने व्यदधदसौ स्वीयां धरां मातरम्,
स्वाधीनाममरप्रसूमपि दयानन्दस्य जन्मप्रदाम्।
नित्यं वैदिकधर्म पालनपरश्चाऽऽसिञ्चदाजीवनम्।
पुण्यात्मार्य समाजपावनतरुं धर्मव्रती कीर्तिमान्॥८॥

इस प्रकारा श्री बाबूजी ने अपने जीवन काल में ही अपनी इस भारत-भूमि को अंग्रेजों से मुक्त करा स्वाधीन कर लिया। यही भूमि देव और स्वामी दयानन्द सदृश ऋषि महापुरुषों की जन्मदात्री रही है। नित्य वैदिक-धर्म पर आधारित नियमों का पालन कर जीवनयापन करते हुए, इन कीर्तिशाली धर्मव्रती पुण्यात्मा ने जीवन के अन्तिम श्वास तक आर्यसमाज रूपी वृक्ष को सींचा।

तस्यानन्दकुमार आर्यसुमतिः पुत्रः पवित्रात्मना,
टाण्डास्थार्यः समाजितश्च सुतरामायोजनं कुर्वते।
सर्वे विश्वनिवासिनो मुनिदयानन्दस्य भक्ता मुहुः,
जायन्तां श्रुतिमार्गगाश्च सुखिनस्ते कामयन्ते भृशम्॥९॥

उनके धर्मशील सुपुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य तथा टाण्डा नगरस्थित आर्यसमाज के समस्त सदस्य व अधिकारी ऋषिभक्तों की कामना है कि 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का पावन वैदिक-सन्देश विश्वभर में प्रसारित हो

जावे और समग्र मानव वेद मार्ग के अनुयायी बनकर सुखी रहें।

देशाद्दूरतराद् विदेशविषयादेताश्च संन्यासिनः,
श्रद्धेयाः किल मातृभक्तिनिरता वैदुष्य सम्भूषिताः।
विद्वांसः श्रुति-बोध-पावितहृदः शिक्षाविदामग्रगाः,
सङ्गीते भजनोपदेशनिपुणाः आमन्त्रिताः साम्प्रतम्॥10॥

आज इस विराट् समारोहपूर्ण महोत्सव के शुभ अवसर पर सुदूर देश और विदेश से श्रद्धेय आर्य संन्यासी, वैदुष्य-विभूषित वेद-ज्ञान से पवित्र हृदय वाले वन्दनीय विद्वज्जन, संगीताचार्य, कुशल अनुभवी भजनोपदेशक, सादर आमंत्रित अतिथि आर्यजन यहां पधारकर उत्सव की श्री-वृद्धि करके हमें कृतार्थ और पूर्णकाम कर रहे हैं।

सर्वेषामभिनन्दनं दधमहे प्राज्ञार्यसम्मेलने,
जानन्त्येव समेऽपि राष्ट्रविषये या वै समस्याः पुरः।
अस्मद्देशमिमं प्रपीडयति वैआतङ्कवादोऽधुना,
यद्धर्मान्तरणं गवां विलपनं शृण्वन्तु चार्या समे॥11॥

इस सम्मेलन में पधारने पर हम सब आपका स्वागत और अभिनन्दन करते है। आपलोग हमारे राष्ट्र के सामने आई हुई दुरन्त समस्याओं से भलीभांति परिचित हैं कि दुर्हृदय, दुष्ट कुचाली हमारा वंचक पड़ोसी अपने छली स्वभाव के अनुसार दुर्दान्त आतंकवाद के द्वारा हमारे देश में अस्थिरता और अशान्ति फैला रहा है। धर्मान्तरण के कुटिल प्रचार प्रसार के द्वारा हिन्दुओं की संख्या तेजी से निरन्तर घटती जा रही है। गायों आदि मूक पशुओं का नृशंसवध किया जा रहा है।

अस्मत्-संस्कृति-सभ्यता-विनशनं ते कुर्वते साम्प्रतम्,
राष्ट्रद्रोहिण एव धूर्त्तदनुजा गोभक्षका राक्षसाः।
आर्या जाग्रत मातृभूमिरधुना युष्मत्-प्रतीक्षारता,
कालोऽसौ समुपागतोऽर्थ कृतये माता प्रसूते सुतम्॥12॥

आर्यों की भाषा (हिन्दी, संस्कृत) संस्कृति और सभ्यता मिटाने पर देशद्रोही तुले हुए हैं। धूर्तदानव और गोभक्षक राक्षस सब देशद्रोही हैं। आर्यों ! जागो, यह आर्त्त मातृभूमि तुम्हें बुला रही है, तुम्हारी प्रतीक्षा में है। अब वह समय आ गया है जिस दिन के लिए माँ अपने पुत्र को जन्म देती है।

सेनान्याहुत जीवनेभ्य इतरा श्रद्धाञ्जलिःका भवेत्?

सत्यार्थस्य प्रकाश एव नितरामादर्शयत् सत्पथम्।
तस्मादार्य समाजिनो हि सकलान् गोरक्षकान् धार्मिकान्,
कृत्वा संघटितान् अवन्तु जननीभूमिं स्वधर्मं मुदा॥13॥

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और हुतात्मा बलिदानी रक्त-साक्षियों के लिए इस कर्तव्यपालन से बढ़कर और श्रद्धांजलि क्या हो सकती है। ऋषि दयानन्द के 'सत्यार्थ प्रकाश' ने जीवन के गन्तव्य समस्त सन्मार्गों के द्वार खोल दिये हैं। इसलिए भूमण्डल के समस्त आर्यजन, सारे गोरक्षक धर्मशीलों को संगठित करें, मिलकर वैदिक-धर्म और मातृभूमि की रक्षा करें।

अधर्माचरणाल्लोकान् रक्षितुं वेद संस्कृतिः।
केवलैव समर्थाऽस्ति युवानो जाग्रताऽधुना॥14॥

अधर्माचरण से मनुष्य मात्र की रक्षा करने में केवल वैदिक-संस्कृति ही समर्थ है, इस लिए आर्य युवकों! जागो, राष्ट्र और धर्म की रक्षा करने का कर्मक्षेत्र तुम्हें पुकार रहा है।

***

स्वामिनः परमो भक्तः

विज्ञमित्र शास्त्री

मिश्रीलालः प्रथित सुयशो दिव्य पुरुषोत्तमेषु
आसीदेकः परमधनिकः सज्जनानां धुरीणः।
ज्ञानाभवः प्रचुरमभवत् योषितां चात्र मध्ये
चैतत् दृष्ट्वा भृषं दुखितं चित्रमासीत् कृपालोः।।
विद्याहीना यदि च वनिता सन्ति लोके नु यस्मिन्
सर्व नष्टं भवति भुवनं नात्र सन्देहलेशः।
इत्यौसुक्यात् प्रबल मनसा साधु सन्धार्य चैतत्
रम्या चैका व्यरचयदसौ योषितां पाठशाला।।
छायाश्चैमा नियम निरता वर्गभेदं विहाय
सम्भाषन्ते प्रमुद मनसा यत्र गीर्वाण वाणी।।
रम्यं सौधं पर सुभगं चात्र सुधया विलिप्तम
मोदन्ते वै सरस मनुजाः तच्च दृट्वा समन्तात्।।
स्वामिनः परमोभक्तः सत्यवादी दृढ़व्रतः।
आत्मनः जीवनं यावत् खादीवस्त्रमधारयत्।।
आरतं भारतं दृष्ट्वा चेतो नित्यमद्यत्।
बन्धनात् मातरं मोक्तुं विविधं यत्नमाचरत्।।
भौतिकं च सुखं त्यक्तवा निजं वै पैतृकं गृहम्।
आङ्गलानां शासने चासो कारागारम सेवयत्।।
टाण्डार्य समाजस्य वर्तते यच्च विश्रुतिः।
मिश्रीलालो महाभागो यस्य मूले प्रवर्तते।।
आर्यधर्मानुरक्तस्य महर्षेनुयायिनः।
नमामो वयमेतस्य निर्मलं पाद पङ्कजम्।।

अमरत्व पा गये

❑सियाराम 'निर्भय'

ध्येयनिष्ठ कर्मठता में वे सत्य-हृदय से साधक थे,
प्रतिभाशाली आर्य जनों के हित में कभी न बाधक थे।
कार्य किये उत्तम स्थायी जीवन को समझा क्षणभंगुर,
जनपद के घर-घर में लाये आर्यसमाज सु पावन अंकुर।
आर्यकन्या विद्यालय खोला भेदभाव को दूर भगा कर,
पढ़ती हैं मुस्लिम कन्यायें आज वहां पर ध्यान लगाकर।
आर्य जगत के विद्वानों का करते रहे सदा सम्मान,
ऐसे दानी आर्य पुरुष को मेरा सौ सौ बार प्रणाम।
वेदोक्त धर्म के जागरूक प्रहरी सदैव वे कहलाये,
जो भी उनके निकट गये वे बिना प्रभावित कब आये?
संकट विकट कठिन पथ पर वे कभी नहीं थे घबड़ाते,
बड़े-बड़े अधिकारी उनके आगे नतमस्तक हो जाते।
फूले फले सदा विकसित हो, आर्य वाटिका रहे आबाद,
जनमानस को याद रहेगा नगर मनोहर फैजाबाद।
आर्यसमाज टाण्डा अब अपना पार कर चुका सौंवा साल,
मर कर भी अमरत्व पा गये 'निर्भय' होकर मिश्रीलाल।

●●●

जन्मशती यह वर्ष तुम्हारा

❑राधेश्याम आर्य

बाबू मिश्रीलाल आर्य वर! प्रेरक था व्यक्तित्व तुम्हारा।
अमर रहेगा सदा धरणि पर, अनुपमेय कर्त्तृत्व तुम्हारा।
टांडा आर्यसमाज अभी तक स्मृतियां है रहा संजोए।
फूल रहे हैं, फल देते हैं, बीज तुम्हारे जो थे बोये।
रहे प्रधान कई वर्षों तक, टांडा आर्यसमाज सदृश के।
बने सुदृढ़ स्तम्भ सदा ही, कर्मठता से अपनी इसके।
इण्टर कालेज कन्याओं का, किया तुम्हीं ने था संस्थापित।
आज जहां हो रहीं सहस्रों- कन्याएं प्रतिवर्ष सुशिक्षित।
जीवन से ऋषि दयानन्द के, तुमने जीवन-पाठ पढ़ा था।
वैदिक शिक्षाओं से तुमने, अपना वह व्यक्तित्व गढ़ा था।
रहे बांटते वैदिक-अमृत, जन जन को दैनिक आजीवन।
किया प्रयास निरन्तर तुमने, जिससे आए जन, नवजीवन।
जन्मशती यह वर्ष तुम्हारा! आर्य जनों को कर दे प्रेरित।
दिव्य तुम्हारे सत्कर्मों से, आर्य सभी हों अब उत्प्रेरित।
कर्मठता जो रही तुम्हारी, करें सभी हम आज अनुकरण।
जो संदेश दिया था तुमने, उसे करें हम आज वरण।
आर्य समाज बढ़े धरती पर, यही तुम्हारी थी अभिलाषा।
स्वप्न बनें साकार सभी वे, जिनकी तुमने की थी आशा।
जन्मशती का वर्ष तुम्हारा, आज यहां हम मना रहे हैं।
चलें तुम्हारे पदचिन्हों पर, साहस इतना जुटा रहे हैं।
आओ! लें संकल्प सभी हम, उनके जो हैं काम अधूरे।
मिल करके, निष्काम भाव से, उसे करें हम सब अब पूरे।
श्रीयुत मिश्रीलाल आर्य जी, जन्मशती पर शत-शत वन्दन।
दिव्य तुम्हारी स्मृतियों का, जन्मशती पर है अभिनन्दन।।

●●●

संस्मरण

श्रद्धा सुमन

आत्मज की ओर से

❑आनन्द कुमार आर्य

२८ दिसम्बर १६६० के सायंकाल का समय – मेरे अब तक के जीवन की घोर परीक्षा की घड़ी! पूज्य पिताजी की अस्वस्थता के समाचार से उद्विग्न, उद्वेलित जयपुर से उपलब्ध साधनों के द्वारा शीघ्र टाण्डा पहुंचने की चिन्ता में जयपुर स्टेशन पर था कि समाचार मिला कि पिताजी नहीं रहे। समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया कि इतनी जल्दी में यह सब कुछ कैसे हो गया? मनःस्थिति के किसी कोने में भी ऐसे समाचार की आशंका लेशमात्र नहीं थी। वह रुग्णावस्था में चल रहे थे, मैं कलकत्ता में रहता था, अस्वस्थता की सूचना मिलते ही मैं टाण्डा पहुंच जाया करता और उन्हें कलकत्ता ले आता, उपचार होता वे ठीक हो जाते तो तुरन्त टाण्डा पहुंचने की जिद करते और उन्हें टाण्डा पहुंचा दिया जाता। यह क्रम चलता रहा, उसी क्रम में आश्वस्त होकर मैं शीघ्र टाण्डा पहुंचकर पिताजी को कलकत्ता ले जाने की उधेड़बुन में था कि एकाएक मेरे उस चिन्तन को झटका लगा और उसे पूर्ण विराम देना पड़ा। इतनी जल्दी मेरा अवलम्ब खो जायेगा। जीवन के चौवन वर्ष जिस निश्चिन्तता एवं पूर्णता से बीते वह सहारा चला गया। मैं अनाथ, असहाय हो गया।

किन्तु, पितृजन से संजोये धैर्य ने मेरा मार्ग प्रशस्त किया और मैं जब अपने बचपन से इस समय तक के जीवन पर दृष्टिपात करता हूं तो मुझे शक्ति मिलती है स्नेहिल उदार पिता के प्यार की, उनके सिखाये हुए कर्तव्य की। उनकी शिक्षा कानों में गूंज रही है, वही मेरी धरोहर है और उसके सहारे मुझे कर्तव्यबोध होता है, मैं उस मार्ग पर चल पड़ता हूं।

मेरी स्मृति में वह हर एक सुबह विद्यमान है, जब पिता जी हम सबको जगाकर भक्ति के भजन स्वयं गाते और गवाते थे, संध्या के मंत्रों का पाठ सिखाते थे। गृह में किसी अनुष्ठान अथवा पर्व पर यज्ञ अवश्य होता और उसमें यजमान के स्थान पर पिताजी हम लोगों को छोटी

अवस्था से ही बिठाते और घृत की आहुतियां स्वयं न देकर हम लोगों से दिलवाते थे। एक पिता के नाते कितनी महानता थी उनमें, कितना विशाल हृदय था उनका जो अपने पुत्रों को बाल्यावस्था में ही उत्तरदायित्व का बोध कराते, इससे उन्हें जो सन्तोष, सुख प्राप्त होता वह उनकी सबसे बड़ी पूंजी थी। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों, पर्वों और उत्सवों पर आर्य समाज मंदिर नियमित रूप से ले जाते। पारिवारिक धर्म-कर्त्तव्यों से वे बहुत सचेत थे, परिणामस्वरूप उसकी छाप और संस्कार आज भी परिवार में विद्यमान हैं।

पूज्य पिताजी के जीवन से सम्बन्धित प्रसंगों एवं उनके जीवन की उपलब्धियों के विषय में विद्वानों, सगे सम्बन्धियों, स्वजनों ने विस्तृत वर्णन अपने संस्मरण में दिया है। मैं उसकी पुनरावृत्ति न करके अपने स्वानुभूत प्रसंगों का वर्णन करना समीचीन समझता हूं। बाल्यकाल से १८ वर्ष की आयु तक उनके सान्निध्य में रहकर जो संस्कार संचित किये उसका संक्षिप्त उल्लेख कर चुका हूं। अब जीवन के वे प्रसंग हैं जिनसे युवासस्था को पार किया है और आज जो कुछ हूं पिताजी के संस्कारों का ही प्रतिबिम्ब है।

सन् १९५५ में मैंने इन्टरमीडिएट पास किया उसके पश्चात् की शिक्षा टाण्डा में उपलब्ध नहीं होने से पिता जी ने ग्रेजुएशन करने के लिए घर में विरोध होने बावजूद लखनऊ भेजा। लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल गया और आवास की व्यवस्था लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्रावास में उपलब्ध हो गयी। मैंने केवल दो वर्ष वहां अध्ययन किया। बी.ए. करने के पश्चात् अपने व्यापार में लग गया। उन दो वर्षों के छात्रावास काल में पिताजी के अगणित पत्र मेरे पास पहुंचे थे, जो नैतिक शिक्षा से लेकर कर्त्तव्य-बोध, देश की परिस्थिति के वर्णन, साथ में सिनेमा आदि न देखने की सुशिक्षा से परिपूर्ण होते थे। काश! मैं उन पत्रों को संजो कर रखे होता जिससे भावी संतानों को बोध होता कि एक पिता अपने पुत्रों के भावी जीवन के प्रति किस हद तक चिन्तन करता है। पिता और पुत्र का व्यवहार कितना मधुर, सुखद तथा मित्रवत् होना चाहिए इसके आदर्श उदाहरण थे मेरे पिताजी। पत्रों में सीख का वही क्रम सन् १९५७ से १९६४ तक चलता रहा जब कि उन दिनों मैं स्थायी रूप से कलकत्ता में निवास करता था।

७ मार्च सन् १९६४ को मेरा विवाह संस्कार पटना में सम्पन्न हुआ था। मैंने बहुत आग्रह करके बाबूजी के लिए शुद्ध खादी सिल्क का

कुर्ता बनवाया था जिसको उन्होंने बहुत अनुनय विनय के पश्चात् कुछ घण्टों के लिए ही धारण किया, उसके उपरान्त तो पिताजी का वही श्वेत खादी का परिधान आजीवन रहा। यह उनके जीवन के मूलाधार सिद्धान्त उच्चविचार का द्योतक है। पिताजी के जीवन की एक विकट घड़ी का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है और वह है सन् १९६४ में पिताजी के मधुमेह रोग से पीड़ित होने की घटना। टाण्डा में उपचार की उचित व्यवस्था के अभाव में पिताजी को पटना ले जाया गया। वहां मेरी ससुराल के लोगों ने सारी व्यवस्था अपने निवास स्थान पर ही की। उन लोगों की सेवाओं का फल हुआ कि पिताजी शीघ्र ही स्वास्थ्यलाभ करने लगे। ईश्वर की कृपा से नित्यकर्म करने में उन्हें किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। परन्तु बैठने में कठिनाई होती थी और उस कारण से नित्य यज्ञ करने में असुविधा थी जिसके लिए वह बेचैन रहते और यज्ञ न कर पाने की असमर्थता उनकी उदासी का कारण बनी हुई थी। एक दिन मुझसे बोले कि तुम यज्ञ करना प्रारम्भ करो तो मुझे बहुत सन्तोष होगा तथा शान्ति मिलेगी। मैंने पिताजी के आदेश का पालन कर नित्य यज्ञ करना प्रारम्भ कर दिया जिससे उन्हें आन्तरिक सुख की अनुभूति हुई थी, और प्रफुल्लित रहने से उनके स्वास्थ्य में निरन्तर सुधार होने लगा। इससे सम्बन्धित एक और अंश है जिससे पिताजी के हृदय में अन्तर्निहित समाज के प्रति प्रेम और कर्तव्य का बोध होता है। पिताजी के पटना आवास में आर्य समाज टाण्डा का पूर्व नियोजित वार्षिकोत्सव का समय आ गया था, उसे सफल करने के लिए उन्होंने मेरे लघुभ्राता श्री राजेन्द्र कुमार को टाण्डा भेजा था।

आर्य समाज के उत्थान, उसके प्रचार की कितनी तड़प, कितनी उत्कट वेदना पिताजी के हृदय में थी इसकी एक झलक सन् १९८० की घटना से परिलक्षित होती है। वह घटना घटित हुई थी कलकत्ता के आर्य समाज बड़ाबाजार की नं.१ मुंशी सदरुद्दीन लेन स्थित भूमि के लिए जिसके एक अंश में स्थानीय आतताइयों ने एक शिवमंदिर की स्थापना कर दी थी तथा बाकी भूमि का अधिकांश अराजक तत्वों के अधिकार में था। शिवमंदिर का विरोध करने पर आर्यसमाज के तत्कालीन मंत्री श्री चान्दरतन-दम्माणी को आततायियों ने कठोर कुठाराघात से मृतप्राय कर दिया था और वह मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में भर्ती थे। मैं उन दिनों व्यापारिक कार्य से बम्बई गया हुआ था और पिताजी

कलकत्ता आये हुए थे। मेरे बम्बई से लौटने पर पिताजी ने दुःखित होकर उक्त घटना का वर्णन किया, सहजभाव से सहानुभूतिपूर्वक मैंने पूछा कि आप चाहते क्या हैं? पिताजी ने स्पष्ट कहा कि मैं चाहता हूं कि तुम आर्यसमाज के कार्यों में रुचि लो। मैं देख रहा हूं कि आर्य समाज का कार्य मेरे परिवार में मेरे तक ही सीमित रह जायेगा। तुम लोगों की आस्था तो आर्य समाज में है, सन्ध्या, हवन करते हो इससे तो सन्तोष है, किन्तु आर्य होने के नाते समाज के प्रति अपने कर्तव्य को भी समझना और उसका पालन करना चाहिए। तुम आर्यसमाज बड़ाबाजार की भूमि को विधर्मियों से छुड़ाकर समाज पर बहुत उपकार करोगे। तुममें उसे करने की क्षमता है और मुझे विश्वास है कि उसमें तुम्हें अवश्य सफलता प्राप्त होगी। मैं उस रात्रि सो नहीं सका, और सोंचता रहा कि जिस पिता ने आज तक कुछ मांगा नहीं, मेरी आकांक्षाओं का सर्वदा आदर किया और आज वह मुझसे आशा कर रहे हैं कि समाज के लिए कुछ करूं, मुझे अपने कर्तव्य का बोध ही तो करा रहे हैं। वह् मेरे में, धर्म, समाज, देश, जाति के लिए कुछ करने की क्षमता देख रहे थे और उन्हें मुझपर पूर्ण विश्वास था अतः मैंने निश्चय किया कि पूज्य पिताजी की आकांक्षाओं का आदर करना ही मेरा कर्तव्य है और दूसरे दिन प्रातः ही मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि आपकी आज्ञा का पालन होगा। इससे पिताजी की प्रसन्नता देखते बनती थी। ईश्वर की महती कृपा तथा पिताजी के आशीर्वाद के २३ दिसम्बर १९८३ को उस कार्य में सफलता मिली और आर्यसमाज बड़ाबाजार की पूर्ण-भूमि आतताइयों से खाली हो गई। इससे एक तरफ तो मुझे आन्तरिक शान्ति प्राप्त हुई कि मैंने पिताजी को दिये गये वचन का पालन किया और दूसरी तरफ उन्हें इस कार्य से कितना सन्तोष प्राप्त हुआ होगा, यह तो वही जानें।

सन् १९८२ में स्व. पूनमचन्द्र आर्य की प्रेरणा से आर्यसमाज कलकत्ता ने पिताजी का अभिनन्दन किया था और उसमें उक्त समाज की तरफ से आर्यकन्या विद्यालय टाण्डा को पांच सिलाई मशीन तथा ३१०० रु. नकद प्रदान किया गया था जिससे उस वक्त विद्यालय की एक भारी कमी गृहविज्ञान की पूर्ति हुई थी। पिताजी इस अवसर का सर्वदा वर्णन करते और श्री पूनमचन्द जी के इस उपकार को नहीं भूलते थे। उनके दिवंगत होने पर पिताजी बहुत मर्माहत हुए थे। सन् १९८५ में आर्यसमाज, १९ विधानसरणी कलकत्ता की स्थापना शताब्दी

में पूज्य पिताजी ने भाग लिया था और उनके विद्यालय की छात्राओं ने समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम उपस्थित किया उससे उन्हें आन्तरिक प्रसन्नता प्राप्त हुई थी।

इस सन्दर्भ में एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य का उल्लेख करना चाहता हूं जिसका सम्पूर्ण श्रेय पूज्य पिताजी को है। उनके द्वारा स्थापित एवं संचालित विद्यालयों के कार्यकलापों से उनके सानिध्य में रहकर जो अनुभव मैंने प्राप्त किया था उसके आधार पर मुझमें कलकत्ता में एक उच्चस्तरीय शिक्षा संस्था के प्रारम्भ करने की प्रबल इच्छा बलवती होती जा रही थी, और वह अवसर, आर्यसमाज भवानीपुर की ६१ नं. डायमंड हार्वर रोड, कलकत्ता स्थित विशाल भूमि में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल की स्थापना करने का सन् १६८३ में, ईश्वर ने प्रदान किया। मुझे उस स्कूल का प्रबन्धक बनाया गया। मेरे अथक परिश्रम से अल्पसमय में ही विद्यालय अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया। कलकत्ता आगमन पर मैंने पिताजी को, स्कूल दिखलाया, सब कुछ देखकर वे बहुत प्रसन्न हुये और अपने उद्गार को रोक नहीं सके जिसके अन्दर आत्मीयता भरी थी, सन्तोष की सुखद शांति परिलक्षित थी, उसके द्वारा अपने जीवन को सफल समझ रहे थे कि उनके परिवार में उनके अनुरूप सेवा और श्रद्धा की भावना आर्यसमाज के प्रति निहित है। समाज के प्रति इस तरह की परमभक्ति का उदाहरण यदा कदा ही देखने को मिलता है।

अब मैं पिताजी के जीवन के अंतिम दिनों के मुख्य अंश का वर्णन करना चाहता हूं जिसका प्रारम्भ जून १६६० से होता है। पिताजी टाण्डा में भयंकर रूप से पीड़ित हो गये थे किन्तु उनके आत्मबल की बलिहारी थी कि उन्होंने अपनी रुग्णावस्था का संकेत तक नहीं दिया था, और टाण्डा जैसी छोटी जगह में उपचार का उचित साधन नहीं होते हुए भी वहीं के इलाज पर निर्भर कर रहे थे। स्वास्थ्य में निरन्तर ह्रास के लक्षण परिलक्षित होते देख माताजी ने उनकी अवस्था का चित्रण अपने पत्र में किया। समाचार मिलते ही मैं टाण्डा के लिए प्रस्थान कर गया और वहां पहुंचकर पिताजी के स्वास्थ्य पर दृष्टिपात करते ही किंकर्तव्यविमूढ़ सा हो गया, किन्तु उसी क्षण अपने को संभाला और शीघ्र से शीघ्र पिताजी को कलकत्ता ले जाने का निर्णय कर डाला। कलकत्ता पहुंचते ही विशेषज्ञों से जांच कराके उपचार प्रारम्भ कर दिया गया। ईश्वर ने हम सभी की प्रार्थना को स्वीकार किया और पिताजी को स्वास्थ्य लाभ होना प्रारम्भ हो गया। हम सभी तथा चिकित्सक भरसक

प्रयत्नशील थे कि पिताजी की अन्तिम इच्छा आर्य समाज टाण्डा की शताब्दी देखने एवं करने की अवश्य पूर्ण हो और लगातार नियमपूर्वक उपचार से हम लोग पूर्ण आश्वस्त थे कि उनकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। उनमें कितना आत्मबल तथा अपनी मातृभूमि टाण्डा से कितना प्रेम था कि थोड़ा भी स्वास्थ्य में सुधार होने से वे एक दिन के लिये भी कलकत्ता रुकना नहीं चाहते थे और किसी भी तरह टाण्डा पहुंचकर ही उन्हें शान्ति मिलती थी। अयोध्या में जन्मभूमि राममन्दिर निर्माण प्रकरण को लेकर आर्य समाज टाण्डा के ९९वें वार्षिकोत्सव को स्थगित करना पड़ा था, उस स्थगन से पिताजी इतने बेचैन रहते थे कि उनकी निद्रा भी साथ नहीं देती थी आखिरकार उस स्थगित उत्सव के एक मास पश्चात् ही १ से ५ दिसम्बर तक कर ही डाला और सर्वदा की भांति सक्रिय रहे किन्तु उनकी आवाज में निराशा के लक्षण थे, थकान थी, और जनता को सम्बोधित करते हुये कह ही डाला कि मैं रहूं अथवा न रहूं किन्तु शताब्दी-समारोह पूर्ण उत्साह के साथ होना चाहिए तथा विश्वास एवं सन्तोष प्रकट किया कि ऐसा ही होगा। (मैं सभी आर्य बन्धुओं से पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट हूं। वह शताब्दी उनकी भावना के अनुरूप मनायी गई, यद्यपि वह नहीं थे।)

पिताजी के जीवन के अंतिम ६ महीनों में मैं उनके सानिध्य में अधिक रहा और उनकी सेवा करने का अधिक सौभाग्य प्राप्त करता रहा। मेरे जीवन के ५४ वर्ष में मेरी स्मृति में एक क्षण भी ऐसा नहीं है कि उन्होंने मुझे कभी डांटा हो अथवा किसी विषय पर उनसे मेरा विवाद हुआ हो। ऐसा पिता पाकर कौन पुत्र धन्य न होगा। उनकी धीरता, समाज के प्रति कर्तव्य परायणता का वर्णन कहां तक करूं किन्तु एक घटना को उद्धृत करने से अपने को नहीं रोक पा रहा हूं जिसका सम्बंध मेरे और समाज के प्रति पिताजी के कर्तव्य पालन से है। सन् १९८७ में मैं भयंकर रूप से पीड़ित था, कलकत्ता के बड़े से बड़े डाक्टरों ने रोग को कैंसर की संज्ञा दे डाली और मैं यहां से पटना तथा वहां से ससुरजी और पत्नी के द्वारा बम्बई ले जाया गया। वहां बाम्बे हास्पिटल में भर्ती हो गया। ११ नवम्बर को आपरेशन का समय निश्चित हुआ। उन्हीं दिनों आर्य समाज टाण्डा का वार्षिकोत्सव आयोजित था। भयंकर रूप से रूग्ण पुत्र की ऐसी अवस्था में कौन पिता होगा जो विचलित नहीं होगा किन्तु मेरे पूज्य पिताजी को ईश्वर पर भरोसा था कि ईश्वर सब कुछ ठीक करेगा, इस निश्चय व विश्वास के साथ उन्होंने

उत्सव समाप्त कराया। मेरे दोनों छोटे भाई प्रिय राजेन्द्र कुमार सालेम (दक्षिण भारत) से तथा प्रिय डा. नरेन्द्र कुमार विलायत से बम्बई पहुंच गये थे। प्रभु की लीला अपरम्पार है, आपरेशन पूर्णतया सफल रहा, पूर्व निदान गलत निकला, कैंसर था ही नहीं।

मेरे पिता जी कर्तव्य के प्रति कितने जागरूक, दृढ़ व्रती, सत्यमार्ग पर अडिग होकर चलने वाले, विपत्ति में भी धैर्य एवं साहस की प्रतिमूर्ति थे। मैंने उनके उन्हीं गुणों का वर्णन किया है जिससे मेरा व्यक्तिगत सीधा सम्बन्ध है और जिसका उदाहरण मिलना अन्यत्र दुर्लभ है। उनके ये सारे गुण मुझमें आ सकेंगे ऐसा तो मैं नहीं कह सकता किन्तु मैं उस मार्ग पर चलते रहने का प्रयास करूंगा और उनके वे सारे गुण भविष्य में मेरी धरोहर रहेंगे और उसी से प्रेरणा प्राप्त कर मैं अपने कर्तव्यपालन का निश्चय करता रहूंगा। मेरा वर्तमान सामाजिक जीवन पिताजी की ही देन है और आज मैं जो कुछ हूं वह उन्हीं की सत्प्रेरणा का फल है और यह सब कुछ उन्हीं को समर्पित है।

मैं अपने जीवन के प्रत्येक पल को उनसे जुड़ा हुआ समझता हूं इससे मैं कभी उनको अपने पास न होना मान न पाऊंगा। उनके आदर्श हमारे परिवार के अजस्र प्रेरणास्रोत रहेंगे और प्रतिदिन हमारे व्यवहार और जीवन में प्रतिफलित होते रहेंगे।

महर्षि ने अपने अमरग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में कितना सत्य कहा है कि 'वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ी भाग्यवान जिसके माता पिता धार्मिक व विद्वान हों।'

ऐसे पूज्यवर पिता के श्री चरणों में कोटिशः नमन !

निर्भीक व्यक्तित्व

❑स्वामी आत्मबोध सरस्वती

आर्य जगत के कर्मठ कार्यकर्ताओं की सूची में श्री मिश्रीलाल जी आर्य का नाम सदा अमर रहेगा। उनका व्यक्तित्व अनूठा था। आर्यसमाज टाण्डा (उ.प्र.) के वह पर्याय थे। उनके द्वारा संचालित आर्य कन्या महाविद्यालय, टाण्डा देश के गिने चुने विद्यालयों में से एक है। यहां की छात्राओं को प्रतिदिन नियमितरूप से संध्योपासन तथा साप्ताहिक यज्ञ में सम्मिलित होना अनिवार्य है। यह स्थिति यहां के विद्यालय की तब की है जबकि इसमें शिक्षा प्राप्त करने वाली अधिकांश छात्राएं मुसलिम परिवारों की हैं। वहां के मुसलिम भाइयों का यह दृढ़ विश्वास है कि वहां उनके पुत्रियों की असमत (पवित्रता) सुरक्षित है। यह आर्यसमाज के क्रियाकलाप की दिग्विजय है, जिस पर प्रत्येक आर्य को गर्व है। यह सब जिस व्यक्ति की तपस्या का फल है उनके जन्मशती समारोह पर हम अपनी पुष्पांजलि अर्पित करते हैं और उनके परिवार के प्रति श्रद्धा की भावना व्यक्त करते हैं। पूज्य माताजी (महाशय मिश्रीलाल जी की धर्मपत्नी) को नमन करते हैं और उनके दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की प्रभु से याचना करते हैं। यह हर्ष और सन्तोष का विषय है कि उनके सुपुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य अपने पूज्य पिता के चरण चिन्हों पर चल रहे हैं और आर्यसमाज तथा विद्यालय के प्रति समर्पित हैं। हमारा आशीर्वाद सदा उनके साथ है। प्रभु उन्हें सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द रखें।

एक गौरवमय संस्मरण

–आचार्यश्री डा.विशुद्धानन्द शास्त्री
आर्यरत्न, विद्यामार्तण्ड

धन्य कुलं केन? सदात्मजेन, पित्राज्ञया जीवनयापकेन।
रसातलं केन कुलं प्रयाति? राष्ट्रेश–भक्तावऽरतात्मजेन।।

प्रश्न – इस पृथ्वी तल पर किसका कुल धन्य होता है?

उत्तर – जिस कुल में गुण-विभूषित पुत्ररत्न उत्पन्न होता है, वह धन्य है।

प्रश्न – उत्तम गुण विभूषित पुत्र कौन होता है?

उत्तर – जो माता–पिता और महापुरुषों के आदेशों का पालन करते हुए जीवन यापन करता है।

प्रश्न – और कुल रसातल को किसके द्वारा चला जाता है?

उत्तर – जो पुत्र ईश्वर और राष्ट्र का भक्त नहीं होता, उसके द्वारा रसातल को चला जाता है।

आगे भी कवि कहता है:-

कुसुमस्तवकस्येव, द्वे वृत्ती स्तो मनस्विनः।
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य, विशीर्येत वनेऽथवा।।

(फूलों के गुच्छों के समान मनस्वी पुरुष की दो प्रकार की मनोवृत्तियां होती हैं। एक तो अपने उत्तम आकर्षक गुणों की सुगन्ध से सबके मनों को मोहता हुआ सब लोगों के शिरों का भूषण बने। दूसरे, निर्जन वन प्रान्त के विशाल वातावरण में सुगन्ध बिखेरता हुआ अपना बलिदानी समर्पण कर जीवन की डाली से झड़कर मातृभूमि को उर्वरा बनाने के लिए खाद बनकर धूलि में विलीन हो जावे।)

इस सन्दर्भ में हमारे इस अनूठे संस्मरण के चरित्र–नायक उत्तम स्पर्धनीय गुणों से अलङ्कृत थे। जिनके आस्तिक बलिदानी जीवन से यह कुल धन्य हो गया। पूर्वजों की कामना इस कुल–दीपक के प्रकाश को पाकर सुफलीभूत हो गई। जिन्होंने अपने पूर्वजन्मार्जित पुण्यों के फलस्वरूप वेदों के परमोद्धारक–महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थ

प्रकाशक ज़ीवन-चरित्र और वैदिक-सत्यसिद्धान्तों से जो जाज्वल्यमान ज्योति पाई थी, उससे न केवल अपने ही जीवन को आदर्श चरित्रों में ढाला था, अपितु उस आदर्श व्यक्ति ने अपनी निष्ठामयी उत्कण्ठा और वैदिक-धर्म-प्रसारण की दीवानगी से सहस्रों लोगों को सत्यपथ का दर्शन कराया। कवि ने ठीक ही कहा है:-

पिवन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः, स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः, परोपकाराय सतां विभूतिः।।

अर्थात् नदियां अपना पानी स्वयं नहीं पीतीं, वृक्ष भी फलों को स्वयं नहीं खाते, कृषि की उपज को बादल भी स्वयं नहीं खाते, सच है, सत्-पुरुषों की विभूतियां पर-उपकार के लिए ही होती हैं। हमारे चरित नायक ने आर्यसमाज के सुतर्कपूर्ण प्रामाणिक-सिद्धान्तों की गम्भीरता को नैष्ठिक-लगन से स्वाध्याय द्वारा सम्पन्न और सुसमृद्ध बनाया। यह सर्वस्वीकृत तथ्य है कि परतन्त्रता की जटिल शृंङ्खलाओं से शताब्दियों से निगडित भारत मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने के लिए आह्वान का उद्घोष सर्व प्रथम महर्षि दयानन्द ने ही किया था। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा है- 'अब आर्यों के अभाग्योदय से आलस्य, प्रमाद, परस्पर-विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की कथा क्या कहना, किन्तु आर्यावर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नहीं है, जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं।'

"दुर्दिन जब आता है, तब देशवासियों को अनेक प्रकार के दुःख भोगना पड़ता है, कोई कितना ही करे; परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।" (अष्टम समुल्लास) ऋषि दयानन्द के इन निर्भीक उद्बोधक शब्दों ने इस महान् आत्मा वाले पुरुष में देश-प्रेम और मातृभूमि के पाशच्छेदन की कभी न बुझने वाली उद्दाम क्रान्तिकारी भावना भर दी कि जिन अगरों से इन्होंने आर्यसमाज के सम्पर्क में आने वाले पुरुषों में राष्ट्र-जागरण की उद्दीपत ऊष्मा उत्पन्न करते हुए देश को स्वतन्त्र कराने में और यातना व उत्पीड़न सहने में परमानन्द की अनुभूति की, वे हैं हमारे संस्मरण के केन्द्र बिन्दु आर्यपुरुष, स्वतन्त्रता-संग्राम सेनानी, पुण्यात्मा बाबू श्री मिश्रीलाल 'प्रधान जी', जिन्होंने अपनी वैचारिक जन्मदात्री, आर्यसमाज टाण्डा की पुण्यस्थली को विशेष रूप में अपने क्रान्तिकारी देशभक्ति और धर्म के उन्नयन का कर्मठ कर्मक्षेत्र बनाया।

उनके व्यक्तित्व से मेरी व्यक्तिगत अनुभूति :

'प्रधान जी' के द्वारा आर्यसमाज टाण्डा के महोत्सव में मुझे आने के लिए सानुरोध आमन्त्रित किया गया। आमन्त्रण की शव्दावली में मानो, चिर परिचित आत्मीयता थी, फिर भी मैंने कहीं न जाने वाले स्वभाव की आवृत्ति करते हुए अस्वस्थतावश न आ सकने की विवशता प्रकट कर दी। द्वितीय बुलावे के पत्र में श्री बाबू जी ने लिखा कि इस स्थान पर हिन्दू और मुसलमान दोनों में सत्संग व प्रचार में आकर प्रश्न व शास्त्रार्थ की खुजली पैदा हो जाती है। अधिक सम्भावना है कि कोई पौराणिक विद्वान् शास्त्रार्थ की चुनौती दे बैठे। श्री करपात्री जी के नेतृत्व में भारत के प्रसिद्ध पौराणिक १४ पण्डितों से 'वेदार्थ-पारिजात' नामक महाग्रन्थ आर्यसमाज के विद्वानों को चुनौती रूप बहुत समय पूर्व लिखा जा चुका है। आर्यजगत् के किसी विद्वान् ने उसका उत्तर अवतक नहीं लिखा, 'पारिजात' ग्रन्थ से यह ध्वनि स्पष्ट होती है कि अब आर्य समाज सदा सदा के लिए मर जायेगा।

इस पत्र को पढ़कर मेरी विदुषी पत्नी ने कहा कि अवश्य जाओ, मैंने कहा कि तुमको मेरी अस्वस्थता का कोई ध्यान नहीं, तब उन्होंने कहा कि अव मैं जाती हूं और उनके पण्डितों से संस्कृत में शास्त्रार्थ करूंगी, बाबूजी ने लिखा है, आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का प्रश्न है।''

अन्ततः मैं टाण्डा पहुंच गया, यज्ञ का ब्रह्मा भी मैं था, पार्श्व ग्रामवर्त्ती एक आर्य विद्वान् आचार्य सौम्यमूर्ति यज्ञ में मेरे सहयोगी रहे। सम्मान्य श्री पं. शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी 'कुरआन' के आलोचक सिद्ध और प्रसिद्ध विद्वान् का साथ मिलना अत्यन्त सुखद रहा।

मेरे पहुंचने पर श्रद्धेय देशभक्त बाबूजी की मानस कलिका खिल गई, वे भावविभोर हो गये, मुझे प्यार करते हुए छाती से लिपटा लिया, मैंने देखा, कोई मेरा बड़ा मिला हो, उस समय उनकी आंखों में नमी छलक रही थी। वे कहने लगे आचार्य जी! तुम दम्पती ने बड़ी भारी चिन्ताजनक-चुनौती का उत्तर देकर आर्य समाज की लाज रख ली। जी चाहता है तुम दम्पती का बहुत बड़ा अभिनन्दन हो। अस्तु

स्मरण रहे कि टाण्डा मुस्लिम प्रभाव-प्रधान क्षेत्र है, वहां का नगर कीर्तन-उत्सव यात्रा का दृश्य आर्यजनों के उत्साह समुद्र का ठाठें मारता हुआ, अनुतरंगों में उमड़ता हुआ अबाध जोश का ज्वार था।

प्रधान जी की आत्मीयता आज मेरे नेत्रों के समक्ष मूर्तिमत्ती

सजीव खड़ी है। उन्होंने अपना संस्थापित इण्टर कालिज दिखलाया, प्राचार्या जी से मिलाया। बाबू जी की अदम्य आकांक्षा रहती थी कि उनकी अध्यापिकायें और कन्यायें पूर्णतया आर्यसमाज की सन्देश-वाहिनी बनें।

माननीय प्रधान जी का स्वभाव मुझे ऐसा लगा कि वे अपने स्वयं के प्रति बड़े नियमित और कठोर थे, परन्तु अन्य जन-साधारण के लिए उनके हृदय की स्नेहिल आत्मीयता की धारा पदे पदे अखण्ड रूप से प्रवाहित रहती थी। उन्होंने मेरे प्रवचन में उद्धृत निम्न श्लोक के भावों को सराहते हुए कहा था कि आपमें ओज से भरी जीवन्त शक्ति है, ऐसा जीवन मुझे पसन्द है। वह श्लोक था :

उदये सविता ताम्रस्ताम्रश्चास्तसमयेऽपि वा।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च, महतामेकरूपता।।

अर्थ-देखो, जब सूर्य उदय होता है तब ताम्र (ताँबा) वर्ण का लाल लाल होता है और जब अस्त होता है तब भी लाल ही होता है। इसी प्रकार महान् वही होता है जो सम्पत्ति और विपत्ति दोनों में ही एक रूप होता है।

आर्यजगत् में मेरा सर्वप्रथम अभिनन्दन :

आर्य जगत् कि विद्वानों ने हमारे 'वेदार्थ कल्पद्रुम' (तीनों खण्डों) के लिखे जाने पर जो प्यार भरा सम्मान मुझे दिया, उससे मैं सन्तुष्ट हूं; परन्तु साथ में कष्ट भी यह है कि आर्यसमाजों ने अपने पुस्तकालयों में भी सार्वदेशिक सभा तथा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, खारी बावली दिल्ली से केवल पांच/सात प्रतिशत ही ये ग्रन्थ खरीदे हैं। चाहिए तो यह कि विद्वानों को दक्षिणा के साथ समाज की ओर से उक्त ग्रन्थ भी भेंट किए जाते। ऊपर सन्दर्भित विद्वानों में कुछ नाम निम्नांकित हैं-

श्री पूज्य पं.बिहारीलाल जी शास्त्री, आचार्य पं.उदयवीर जी शास्त्री, पं.शिवकुमार जी शास्त्री, महामहोपाध्याय श्री पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक, आचार्य श्री रमाकान्त जी उपाध्याय, मेरे योग्यतम शिष्य आचार्य विद्वान् श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय, वैदिक विद्वान् श्री ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री, डा. प्रशस्य मित्र जी, डा. सच्चिदानन्द जी शास्त्री, आचार्य श्री सत्यानन्द जी वेद वागीश, प्रो. वेद प्रकाश जी शास्त्री उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आदि।

सर्वप्रथम 'वेदार्थ कल्पद्रुम' ग्रन्थ का अभिनन्दन आर्यसमाज १६ विधान सरणी, कलकत्ता के विराट् आयोजित समारोह में हुआ जिसमें प्रथम प्रेरणा श्री बाबू मिश्रीलाल जी आर्य की थी, दूसरी प्रेरणा आचार्य प्रवर श्री उमाकान्त जी उपाध्याय की थी, जिसमें एक कौतूहल और उल्लासपूर्ण अन्तर्निहित कथानक यह है कि एक दिन प्रातः आचार्य श्री उपाध्याय जी, आर्यसमाज में सन्ध्या के उपर्यन्त भाव-विभोर होकर कुछ श्लोकों को मस्त होकर सस्वर गा रहे थे और अतिभावुकता की स्थिति में आंसुओं में लिपटा हुआ लड़खड़ाता सा स्वर आर्यसमाज के प्रधान श्री सीताराम जी के कानों में पड़ा, कुछ देर तो ये सुनते रहे। पुनः प्रधान जी श्री उपाध्याय जी के पास जाकर कहने लगे कि आचार्य जी आज क्या वात है? कौन सी प्रसन्नता वा पीड़ा है जो आप श्लोक गा भी रहे हैं और रो भी रहे हैं। आचार्य जी बोले ये आंसू व्यथा और पीड़ा के नहीं हैं, हर्षातिरेक और आनन्द के प्रवाहित हो रहे हैं। अब चिरकाल से चिन्तित आर्यजगत् गर्व और गौरव से अपने मस्तक को ऊंचा कर सकेगा। ऋषिवर के स्थापित आर्यसमाज के मंच पर पाण्डित्य-प्रतिभा का अभूतपूर्व सूर्य उदित हो गया है। जो महाग्रन्थ 'वेदार्थ पारिजात' श्री करपात्री जी और उनके शिष्यों द्वारा कलकत्ता के ही भानुकात्री की अर्थ सहायता से लिखा गया, उसका उत्तर छपकर आ गया, वह यह है मेरे हाथों में 'वेदार्थ कल्पद्रुम'। जिसको इस आचार्य दम्पती श्रीमती निर्मला मिश्रा और आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र ने लिखा है। प्रधान जी ने तत्काल प्रस्ताव किया कि आप इन दम्पती को अभिनन्दनार्थ आमंत्रित कीजिये, आमन्त्रण मिलने पर मैंने दिसम्बर के शीतकाल में आ सकने को मना कर दिया तब तात्कालिक सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले जी का पत्र और उसी अन्तराल में आदरणीय बाबू श्री मिश्रीलाल आर्य जी का सन्देश पत्र लेकर मथुरा के श्री प्रोफेसर जय कुमार जी मुद्गल बदायूँ पहुंचे। फलतः हम दम्पती को कलकत्ता पहुंचना पड़ा। उस महान् समारोह में आर्य समाज के सभी नेता और प्रसिद्ध विद्वान-उपदेशक भी पधारे थे तथा श्री बाबूजी अपने वचनानुसार अभिनन्दन समारोह में पहुंचे, प्रथम दिन सायं हम दम्पती का और दूसरे दिन आदरणीय बाबू जी का भावभीना स्वागत व अभिनन्दन किया गया। कलकत्ता वाले आर्यों और बाबूजी के स्नेह की स्मृति हृदय पटल पर आजीवन अंकित रहेगी और कदाचित् मेरी धारणा पूर्णतया सत्य है कि आज आर्यसमाज टांडा के विराट् महोत्सव के अवसर पर बाबूजी के सुपुत्र प्रिय श्री आनन्द कुमार आर्य के हृदय

में मेरा अभिनन्दन करने की प्रेरणा भी बाबूजी के मेरे प्रति अपार लगाव का ही श्रेय है।

अब श्री बाबू मिश्रीलाल जी जैसे निष्ठावान दृढ़संकल्पी धर्म और देशप्रेम के दीपक पर मर मिटने वाला शलभ (परवाने) कहां उपलभ्य हैं। तथापि इस पर सन्तोष है कि वही लगन की आग उनकी धर्मशील सन्तति श्री आनन्द कुमार आर्य में अदमनीय रूप से जाज्वल्यमान है। महाकवि कालिदास की यह सूक्ति यहां सुघटित हो रही है कि 'प्रवर्त्ततो दीप इव प्रदीपात्' अर्थात् जलते हुए दीपक से जलाये हुए दूसरे दीपक की प्रकाश शिखा वैसी ही होती है। कर्मठ धर्मशील पिता के सुपुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य पूज्य पिता से प्राप्त ज्योति को मन्द न होने देंगे, अपितु उत्तराधिकार में भी वही निष्ठा और लगन प्रदान करेंगे-ऐसा आशापूर्ण विश्वास है।

श्रील आर्य मिश्रीलालः, देशभक्तश्च धार्मिकः।
दिवङ्गतोऽप्यनाश्येन, यशः कायेन जीवति।।

अर्थात् बाबू श्री मिश्रीलाल जी आर्य जीवन भर देशभक्त और धर्मशील रहे, वे नश्वर शरीर को त्याग देने के बाद भी सदा ही अविनश्वर यशः शरीर से जीवित रहेंगे।

इति शम्
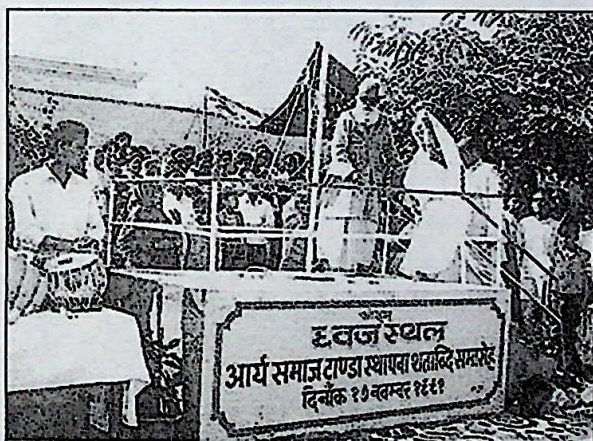
महात्मा आर्यभिक्षु द्वारा आर्यसमाज टाण्डा स्थापना शताब्दी समारोह १९९१ में ध्वजारोहण

आर्य प्रतिनिधि सभा प.बंगाल कलकत्ता के भवन में निर्मित मिश्रीलाल आर्य अतिथि-कक्ष के उद्घाटन के अवसर पर

महान् ऋषिभक्त

–कैप्टेन देवरत्न आर्य

३ नवम्बर, २००२ को सार्वदेशिक सभा के त्रिवार्षिक चुनाव दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा मनोनीत वरिष्ठ अधिवक्ता माननीय श्री रामफल बंसल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। मुझे सर्व सम्मति से प्रधान पद पर चुना गया और शेष पदों के मनोनयन के लिए मुझे अधिकार दे दिए गये। मैंने उस समय तक श्री आनन्द कुमार आर्य कलकत्ता के बारे में एवं उनके आर्यसमाज के प्रति सक्रिय योगदान के बारे में काफी सुन रखा था। मैं भारत के पूर्वी भाग से एक उपप्रधान मनोनीत करना चाहता था और मेरे मस्तिष्क में एक ही नाम उभरा श्री आनन्द कुमार आर्य। मैंने उनके नाम का प्रस्ताव कर दिया। इससे पूर्व मेरा व्यक्तिगत परिचय श्री आनन्द कुमार जी से नहीं था। इस समय जिस प्रकार वे कार्य कर रहे हैं कभी-कभी यह सोचने को विवश होना पड़ता है कि श्री आनन्द जी की आर्यसमाजिक पृष्ठभूमि क्या है?

इस बीच मुझे आर्यसमाज के कार्य हेतु अमेरिका, कनाडा और इंग्लैड से निमंत्रण आया। मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या के साथ १५ अगस्त, २००२ को लन्दन और १६ अगस्त को आचार्य सोनेराव जी के साथ कार द्वारा बरमिंघम पहुंचा। १७ अगस्त की रात्रि भोजन के लिए डॉ. नरेन्द्र कुमार आर्य (जो आर्यसमाज बरमिंघम के प्रधान हैं) हमें लेने के लिए आये। परिवार में जब हमारी घनिष्ठता के साथ परिचय हुआ तो ज्ञात हुआ कि डॉ. नरेन्द्र कुमार आर्य, सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य के छोटे भाई हैं। मैं सोचता रहा, अवश्य ही इस परिवार की सुदृढ़ पृष्ठभूमि होगी जो देश और विदेश में भी आर्यसमाज का कार्य बड़ी सक्रियता से कर रहे हैं जबकि प्रायः पुराने आर्यसमाजियों की सन्तानें आर्यसमाज के समीप नहीं आती हैं।

मैंने जब अपनी जिज्ञासा को शान्त करना चाहा तो ज्ञात हुआ कि स्व. मिश्रीलाल जी आर्य जिन्हें पारिवारिक विरासत में आर्यसमाज मिली

थी, दोनों कुमार उनके सुपुत्र हैं और इस वर्ष उनकी जन्मशताव्दी टाण्डा (फैजाबाद) में मनाई जाएगी। तब मुझे स्वर्गीय श्री मिश्रीलाल जी जीवन-ज्योति को जानने की तीव्र अभिलाषा हुई।

स्वर्गीय श्री मिश्रीलाल आर्य स्वर्गीय श्री गंगाप्रसाद जी के पुत्र थे और उनका जन्म टाण्डा (फैजाबाद) में हुआ था। उनके पितामह पर महर्षि दयानन्द और उनके कार्यों का गहरा प्रभाव पड़ा था। उस समय जब आम हिन्दू महर्षि के बताए सुपथ पर चलने का दृढ़ निश्चय कर लेते थे तो उन्हें अनेक सामाजिक और जातीय व्यवस्था का सामना करना पड़ता था। परन्तु स्व. श्री मिश्रीलाल जी अपने पिता श्री रग्घूराम जी के बताए मार्ग पर दृढ़ता के साथ आगे बढ़ते रहे और उनका सम्पूर्ण परिवार महर्षि दयानन्द के बताए वैदिक संस्कारों और वैदिक मान्यताओं की छाया में उभरता चला गया। वे मानते थे कि आर्यसमाज पाखण्डों के विनाश और वेदों में बताए मानव धर्म के मूल एवं सार्वभौम सिद्धान्तों का प्रचार करने वाली एक क्रान्तिकारी संस्था है।

महर्षि दयानन्द जी की परिकल्पना थी 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' सारे संसार के मानवों को श्रेष्ठ बनाओ "Make the whole World Noble" इसी उद्देश्य को लेकर आर्यसमाज में अनेक शिक्षण संस्थाओं का प्रादुर्भाव हुआ। उनकी मान्यता थी कि यदि हमारे बच्चों को प्रारम्भ से ही नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा दी जाए तो उनमें श्रेष्ठता के गुण बचपन से ही आने लगेंगे। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने जन्म स्थान पर अनेक शिक्षण संस्थाओं का प्रारम्भ किया। आर्यसमाज एवं शिक्षण संस्थाओं में प्रत्येक त्यौहार और समारोह जो भारतीय संस्कृति के परिचायक माने जाते थे, मनाए जाने लगे, जिसका जनमानस पर व्यापक प्रभाव पड़ने लगा।

उस समय जब पाखण्डियों ने नारी जाति को शिक्षित करने के विरोध में व्यापक अभियान छेड़ा हुआ था, इस महापुरुष ने टाण्डा में कन्याओं के लिए पाठशाला की स्थापना की, जो आज इण्टरमीडिएट कालेज के रूप में हमारे सामने है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जो हरिद्वार में अप्रैल २००२ में आयोजित किया गया था, इनमें इस विद्यालय की छात्राओं ने बड़े मनोयोग से भाग लिया और अपने कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए।

महर्षि के भक्त होने के नाते स्व. श्री मिश्रीलाल जी ने सत्यार्थ

प्रकाश का गहन अध्ययन किया। उसमें दिए गये निर्देशों का अक्षरशः पालन करने के लिए; जब भारत अंग्रेजों की पराधीनता में जकड़ा हुआ था, तब उन्होंने राजनीति में भी सक्रिय भाग लिया। महर्षि मानते थे कि पराधीनता हमारे लिए सबसे बड़ा अभिशाप है और स्वाधीनता व स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार। जलियांवाले बाग की घटना ने उन्हें सिर से पैर तक हिलाकर रख दिया। फिर क्या था वे कांग्रेस के स्वाधीनता आन्दोलन एवं सम्मेलनों में स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में कार्य करने लगे। परन्तु देश की आजादी के नाम पर जब भारत के दो टुकड़े हुए तो श्री मिश्रीलाल जी का दिल भी टूट गया और उन्होंने स्वयं को देश की इस गन्दी राजनीति से जहां जाति व भाषा के आधार पर राज्य बनने लगे, गौहत्या किसी विशेष वर्ग के कारण बन्द नहीं हो सकी, स्वयं को मुक्त कर लिया और अपनी समस्त शक्ति आर्यसमाज, शिक्षा प्रणाली, भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विकास पर लगा दी। वे टाण्डा की अनेक शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धक एवं संस्थापक के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

उनका जीवन एक आदर्श जीवन था। आज सम्पूर्ण परिवार अनके आदर्शों पर चलकर अहर्निश आर्यसमाज और दयानन्द के मिशन की सेवा में लगा हुआ है। ऐसे आर्य महापुरुष को हमारा शत् शत् प्रणाम।

•••

आर्य श्रेष्ठ

❑पं. शान्ति प्रकाश
शास्त्रार्थ महारथी

वाबू मिश्रीलाल जी परमेश्वर को प्यारे होकर उनके सान्निध्य में चले गये। मुझे आन्तरिक दुःख है कि अब उन महापुरुष के दर्शन न होंगे। मैं एक प्रकार से इस दुःखद समाचार को सुनते ही होश खो बैठा। क्या था और क्या हो गया। वह मेरे सर्वस्व थे आयु समान होते हुए भी उनको मैं उनके प्यार भरे व्यवहार के कारण पिता समान मानता था। मेरे साथ वह पितृ समान ही स्नेह करते आये थे और अन्तिम दो बार तो उन्होंने मुझे अपने पास ही ठहराया। वह मेरे सम्बल आश्रयदाता एवं शुभ परामर्श प्रदाता थे। मैं उनके प्यार भरे स्नेहमय व्यवहार को कदापि जीवन पर्यन्त नहीं भुला सकता। वह महापुरुष थे, उनकी आयु अधिक थी किन्तु वह पूर्ण युवा के समान पाठशाला व आर्यसमाज का कार्य भार और नगर भर की हिन्दू मुसलिम जनता की सेवा में प्रतिपल संलग्न थे। मैं उनके अपार शुभ गुणों को गिनाने में भी असमर्थ हूं। मैं जब भी टाण्डा जाता गोघृत से भरा डब्बा मुझे देते और मेरे सर्वथा इन्कार करने पर बोलते कि शास्त्रार्थ करते व रात-दिन पढ़ने और नई खोज करने में लगे रहते हो, दूध-घी के विना तुम्हें हानि होगी। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को ताकीद करते कि पण्डित जी अपने आप कुछ नहीं मांगते, इनका पूरा ध्यान रखा जाय।

मैं टाण्डा उत्सव पर प्रतिवर्ष बुलाया जाता और मैं वहां सहर्ष जाता भी था। एक बार मुझे कन्या विद्यालय ले गये और एक कमरे की आधारशिला मुझसे रखवाई कि इस पर तुम्हारे नाम का पत्थर लगेगा। एक और घटना स्मृति में है जबकि मैं उत्सव पर कलकत्ता गया था, एक दिन सायंकाल प्रधानजी तथा उनके पुत्र मुझे कलकत्ता मध्य से १२ मील की दूरी पर अपनी नई कोठी में ले गये, रात्रि में मैं वहीं पर रहा। प्रातःकाल मेरे द्वारा यज्ञ करवाया और अपने पौत्र का नामकरण संस्कार करवाया। इस तरह वह मुझे बेहद प्यार करते थे।

टाण्डा में शास्त्रार्थ प्रतिवर्ष होता था। वहीं के विद्वान् मौलवी

मौलाना नूरमुहम्मद बड़े बड़ों के छक्के छुड़ा देता था। उनका प्रश्न शंका समाधान में 'सत्यार्थ प्रकाश' पर होता था कि स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि जिस मत के मानने वाले करोड़ों हों उसको जो झूठा कहता है वह स्वयं झूठा है। इस्लाम में करोड़ों लोग हैं, स्वामी दयानन्द ने इस्लाम को झूठा कहा अतः वह अपने लेख के अनुसार करोड़ों लोगों के मत को झूठा कहने के कारण स्वयं झूठे ठहरे। मैंने इसका उत्तर दिया कि महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश के १४वें समुल्लास में ही लिखा है कि 'इय्या का न अकवुदो व इय्या का नस्त ईन' इन शब्दों में स्पष्ट लिखा है कि ईश्वर की भक्ति व उससे सहाय चाहना ही चाहिए। अतः ऋषि दयानन्द ठीक को ठीक लिखते हैं उनपर पक्षपात का दोष नहीं आ सकता। इस्लाम में बहुत सारी बातें झूठी लिखी हैं अतः इस्लाम सच्चा नहीं हो सकता इस तरह स्वामी जी ने सच को सच और झूठ को झूठ कहा। इस पर मौलवी साहब मौन हो गये और प्रतिवर्ष आराम से शंका समाधान में भाग लेते। वेदी पर प्रधान जी सदैव मेरे साथ बैठते थे। टाण्डा में शंका समाधा। से जनता को बहुत लाभ होता है और शंका समाधान के समय प्रतिवर्ष उत्सव का मैदान खचाखच भर जाता है। परमात्मा करे आगे भी टाण्डा में उत्सवों की यही शान बनी रहे। माननीय मंत्री जी व अधिकारी वर्ग पूज्य स्वर्गीय प्रधान जी की शान के अनुसार वैसे ही उत्सवों में शंका समाधान का कार्यक्रम चलाते रहेंगे।

मैं इस प्रसंग के साथ पूर्ण विश्वास से घोषणा करता हूं कि पूज्य बाबू मिश्रीलाल जी आर्य जाति के महतो महान महापुरुष थे। उनका जीवन पवित्र था और यह पवित्र जीवन आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के लिए समर्पित था। नियमपूर्वक सन्ध्योपासन व अतिथिपूजन तथा आर्यसमाज के लिए सब समय सर्वस्व समर्पण यह उनके जीवन का बहुमूल्य ध्येय था जिस पर आजीवन अडिग होकर वे समर्पित रहे। मुझ पर उनकी विशेष कृपा थी इसका मुझे गर्व है। अब वह भगवान की अमृतमयी गोद के प्यारे हैं। भगवान उनकी विशुद्ध, पवित्र, परोपकार-प्रिय आत्मा का भला करे। इन्हीं शब्दों के साथ उनकी पावन स्मृति में मेरी श्रद्धांजलि सादर सश्रद्ध समर्पित है।

●●●

आदर्शमय जीवन

–सत्यमित्र शास्त्री वेदतीर्थ, शास्त्रार्थ महारथी

आर्यसमाज टाण्डा के प्रधान श्री मिश्रीलाल जी आर्य का जीवन महान एवं आदर्शमय था। सुसंस्कृत एवं शास्त्रार्थ निपुण होने के कारण मुझ से उनका अत्यन्त प्रेम था।

शास्त्रार्थ एवं वेदप्रचार की उत्कट भावना

मैं टाण्डा के उत्सव पर बराबर जाता रहा। आर्यसमाज के उत्सव पर टाण्डा कालेज के अध्यापक श्री रामनरेश त्रिपाठी व्याकरणाचार्य ने कहा कि मुझ से बड़े-बड़े आर्यसमाज के विद्वान शास्त्रार्थ नहीं कर सकते हैं। टाण्डा में न जाने कितने आर्य आये और हार गये। यह पौराणिक पण्डित का गपाष्टम था। बाबूजी ने शास्त्रार्थ का समय निश्चित किया।' दो घण्टे तक शास्त्रार्थ हुआ। मध्यस्थता टाण्डा कालेज के प्रधानाचार्य ने किया। अन्त में आर्यसमाज की विजय हुई। इसी प्रकार यवन ईसाइयों का शास्त्रार्थ होता रहा। श्री बाबू जी प्रधान होकर सम्भालते रहे। आर्य सिद्धान्तों का ज्ञान बाबू जी को महान था। उर्दू का भी ज्ञान था।

साहसी निर्भीक

श्री बाबू जी अत्यन्त निर्भीक और साहसी आर्य थे। टाण्डा आर्य समाज का उत्सव हो रहा था। मैं वानप्रस्थाश्रम में अध्यापक था। वहीं से आया तो देखा जुलूस को यवनों ने मसजिद पर रोक दिया है। जुलूस के आगे ओ३म् का झण्डा लिये श्री कन्हैया लाल जी, मन्त्री एवं श्री बाबू मिश्रीलाल जी प्रधान जा रहे थे। अंग्रेजों का समय था। सरदार जिलाधीश ने जुलूस को आगे बढ़ाया।

ग्राम वेदप्रचार एवं आर्यसमाजों की स्थापना

मैं, सभा द्वारा, श्री गोविन्दराम जी भजनोपदेशक तथा ज्ञान प्रकाश जी बाबूजी के आदेश से प्रतिवर्ष ग्रामों-मुंदेरा, मुबारकपुर, खाशपुर, मकदूमनगर, हंसबर आदि स्थानों पर वेदप्रचार करते थे। वे किसी से कुछ न लेकर भी अपने धन से प्रचार कराते रहे और अब उन्हीं के प्रयास से वहां आर्यससमाज स्थापित हो गया। उस क्षेत्र में अधिक मध्यम एवं निम्न वर्ग के लोग हैं। उन्हें आर्य बनाने का श्रेय बाबू

मिश्रीलाल जी को है। उनका प्रभाव मुसलमानों पर भी इतना था कि उनके कन्या कालेज में मुसलमान लड़कियां पढ़ती हैं, और वेदमंत्र उच्चारण तथा संस्कृत में सम्भाषण करती हैं। यज्ञ में सम्मिलित होना एक आदर्श एवं नैतिकता का परिचय है। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की मृत्यु पर आर्यसमाज टाण्डा का उत्सव शान्तियज्ञ के रूप में मनाया गया। दफा १४४ के होते हुए मुसलमानों के न रोकने पर हिन्दुओं ने पूंछा तो उन्होंने कहा कि आर्यसमाज साम्प्रदायिक नहीं है। उनका प्रभाव पूरे क्षेत्र पर छाया हुआ था। शताब्दी की प्रबल कामना, उत्साह उनके अन्दर था किन्तु संयोग की बात है आर्यसमाज टाण्डा की शताव्दी पर वे न रहे। परन्तु आज भी उनकी आत्मा सबको प्रेरणा दे रही है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।"

श्री बाबू मिश्रीलाल जी का पारिवारिक जीवन आर्य समाज के सिद्धान्तों से प्रेरित था। उनकी पत्नी मोतीहारी के श्रीजगन्नाथ जी चौधरी की बहिन हैं, वे लोग नित्य यज्ञ करते थे। उनके पुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य, श्री राजेन्द्र जी तथा श्री नगेन्द्र जी (डाक्टर साहब) ये सब आर्य हैं। महदावल बस्ती में उनकी बहिन श्री सत्यनारायण आर्य से ब्याही थीं। बाबूजी सन् १९६५ में बीमार थे, किन्तु उनके छोटे पुत्र श्री राजेन्द्र जी ने उत्सव कराया। उनके सम्बन्धी श्री सीताराम आर्य, कलकत्ता, कट्टर आर्य हैं। इस प्रकार उनका परविार सारा आर्य समाजी है।

आर्य समाज के संन्यासियों, नेताओं से उनको प्रेम था। श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी त्यागानन्द जी, श्री स्वामी ओमानन्द जी उनके प्रेमी थे।

फैजाबाद में - बाबू जी को मैंने पं. जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस आदि से मिलते देखा था। उन्हें अजमेर अर्ध शताब्दी पर भाई परमानन्द जी एवं महात्मा हंसराज जी से मिलते देखा था। उनके महान कार्यों में आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ में यज्ञशाला का निर्माण है। इस प्रकार इस महान आत्मा की भावना राष्ट्र एवं धर्ममयी रही। श्री बाबूजी एक नक्षत्र थे, जो प्रकाश देकर विलीन हो गये।

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।
अद्य टाण्डा निराधारा निरालम्बा सरस्वती।
पण्डिताः खण्डिताः सर्वे मिश्रीलाल दिवंगते,
शूरा कृतविद्योऽसि धर्मपुत्रो ऽसि प्रचारकः।
यत्र वंशेसमुत्पन्नः, मिश्रीलाल महोदयस्य।।

•••

सिद्धान्तनिष्ठ व्यक्ति

❑उमाकान्त उपाध्याय

जीवन में बहुत लोगों से मिलने, बहुत लोगों के साथ कार्य करने, नजदीक से समझने का अवसर मिलता रहा है। अच्छे-अच्छे कार्यकर्ता मिले, समर्पित ऋषिभक्त मिले, ऋषि और आर्यसमाज के दीवाने मिले। बाबू मिश्रीलाल जी मिले तो उन्हें एक आदर्श व्यक्ति, सिद्धान्तनिष्ठ व्यक्ति, ऋषि के लिए समर्पित व्यक्ति के रूप में देखा। प्रथम मिलन उनके द्वितीय पुत्र श्री राजेन्द्र कुमार जी के विवाह में कोई ४० वर्षों पूर्व हुआ था। कन्या, आर्यसमाज कलकत्ता के प्रसिद्ध कार्यकर्ता स्व. श्री सीताराम आर्य की बहिन थी। बारात कलकत्ता आयी थी। मैं अपने अग्रज आचार्य रमाकान्त शास्त्री के साथ पुरोहित कार्य के लिए नियुक्त था। वर-कन्या, दोनों पक्ष, कट्टर-निष्ठावान, ऋषिभक्त आर्यसमाजी थे। फलतः विवाह संस्कार पूरी निष्ठा के साथ सम्पन्न हुआ। यह एक निष्ठावान आदर्श व्यक्ति से स्नेहिल परिचय शनैः शनैः सामाजिक एवं पारिवारिक सन्निकटता में परिणत हो गया। यह स्नेह-आनन्द सम्वन्ध ऋषिभक्ति की छाया में निरन्तर बढ़ता ही गया।

बाबू मिश्रीलाल जी का व्यक्तित्व मोहक था। बाहर से ही आदर्श स्वदेश भक्त, समाज सुधारक, कट्टर सिद्धान्तवादी पुरुष प्रतीत होते थे। हिमश्वेत खादी-धोती कुर्ता गान्धी टोपी, हाथ में छड़ी, लम्बे, छरहरे गौर बदन पर बुढ़ापे की महिमा और भी अधिक महिमामयी हो उठती थी। बातचीत में सत्यनिष्ठा, सिद्धान्त की कट्टरता सदा ही दमकती रहती थी। उनके पास बैठने में, उनसे बात करने में एक तृप्ति का बोध होता था।

बाबू मिश्रीलाल जी की कपड़ों की बहुत अच्छी दुकान-गद्दी, बड़ी अच्छी मार्केट में कलकत्ता में भी थी। सामान्य रूप से वे अपनी जन्मभूमि टांडा में ही रहते थे। किन्तु कलकत्ता में भी उनका आना प्रायः साल में ४-६ बार हो ही जाता था। जब भी कलकत्ता में रहते, प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल आर्यसमाज कलकत्ता के सत्संग में अवश्य

आ जाते थे। बाबू मिश्रीलाल जी टांडा आर्यसमाज के स्थायी प्रधान थे। उनके व्यक्तित्व के सामने कभी कोई अन्य पुरुष टांडा आर्यसमाज का प्रधान न बना। एक प्रकार से वे टांडा आर्यसमाज के आजीवन प्रधान थे। इसप्रकार हमलोग, क्यों, सभी कोई उन्हें "प्रधान जी" ही कहकर बुलाते थे। "प्रधान जी" उनका सर्वस्वीकृत सर्वसम्मत उपनाम था।

हम आर्यसमाज कलकत्ता के एक सत्संग की चर्चा कर रहे थे। कलकत्ता में होते तो समय से पूर्व ही आते, बड़ी शान्ति और तन्मयता से बीच में बैठ जाते। एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, किन्तु आगे बैठने या प्रवचन वाली वेदी पर कभी न बैठते थे। वे भीतर से निरभिमान और आर्यत्व के सम्पन्न व्यक्ति थे। बोलने वाला, छोटे से छोटा भजनोपदेशक या उपदेशक हो तो भी प्रधान जी उसे पूरा सम्मान तल्लीनता से सुना करते थे। किसी को भी उनकी ओर से उपेक्षा का भान नहीं होने पाता था।

बाबू मिश्रीलाल जी की आर्यसमाज कलकत्ता में भी पूरी प्रतिष्ठा थी। आर्यसमाज कलकत्ता ने उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया था। आर्यसमाज कलकत्ता की शताब्दी सन् १९८५ में बड़े उत्साह एवं उल्लास से मनायी गयी थी। उसमें एक प्रोग्राम विद्वत्सम्मान का भी रखा गया था। यह अखिल भारतीय स्तर पर था और कई विभूतियां, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, पं. शान्ति प्रकाश शास्त्रार्थमहारथी, डा. सत्यकेतु विद्यालंकार, कविवर उत्तमचन्द, आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री आदि अनेकों विद्वानों के साथ स्थानीय विद्वानों का अभिनन्दन सम्मान किया गया था। इस सम्मान सभा का सभापतित्व भी किसी ऐसे व्यक्ति को अर्पण हो जो इसके लिए उपयुक्त हो। हम सभी लोगों ने सर्वसम्मति से बाबू मिश्रीलाल जी 'प्रधान' को इस सम्मान सभा का भी अध्यक्ष मनोनीत किया था और उसी गरिमा के साथ उन्होंने इस गरिमामय अध्यक्षता का निर्वाह किया था।

बाबू मिश्रीलाल 'प्रधान जी' कठोर अनुशासन के व्यक्ति थे। इस सम्मान में शाल वस्त्र द्रव्य के साथ चन्दन और माला को भी सम्मिलित किया गया था। स्वामी रामेश्वरानन्द जी कुछ अधिक कठोर सिद्धान्ती थे। उन्होंने अपने सम्मान के लिए बुलाये जाने पर माइक पर ही जाकर 'सम्मान' अस्वीकार कर दिया, अधिकारियों, व्यवस्थापकों को सिद्धान्त का अज्ञानी घोषित कर दिया क्योंकि इसमें पुष्पमाला भी थी। रंग में भंग हो गया। सम्मान में क्रिया पद्धति का दायित्व तो हमारा ही था। सभी

विद्वान अधिकरी मुझे देखने लगे। मैं शिष्टाचार के द्वन्द्व में उलझ गया। उत्तर दूं तो संन्यासी का अपमान, न दूं तो मेरे संकेत पर चलने वाले अधिकारियों का अपमान। सबको पता तो था कि पद्धति का निर्माता मैं ही हूं। मैंने बिना माइक पर गये ही कह दिया कि 'स्वामी जी समावर्तन संस्कार में आचार्य को पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया जाता है।' स्वामी जी माइक पर तो थे ही, बोल दिया, आपलोग सिद्धान्त तो जानते नहीं, कहीं कुछ नहीं लिखा है।

मैं माइक पर चला गया। मैंने स्वामी रामेश्वरानन्द जी से क्षमा प्रार्थना के साथ मनुस्मृति का श्लोक पढ़ दिया–

तं प्रतीतं स्वधर्मेण धर्मदायहरं पितुः।
स्रग्विणं तल्प आसीनमर्हयेत प्रथमं गवा।। मनु. 3.3।।

मैंने निवेदन किया कि समावर्तन संस्कार में आचार्य को सुन्दर आसन पर बैठाकर फूलों की माला पहनाकर स्वागत करे। अतः फूलों का दुरुपयोग तो नहीं होना चाहिए किन्तु विद्वानों को फूलों की माला पहनाकर सम्मान करना सिद्धान्तहीनता नहीं है। यह तो महर्षि ने भी समावर्तन संस्कार में लिखा है। हां, पुष्पों को नष्ट नहीं करना चाहिए।

अधिकारियों के सम्मान की रक्षा हुई और अब अध्यक्ष के आसन से 'प्रधान जी' श्री मिश्रीलाल जी ने घोषणा की, 'स्वामी रामेश्वरानन्द जी और पं. उमाकान्त जी बैठ जांय और विद्वानों के सम्मान का कार्यक्रम जैसे चल रहा था, चालू रहे। यह अध्यक्षीय व्यवस्था थी और 'प्रधान जी' का अनुशासन प्रेम था। पीछे कार्यक्रम समाप्त हो जाने पर मेरे पास आकर बैठ गये। बड़े स्नेह से बोले, पं. जी आप भी बिना हमारे आदेश के ही स्वामी जी से उलझ गये थे। मैं क्या बोलता? मैंने संकोच से ही उत्तर दिया, प्रधान जी, मुझे अधिकारियों, विद्वानों के सम्मान और व्यवस्था के औचित्य की रक्षा का दायित्व निभाना था।

बाबू मिश्रीलाल जी ने मुझे एक बार टांडा आर्यसमाज के उत्सव में भी आमंत्रित किया। वे तो कई बार ले जाना चाहते थे, पर मैं ही कालेज से अवकाश लेकर उत्सवों में जाना नहीं चाहता था। वहां मैंने 'प्रधान जी' की प्रतिष्ठा और उनका प्रभाव समीप से देखा था। वे वहां के सामाजिक कार्यकर्ताओं में सर्वमान्य थे। हिन्दुओं के, आर्यसमाजियों के तो अग्रगण्य नेता प्रमुख तो थे ही, मुसलमान भी उन्हें अत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखते थे। उनकी नैतिकता और ईमानदारी के

कायल थे। टांडा में आर्य कन्या इण्टर कालेज अति सम्मानित कालेज है। इसमें हिन्दू मुसलमान सभी वर्गों-धर्मों की लड़कियां प्रवेश पाने के लिए आतुर रहती हैं। बाबू मिश्रीलाल जी आर्यसमाज टांडा के प्रधाान तो थे ही, आर्य कालेज के भी प्रधान सर्वेसर्वा व्यवस्थापक थे। हमें यह देखकर सुखद आश्यर्च हुआ कि टांडा में आर्य कालेज की छात्राएं-मुसलमान छात्राएं भी वेदमंत्र पढ़ती थीं और आर्य कालेज के धार्मिक पुरोगमों में खुलकर भाग लेती थीं, और मुसलमान अभिभावक इससे प्रसन्न रहते थे। मैं इसे बाबू मिश्रीलाल जी के आर्यत्व का नैतिक प्रभाव समझता हूं।

टांडा आर्यसमाज का उत्सव अपने में विशेष महत्व रखता है। जब तक बाबू मिश्रीलाल जी थे, इसको श्रेय उन्हें ही था। पं. शान्ति प्रकाश जी 'शास्त्रार्थ महारथी' आर्यसमाज टांडा में सदा आमंत्रित हुआ करते थे और मुसलमान मौलवियों से उनका शास्त्रार्थ प्रतिवर्ष होता था और इन शास्त्रार्थों के अध्यक्ष 'प्रधान जी' बाबू मिश्रीलाल जी ही होते थे। मैंने भी दो व्याख्यान मुसलमानों की राष्ट्रीयता और 'वेद कुरान' के तुलनात्मक महत्व पर दिया था।

बाबू मिश्रीलाल जी ने अपने परिवार पर भी आर्यसमाज का पूरा प्रभाव डाला था। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य ने अपने पैतृिकदाय के रूप में टांडा आर्यसमाज और आर्य कन्या कालेज का कार्य पूरी योग्यता से संभाल लिया है। श्री आनन्द कुमार जी टांडा आर्य समाज के प्रधान, बंगाल प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा पूर्वांचल-बिहार, बंगाल, आसाम, उड़ीसा के प्रभारी एवं गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथधाम के उपप्रधान (कार्यकारी) हैं। मध्यम पुत्र राजेन्द्र कुमार आर्य सेलम में आर्यसमाज के निष्ठावान भक्त हैं। कनिष्ठ पुत्र डा. नरेन्द्र कुमार जी इंग्लैड में आर्य समाज के प्रचार प्रसार में लगे हुए हैं। सारा परिवार आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में तत्पर है। यह भी बाबू श्री मिश्रीलाल जी ही प्रभाव है।

●●●

ज्योति को मन्द न होने देंगे, अपितु उत्तराधिकार में भी वही निष्ठा और लगन प्रदान करेंगे-ऐसा आशापूर्ण विश्वास है।

श्रील आर्य मिश्रीलालः, देशभक्तश्च धार्मिकः।
दिवङ्गतोऽप्यनाश्येन, यशः कायेन जीवति।।

ऋषि के अनन्य सेवक

-डा.ऋषिदेव विद्यालंकार

बाबू मिश्रीलाल जी आर्य, ऋषि दयानन्द के सच्चे अनुयायी, समाज सुधारक, कुप्रथा निवारक, शिक्षा प्रसारक, राष्ट्रवाणी हिन्दी के प्रबल सम्पोषक, सदैव जनहित के कार्यों में संलग्न, सादा जीवन उच्च विचार वाले आदर्श व्यक्ति थे।

कोई मनस्वी, सदाचारी, दृढ़ आत्मविश्वासी व्यक्तित्व ही समाज की, राष्ट्र की, धर्म की और मानव जाति की निर्विकार मन से सतत् सहज सेवा कर सकता है। बाबू मिश्रीलाल जी आर्य ऐसे ही युगपुरुष एवं काल चिन्तक थे जिन्हें सदैव मानव समाज के उत्थान एवं कल्याण की अनवरत चिन्ता रहती थी। उनके क्षणिक सान्निध्य से जिस अलौकिक सुख की अनुभूति होती थी उसे शब्दों में व्यक्त कर पाना निश्चय ही सम्भव नहीं। उनके नेत्रों से सूर्य की ऊर्जा और शीतलता उन्हें प्रतिदिन के कार्य करने की शक्ति और क्षमता प्रदान करती थी। यही करण था कि वृद्धावस्था में भी उनमें युवा का सा उत्साह और साहस दिखाई देता था।

मुझे तो न केवल उनके प्रत्यक्ष दर्शनलाभ का सौभाग्य प्राप्त हुआ, अपितु जीवन की अनेक समस्याओं और कठिन परिस्थितियों को सुलझाने और विचार विमर्श करने का सुअवसर भी प्रदान हुआ। उनका तेजस्वी चेहरा आज भी मुझे अपनी जटिल समस्याओं एवं चिन्ताओं से ऐसा मुक्त दिखाई पड़ता है जैसे संसार की समस्त क्लान्ति तिरोहित हो गई हो।

पराधीन भारत में उन्हें राष्ट्र की स्वाधीनता के यज्ञ में जेलयात्रा भी करनी पड़ी परन्तु अपनी सैद्धान्तिक लड़ाई में वे किसी के आगे झुके नहीं और न ही नौकरशाही के आगे घुटने टेके। महात्मा गांधी, आचार्य कृपलानी तथा आचार्य नरेन्द्र देव आदि प्रसिद्ध देशसेवकों के सम्पर्क का अन्यतम प्रभाव उनके मानस पर ऐसे अंकित हो चुका था जैसे उन्हें जीवन का मोह रहा ही न हो और सत्यता के प्रसार के लिय वे बेधड़क कटिबद्ध हो गये हों। वे स्वाधीनता पाने के अधिकार को प्रत्येक भारतीय

का हक ही नहीं अपितु प्राकृतिक धर्म समझते थे। वे तिलक महोदय के पवित्र सन्देश 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' के सच्चे पुजारी थे। वे माँ भारती के सच्चे साधक और उपासक थे। शायद इसी कारण उन्हें भौतिक सुख सुविधाओं की चकाचौंध वाला जीवन कभी रास नहीं आया। भारतीय सामाजिक संस्कृति में ही विश्वमानव का उत्थान और कल्याण अन्तर्निहित है, यह गूढ़ रहस्य वे अपने जीवन में भली भांति जानते थे।

श्री मिश्रीलाल जी के जीवन पर ऋषि दयानन्द का व्यापक प्रभाव रहा। ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थों का उन्होंने गम्भीर अध्ययन किया। यही करण था कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज की सेवा में अर्पित कर दिया। अनेकों आर्यसंस्थाओं की स्थापना की। ऋषि की शिक्षा प्रणाली से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने जनपद में स्त्री शिक्षा पर उस समय तन्मयता से कार्य किया, जब समाज में महिलाओं को बड़ी हेय दृष्टि से देखा जाता था। 'स्त्री शूद्रो ना धीयताम्' की दकियानूसी और पौराणिक विचारधारा का उन्होंने डटकर विरोध किया और महिलाओं को समाज में सम्मानास्पद अधिकार दिलाने का प्रमुख बीड़ा उठाया। उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण मानव उत्थान एवं कल्याण के लिए अर्पित कर दिया।

आज यद्यपि मिश्रीलाल जी हमारे बीच नहीं हैं परन्तु अपनी मानवीय कल्याण एवं उत्थान की विचारधारा के प्रचार एवं प्रसार के कारण प्रतिपल, प्रतिक्षण हमारे समक्ष जीवित हैं, जीवित रहेंगे और आगामी सन्ततियां उनके बनाये मार्ग पर चलकर सच्ची मानव सेवा कर सकेगी।

●●●

निर्धूम जीवन ज्योति

–डा. श्रीकान्त उपाध्याय
एम.ए., पी-एच.डी.

याद आता है वह दिन जब मैं कलकत्ता आर्य समाज के किसी पुरोगम में सम्मिलित होकर, आर्यसमाज के कार्यालय में बैठा हुआ कुछ-कुछ आत्मचिंतन में विलीन विचार-तरंगों में प्रवहमान मनोमस्तिष्क को विश्राम दे रहा था। समाज का कार्यालय सार्वजनिक कार्यों में व्यस्त समाज के कार्यकर्ताओं को आने-जाने, उठने बैठने, परस्पर वार्तालाप करने, परामर्श सरीखे गंभीर वार्तालाप और मनोरंजन हेतु हल्की-फुल्की बात-चीत से गुंजायमान हो रहा था। मैंने अपने सामने कुर्सी पर आसीन एक वयस्क वृद्ध को, धोती-कुर्ता और टोपी से सुभूषित, कृशकाय किन्तु तेजस्वी व्यक्ति को देखकर अपने पास बैठे समाज के किसी कार्यकर्ता से धीरे से पूछा कि टोपीधारी व्यक्ति कौन हैं? संक्षिप्त किन्तु सटीक उत्तर मिला, मिश्रीलाल जी टाण्डा वाले। इतना परिचय देकर कार्यकर्ता महोदय ने मेरी ओर उस दृष्टि से देखा जैसे उन्होंने मुझे अपने अति संक्षिप्त उत्तर में उस व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन, सम्पूर्ण क्रियाकलाप, और पूर्ण परिचय करके रख दिया हो जिसके उपरान्त मुझे उनसे और पूछने-जानने समझने के लिए कुछ शेष नहीं।

थोड़ी देर तक मैं अपनी स्मृति पर बल देता हुआ आर्यसमाज कलकत्ता के उस कार्यकर्ता की ओर अवाक् देखता रहा। फिर तो मेरे मानसपटल पर उस व्यक्ति का, उस श्वेतखद्दर वस्त्रित कर्मठ दृढ़ व्यक्तित्व का भरा-पूरा परिवार, उसके संबन्धियों का परिवार और उसके परिचितों तथा प्रशंसकों का अपार जन समुदाय एक साथ उमड़ कर आने लगा। मैंने अपने समीप बैठे हुए, अपने संक्षिप्त उत्तर से मुझे अवाक् कर देने और मूक चिन्तन क्षेत्र में छोड़ देने वाले सज्जन से कहा-यही मिश्रीलाल जी टाण्डा वाले हैं?

तदुपरान्त मेरे अन्तर्मन में सहज भाव से स्वगत कथन हुआ-तभी तो प्रचुर सम्पन्नता और योग्य, आज्ञाकारी एवं सुपुत्रों के संरक्षण में पोषित यह सादगी सौम्यता तेजस्विता, कर्मठता तथा सामाजिक कार्यों के सम्पादन में अपार अभिरुचि उत्साह, दृढ़ता एवं लगन अभी भी इस

वयस्क व्यक्ति को वार्धक्य की शिथिलता और वैदिक धर्म प्रचार के अनुष्ठानों में कृपणता कदाचित इनके स्वनिर्मित परिवार और परिवेश की विद्यमानता में कैसे स्पर्श कर सकती है? इसी चिन्तन धारा में मैंने मिश्रीलाल जी को 'नमस्ते' कहकर अभिवादन किया। तत्काल उन्होंने बड़े ध्यान से मेरी ओर देखते हुए अभिवादन का उत्तर 'नमस्ते' कहकर दिया। फिर तो परिचयात्मक वार्तालाप का एक संक्षिप्त प्रसंग उठ खड़ा हुआ। और जब मैंने प्रश्नोत्तर की शृंखला में यह कहा कि मैं प्रातः स्मरणीय स्वर्गीय आचार्य पं. रमाकान्त जी उपाध्याय को छोटा भाई हूं, तब तो बड़े स्नेह और श्रद्धा भाव से वे बोल उठे – पूज्य आचार्य जी मेरे श्रद्धास्पद थे, मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा-समझा और अपने जीवन को तदनुसार ढालने का प्रयास किया है। आप सब भाई उनकी छत्रछाया में और उनका अभिभावकत्व प्राप्त कर वैदिक धर्म प्रचारक और आर्यसमाज के सजग प्रहरी बन सके हैं, इसे देखकर मुझे हार्दिक आह्लाद होता है।

उस पुनीत प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए मैंने श्री मिश्रीलाल जी से आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति, उसके संघटनों, उसके भविष्यत् उसके कार्यकर्ताओं, प्रचारकों, उपदेशकों एवं सत्संगों और वार्षिकोत्वों के वर्तमान और भावी पुरोगमों के प्रति अपने सुलझे हुए विचारों को व्यक्त करने का आग्रह किया। इस आग्रह पर वे बोल उठे – पं. जी मुझे तो आप आर्यसमाज का एक सजग प्रहरी और सिपाही समझें। मुझमें आपके सभी प्रश्नों के सर्वमान्य, सन्तोषजनक और प्रेरणास्पद उत्तर देने और आपके शंकाकुल हृदय को पूर्णतया आश्वस्त कर देने की क्षमता तो नहीं किन्तु इतना अवश्य कह सकता हूं कि आर्यसमाज के संघटनों के लिए आदर्श ऋग्वेद के संघटन सूक्त और आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं, उपदेशकों तथा अधिकारियों के लिए आर्यसमाज के दश नियम, उन्नति का मार्ग और भगवान का उपदेश यदि आचरण, जीवन-व्यवहार में लाया जा सके तो पर्याप्त है। कदाचित इसीलिए प्रत्येक सत्संग के उपरान्त महर्षि स्वामी दयानन्द महाराज ने इन नियमों और उपदेशों का समवेत पाठ करने की स्वस्थ परम्परा चलायी, जिसका अनुसरण अधावधि किया जाता है। मैं तो यथाशक्ति अपने जीवन-व्यवहार को इन नियमों और उपदेशों पर ले चलने की सतत चेष्टा करता हूं। आगे परमपिता परमेश्वर की इच्छा।

इस संक्षिप्त वार्तालाप के उपरान्त वे अपने किसी आत्मीय सज्जन

के साथ कहीं प्रस्थान करने के लिए उठ खड़े हुए और मैं भी उन्हें सादर नमस्ते कहकर अन्य किसी आवश्यक कार्य में व्यस्त हो गया। स्वनामधन्य स्वर्गीय मिश्रीलाल जी का यह संक्षिप्त हृदयोद्गार यथावत् मेरी स्मृति में विद्यमान है।

ऐसे व्रती महापुरुष मिश्रीलाल जी के महनीय जीवन चरित्र और स्मरणावली को आद्यंत अब मैंने ध्यान से पढ़ा तब उनके प्रभविष्णु व्यक्तित्व की अमिट छाप से अभिभूत मनोमस्तिष्क एवं हृदय से निकला कि वे व्यक्ति नहीं, संस्था थे। इसीलिए तो आजीवन अनेकानेक शिक्षा संस्थाओं और आर्यसमाज के लिए निःस्वार्थ भाव से सर्वात्मना समर्पित रहे। तन-मन-धन से आर्यसमाज की संस्थाओं के सम्पोषण, संवर्धन, संरक्षण और उत्थान तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सतत निमग्न मिश्रीलाल जी वास्तव में सबके श्रद्धास्पद थे। टाण्डा निवासियों - हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाइयों और सर्वसाधारण जन समुदाय को अपनी सहानुभूति, न्यायप्रियता, सच्ची वैदिकधर्म निष्ठा और निःस्वार्थ सेवा भावना, सच्चरित्रता तथा सद्व्यवहार से आकृष्ट करने वाले मिश्रीलाल जी आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं, अधिकारियों, पुरोहितों और उपदेशकों एवं महोपदेशकों के अत्यन्त प्रिय विश्वासपात्र तथा श्रद्धाभाजन बने रहे। उनसे सम्बन्धित तथा सम्पोषित संस्थाओं और उनके परिजनों तथा परिचितों को उनके मिशन को आगे बढ़ाने तथा सफल करने की सत्प्रेरणा प्रदान करे, जिससे स्व. मिश्रीलाल जी की कीर्ति चिरस्थायी बनी रहे। कीर्तिर्यस्य स जीवति।

●●●

मेरे मार्ग दर्शक

–विज्ञमित्र शास्त्री

स्वनाम धन्य बाबू मिश्रीलाल आर्य ने टाण्डावासियों को अपने सेवामृत से कृतार्थ किया, वहीं बाल्यकाल से मेरे ऊपर भी उनकी दृष्टि सदैव से बनी रही। मेरी संरचना में उनका पूरा योगदान रहा। मेरे स्वर्गीय पिता श्री बेनीमाधव एक प्रसिद्ध व्यवसायी थे। आर्यसमाज टाण्डा के सदस्य होने के नाते उनके हृदय में यह लालसा जगी कि मैं भी अपने एक पुत्र को वैदिक धर्म का ज्ञाता क्यों न बनाऊं? उन्होंने अपने तीन साथियों से परामर्श किया। जिनमें बाबू मिश्रीलाल आर्य, स्व.जगत नारायण सहगल उर्फ टेक्कू बाबू तथा स्व.सेठ सुखमंगल आर्य प्रमुख थे। सबकी राय एक थी कि बालक को गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या में दाखिल कर दिया जाय। स्वामी त्यागानन्द जी के पास रहकर बालक योग्य बन जायगा। उन्हीं दिनों गुरुकुल अयोध्या के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री दामोदर झा भी आये हुए थे। उनहोंने भी प्रेरित किया तथा मेरे पिता ने मेरा प्रवेश गुरुकुल में करा दिया।

लगभग बारह वर्षों के पश्चात् अयोध्या गुरुकुल का स्नातक होकर जब मैं टाण्डा आया श्री बाबू मिश्रीलाल आर्य जी की योजना सफल हो गई थी। उन्होंने सन् १९६३ में मुझे आर्यसमाज टाण्डा का मंत्री बनाया। मुझसे पहले इस समाज के अनेक योग्यतम मंत्री हो चुके थे। जिसमें श्री बच्चूलाल जी, श्री चौधरी कन्हैयालाल जी तथा श्री रामलाल जी आदि प्रमुख थे। इनके द्वारा किये गये गुरूतर कार्यों का स्मरण कर मैं घबड़ा जाता था। बाबू मिश्रीलाल जी ने जो मुझे सभा संचालन की शिक्षा दी, उसी गुरुमन्त्र के सहारे मैंने उनके साथ लगभग ३५ वर्षों तक मंत्री पद पर रहकर कार्य किया। उनकी शिक्षाओं में कुछ बातें इस प्रकार हैं, –१–पदाधिकारी को समय का ध्यान रखना चाहिए, कोई भी कार्य समय पर आरम्भ कर दिया जाय। २–अनुशासन का पालन करते हुए सभी सभासदों को भी अनुशासन में रखना चाहिए। ३–पदाधिकारी को मृदुभाषी होना चाहिए। ४–विपत्ति में भी धैर्य धारण करने से कोई न कोई रास्ता निकल आता है। ५–सभी सदस्यों के सुख-दुःख में बढ़कर हिस्सा लेना चाहिए।

बाबू मिश्रीलाल जी में मैंने निम्नलिखित प्रमुख गुण पाये-

वैदिक मान्यताओं के अनन्योपासक :

प्रधान जी के मन में वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अटूट निष्ठा थी। वे नित्य संध्या और हवन करते तथा अन्यों को भी यज्ञादि करने के लिए प्रेरित किया करते थे। वैदिक धर्म के प्रचार के लिए वार्षिकोत्सव पर जो शंका समाधान का कार्य होता था, वह वास्तव में शास्त्रार्थ का रूप ले लेता था। इस कार्यक्रम के लिए वे स्वयं बड़ा परिश्रम किया करते थे। सभी धर्मों के मानने वालों के यहां वे स्वयं जाते थे। यदि कोई उर्दू का जानकार है तो उसे उर्दू का सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते। हिन्दी तथा अंग्रेजी के जानकारों को उन्हीं की भाषा में लिखा सत्यार्थ प्रकाश देते थे। एक समय ऐसा भी था होवर्ट त्रिलोक नाथ इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य श्री पं.देवीप्रसाद मिश्र जी, वहीं के अध्यापक श्री पं.रामनरेश त्रिपाठी जी तथा अरवी, फारसी के प्रसिद्ध विद्वान मौलाना नूरमोहम्मद साहव अपने सभी साथियों के साथ शंका समाधान के कार्यक्रम में बड़ी तैयारी के साथ उपस्थित होते थे। वहीं पर सत्यासत्य का निर्णय आरम्भ हो जाता। यह शंका समाधान का कार्यक्रम सारे नगर में चर्चा का विषय बन जाता था।

धैर्य के धनी :

बाबू मिश्रीलाल जी के अन्दर अपूर्व साहस एवं धैर्य था। बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर वे कभी घबड़ाते नहीं थे। एक बार आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव अपने निर्धारित समय पर होने वाला था। विज्ञापन छप चुके थे। विद्वानों एवं भजनोपदेशकों के आने की स्वीकृति मिल चुकी थी किन्तु दुर्भाग्यवश उत्सव के पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या कर दी गई। सर्वत्र देश में भय का वातावरण व्याप्त था। ट्रेनों से यात्रा करना भी कठिन था। मैंने आदरणीय प्रधान जी से आग्रह किया कि उत्सव को कुछ दिनोंके लिए टाल दिया जाय। प्रधान जी ने बड़े धैर्य के साथ कहा- घबड़ाने की बात नहीं है। हमलोग शुभकार्य में लगे हैं। प्रभु हमारी सहायता अवश्च करेंगे। उत्सव अपने निर्धारित समय पर ही होगा, इतने में किसी ने आकर सूचना दी कि यजुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं.सत्यमित्र जी शास्त्री तथा हैदराबाद से चलकर डा.अमरेश जी आ चुके हैं। डा.अमरेश जी ने यात्रा में

होने वाली कठिनाइयों का विस्तार से वर्णन किया। समय पर आमंत्रित अधिकांश विद्वान और उपदेशक उपस्थित हुए। वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

परम साहसी :

सभी यह जानते हैं कि बाबू जी में साहस कूट कूट कर भरा हुआ था। एक बार टाण्डा आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर बेतिया के पूर्व इमाम वर्तमान नाम पं. जयप्रकाश आर्य आये हुए थे। जयप्रकाश आर्य आर्यसमाज में आने के पूर्व कई बार मक्का, मदीना तथा अन्य कई इस्लामिक देशों में इस्लाम धर्म के प्रचार के लिए जा चुके थे। कुरान के अच्छे जानकार हैं। उन्होंने अपने व्याख्यान में कुरान तथा मोहम्मद साहब की जमकर आलोचना की। वर्ग विशेष के लोगों ने इनके व्याख्यान को टेप कर लिया तथा फैजाबाद के डी.एम. के पास जाकर आर्यसमाज टाण्डा के विरुद्ध मौखिक शिकायत की। डी.एम. महोदय ने आर्यसमाज के प्रधान बाबू मिश्रीलाल जी को बुलवाया तथा पूछा क्या आप के उत्सव में जयप्रकाश जी ने कुरान एवं मुहम्मद साहब के विरुद्ध वक्तव्य दिया है? बाबू मिश्रीलाल जी ने निर्भयता से कहा–'महोदय, आपका कथन सत्य है। उन्हें पूरा कुरान कण्ठस्थ है। कुरान और मोहम्मद साहब की आलोचना का आधार स्वयं कुरान ही है। आप वर्ग विशेष के लोगों को जयप्रकाश जी के विरुद्ध न्यायालय में मुकदमा दायर करने को कहें। जिससे न्यायालय में ही दूध का दूध और पानी का पानी हो जाय।' बाबू मिश्रीलाल के इस कथन को सुनकर वर्गविशेष के लोग सावधान हो गये। उन्होंने सोचा अभी तक कुरान की खामियों को टाण्डा के लोगों ने सुना है। न्यायालय में बहस के दौरान सारी दुनियां के लोग भी इससे परिचित हो जायेंगे। उन्होंने अपनी शिकायत वापस ले ली।

परम श्रद्धेय बाबू मिश्रीलाल जी आर्य ने मेरे जैसे अनेकों लोगों को सन्मार्ग में प्रेरित कर उनके जीवन को सफल बनाया है। आज उनके शती समारोह के शुभ अवसर पर श्रद्धा विनम्र भाव से उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

●●●

श्रद्धेय बाबू जी

-डा.ज्वलंत कुमार शास्त्री
एम.ए., पी-एच.डी.

आर्यसमाज टाण्डा के कर्णधार आर्यकन्या इण्टर कालेज टाण्डा के सूत्रधार, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त और आर्यसमाज के प्रचार प्रसार की धुन में हमेशा प्रयत्नशील श्री बाबू मिश्रीलाल जी आर्य को मैं ही नहीं अपतु सभी उपेदशक, प्रचारक आदर से 'बाबूजी' कहा करते थे। मेरा उनसे परिचय उनके जीवन के सन्ध्याकाल में हुआ। उनके देहावसान के पांच-छः वर्ष पूर्व से मैं उनके निमन्त्रण पर टाण्डा आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में जाने लगा। प्रारम्भ कुछ इस प्रकार से हुआ कि लगातार दो-तीन वर्षों तक अन्तिम दो-ढाई दिन ही मैं उत्सव में रह पाता था। क्योंकि टाण्डा का उत्सव कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक मनाया जाता है। प्रतिवर्ष यही तिथि रहती है। इसका एक बड़ा कारण कार्तिक पूर्णिमा भर कार्तिकी का मेला और बड़ी संख्या में मेला के यात्रियों द्वारा दिन-रात पूर्णिमा के दिन आर्यसमाज के पण्डाल में वेद-प्रवचन, व्याख्यान, भजन सुनना था। मैं काशी शास्त्रार्थ स्थल पर आयोजित कार्यक्रम में साग्रह बुलाया जाता। उस कार्यक्रम में ट्रस्ट के एक सदस्य के रूप में तथा वहां पर राजर्षि रणंजय सिंह, स्वामी सत्यप्रकाश जी, श्री ओमप्रकाश त्यागी जी आदि महानुभावों के कार्यक्रम को आकर्षक तथा प्रभावी बनाने की दृष्टि में मेरा उपयोग अधिकारीगण चाहते थे और मुझे काशी जाना पड़ता। फलतः चतुर्दशी तथा पूर्णिमा को मात्र आधा दिन के लिए टाण्डा के उत्सव में जा पाता। बाबू जी मेरी मजबूरी समझते तथा कहते कि एक दिन के लिए ही सही आपको टाण्डा अवश्य आना है।

मैं उनके सम्पर्क में ४-५ वर्ष ही रह पाया, किन्तु मैं उनसे अत्यन्त प्रभावित रहा, दूसरा कारण यही है कि पूरे उत्तर भारत में टाण्डा जैसा वार्षिकोत्सव अब कहीं नहीं होता। इसका श्रेय स्व. बाबूजी को जाता है। उत्सव में इतनी अधिक उपस्थिति और मेला के दिन तो प्रातः ६ बजे से रात्रि १२ बजे तक अनवरत प्रचार चलता रहता।

निरन्तर ५ दिनों तक होने वाले उत्सवों में उत्सव-प्रचार के सभी अंगों की प्रक्रिया अपनाई जाती। मसलन-यजुर्वेद पारायण यज्ञ, शंका समाधान, शास्त्रार्थ, भजन, उपदेश और विविध सम्मेलन। अनेक सम्मेलनों में से संस्कृत सम्मेलन प्रतिवर्ष और उसमें संस्कृत में भाषण। अन्तिम दिन तो प्रातः ६ बजे से रात्रि १२ बजे तक का कार्यक्रम। उत्सव में उपदेशकों, प्रचारकों भजनोपदेशकों, विद्वान् व्याख्याताओं और विदुषियों की प्रभूत संख्या होती। प्रायः भारत में कहीं भी इतने अधिक उपदेशक प्रचारक प्रतिवर्ष किसी एक आर्यसमाज के उत्सव में नहीं जाते हैं। सभी उपदेशकों वक्ताओं के दिन और रात्रि के कार्यक्रम जिसे बाबूजी ही बनाते, उससे कोई असन्तुष्ट भी न रहता ओर सर्वथा सन्तुलित कार्यक्रम होता। आज जब कि उत्सवों पर शाास्त्रार्थ बन्द हो चुके हैं किन्तु टाण्डा में कुछ वर्षों पूर्व तक प्रतिवर्ष शास्त्रार्थ होता देखकर किसे आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता न होगी। इसीलिए लगभग प्रतिवर्ष पं.शान्ति शास्त्रार्थ महारथी और पं.सत्यमित्र शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी बुलाये जाते। बाबू जी प्रत्येक कार्यक्रम में रात्रि तक उपस्थित रहते। ८० वर्ष से अधिक हो जाने के बाद भी सभी विद्वानों की आवभगत करते, भोजन जलपान-व्यवस्था की समुचित जानकारी लेते और किसी भी प्रकार की न्यूनता होने पर उसकी पूर्ति में सर्वथा तत्पर रहते।

किसी वर्ष कोई भी सम्मेलन जो प्रतिवर्ष निर्धारित होता उसे स्थगित न करते। एक बार महिला सम्मेलन के लिए आने वाली एक विदुषी महिला ने कहलवाया कि अमुक दिन यह सम्मेलन न रखकर अमुक दिन रख लें जिससे मैं उपस्थित हो सकूं। बाबू जी का उत्तर था-आप जब भी आयें, स्वागत है, किन्तु जिस दिन महिला सम्मेलन रखा गया है, उसी दिन प्रतिवर्ष होने की परम्परा रही है, उसे स्थगित कर परिवर्तित नही किया जाएगा।

शंका समाधान का बड़ा रोचक कार्यक्रम होता। एक वर्ष किसी ने स्वामी दयानन्द की जन्मतिथि पूछी। समाधाता महोदय को परेशानी हुई, बाबू जी खड़े हुए और बोले, सिद्धान्त पर प्रश्न करिए, स्वामी दयानन्द की जन्मतिथि आर्यसमाज को नहीं मालूम, हमें ऋषि दयानन्द का बोध दिवस जो ज्ञात है, प्रतिवर्ष हमलोग शिवरात्रि को मनाते हैं। मैं मंच पर खड़ा हुआ और बाबू जी से कहा कि इस प्रश्न का उत्तर मैं दूंगा। बाबू जी ने सहर्ष अनुमति दी और मैंने कहा कि स्वामी जी की जन्मतिथि फाल्गुन कृष्ण दशमी, दिन शनिवार १८८१ विक्रमी है। सार्वदेशिक सभा

ने इसी तिथि को स्वामी जी की जन्मतिथि घोषित किया है और उसका आधार तर्क-प्रमाण-पुरस्सर मैंने उपस्थित किया। प्रश्नकर्ता, सभा में उपस्थित जन समुदाय, उपदेशक वर्ग और वाबूजी आह्लादित हो उठे। वाद में वावू जी ने मुझे बताया कि यही प्रश्न यहां तीन-चार साल से पूछा जा रहा है, किसी उपदेशक ने इस सम्बन्ध में पूरी बात की जानकारी नहीं प्राप्त की। आपने इस पर अच्छा अध्ययन किया है।

वावू जी की दूसरी बड़ी देन टाण्डा आर्य कन्या इण्टर कालेज है। टाण्डा में स्त्री-शिक्षा की न्यूनता और आवश्यकता को देखते यहां कन्या स्कूल वावू जी के प्रयास से खोला गया। धीरे-धीरे यह विद्यालय प्रगति करता गया और इण्टर कालेज के रूप में आवासीय व्यवस्था से सुसज्जित हो गया। इस आर्यकन्या इण्टर कालेज की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें सैकड़ों मुस्लिम कन्यायें पढ़ती हैं। पचासों की संख्या में कन्यायें हॉस्टल जो विद्यालय परिसर में ही है, रहती हैं। दिनचर्या कन्या गुरुकुलों जैसी-प्रातःकाल उठकर 'ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रम' के मन्त्रोच्चारण से लेकर सन्ध्या और यज्ञ के सभी मन्त्र आवासीय छात्राओं को कण्ठस्थ हैं। उत्सव के प्रत्येक सम्मेलन में छात्राएं अपना पूर्व से तैयार गीत, भजन और सम्मेलन से सम्बद्ध भाषण प्रस्तुत करतीं। और हिन्दू मुसलमान दोनों वर्ग की कन्यायें होतीं। कुछ कट्टरपंथी मुस्लिम नेताओं ने टाण्डा और आसपास के मुस्लिम भाइयों पर यह दवाब डाला कि आर्यकन्या कालेज में लड़कियों को मत पढ़ाओ, वे हिन्दू वन जायेंगी। अभिभावकों का उत्तर होता कि जब तक मिश्रीलाल जी हैं, इनके ईमान और चरित्र पर पूरा भरोसा है, लड़कियों की सुरक्षा, के साथ अच्छी तालीम और उन्हें चरित्र की धनी बनाने वाली इस संस्था में हम केवल इस कारण न पढ़ायें कि यह आर्यों की पाठशाला है ठीक बात नहीं। जब कलकत्ता में आर्यसमाज की शताब्दी मनाई गयी और उसमें टाण्डा कन्या कालेज की मुस्लिम लड़कियों ने वेदमन्त्र, श्लोक और अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत किये तो वहां के नेता और जन समुदाय आश्चर्यचकित हो गये। काश! देश की सभी छात्राओं और छात्रों को वैदिक संस्कृति से इस प्रकार अनुप्राणित किया जाता।

बाबू जी ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। वे कांग्रेस के सिपाही थे। अतः उनकी पुराने कांग्रेस नेताओं से मित्रता थी। उनके अनन्य मित्रों में श्री जयराम वर्मा और राजा रणंजय सिंह थे। श्री वर्मा जी उत्तर प्रदेश के कांग्रेस के प्रसिद्ध नेता थे और वर्षों महत्त्वपूर्ण मन्त्री

रहे। उन्हें राज्यपाल पद देने की पेशकश की गई थी पर वर्मा जी तैयार नहीं हुए। पुरानी पीढ़ी के त्यागी तपस्वी नेताओं से उनकी आत्मीयता थी। एक बार उत्सव पर मैंने वर्मा जी को बोलते देखा और उसके बाद कन्या कालेज में उनके सम्मान में आयोजित चाय पार्टी में सम्मिलित भी हुआ था, जिसमें श्रद्धेय बाबू जी ने मेरा अतिशयोक्ति पूर्ण और स्नेहिल परिचय स्व. वर्मा जी से कराया था। राजा साहब अमेठी कई वर्षों तक टाण्डा के उत्सव में आते रहे और बाबू जी से व्यक्तिगत भी मिलते रहे। टाण्डा आर्यसमाज की स्वर्ण जयन्ती पत्रिका में मुझे राजर्षि महोदय का काशी शास्त्रार्थ पर एक दुर्लभ पद देखने को मिला है।

बाबू जी कांग्रेसी थे लेकिन आर्य सिद्धान्तों पर किसी से समझौता करने वाले नहीं। मुस्लिम तुष्टीकरण के हमेशा विरोधी रहे। उत्सवों पर पुराणों से ज्यादा कुरान की समीक्षा पर भाषण होते। उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी, उज्ज्वल चरित्र और सरल स्वभाव से टाण्डा में ही नहीं बाहर के भी सहस्रों मुस्लिम भाई उन्हें अपना बन्धु समझते। उनकी अन्त्येष्टि में हिन्दू और मुसलमान भारी संख्या में सम्मिलित हुए। टाण्डा मुस्लिम बाहुल्य आबादी वाला शहर है। उनके देहान्त पर हिन्दू मुसलिम दोनों सम्प्रदायों की सभी दूकानें बन्द हो गईं। सैद्धान्तिक दृढ़ आर्य-पुरुष के प्रति इस प्रकार की श्रद्धांजलि स्पृहणीय है। सभी के प्रति प्रेम भाव रखते हुए भी सभी वर्ग के सुधार का प्रयास करना चाहिए यही उनके जीवन का आदर्श था।

उनका मेरे प्रति प्रेम भाव बहुत था। नवम्बर १९७९ के उत्सव में मुझे टाण्डा जाना था। किन्तु इस बीच लोकसभा का चुनाव आ पड़ा किसी भी दल का सदस्य न होने के बावजूद 'राष्ट्रीय लोकतन्त्र बनाम राजनीतिक तानाशाही' के मध्य छिड़े संघर्ष में लोकतान्त्रिक मूल्यों की रक्षा हेतु मैंने जनता दल के अमेठी प्रत्याशी श्री राजमोहन गांधी (महात्मा गांधी के पौत्र) के प्रचार-प्रभारी का दायित्व संभाला। फलतः टाण्डा के उत्सव में न जा सका और अपने मित्र दीनानाथ जी को वहां भेजते हुए उत्सव में सम्मिलित न हो पाने के कारण बाबू जी से क्षमा मांगी। उत्सव से लौटकर श्री दीनानाथ जी ने मुझे बताया कि बाबू जी प्रसन्न थे और कह रहे थे कि मैं कांग्रेसी हूं किन्तु ज्वलन्त जी अमेठी में श्री राजमोहन जी का साथ देकर उचित कार्य कर रहे हैं। बाबू जी ने मेरे लिए खादी की नई धोती और खादी का गमछा भी भेजा और कहा कि ज्वलंत जी के लिए मंगाया था, वे उत्सव में नहीं आ पाये तो

क्या हुआ, उन्हें ये भेंट दे आइए। बाबू जी का मेरे प्रति ऐसा अहैतुक प्रेम था। उनकी ससुराल मोतीहारी थी, जो मेरा गृह जनपद है। बाबू जी अक्सर मोतीहारी के आर्यसमाज की प्रगति के बारे में पूछते। उनकी ससुराल के लोग भी आर्यसमाजी थे और मोतीहारी के आर्यसमाज के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। बाबू जी के पूरे सामाजिक जीवन में उनकी सहधर्मिणी का योगदान उल्लेखनीय रहा। माता जी के आर्यत्वपूर्ण जीवन, सरल व्यवहार और निश्छल प्रेम के हम सभी प्रशंसक हैं। बाबू जी का मेरे प्रति प्रेम का एक कारण यह भी था कि प्रथम बार जब मैं टाण्डा के उत्सव में गया और वहां से चलते समय बाबू जी से हंसी खुशी बातचीत करते हुए मैंने विदा ली। बाद में बाबू जी को स्मरण आया कि शास्त्री जी को (अर्थात मुझे) दक्षिणा तो दी ही नहीं। तब मेरे प्रति उनकी प्रीति बढ़ गई और बाद में उन्होंने दक्षिणा तो दी ही और साथ यह भी वचन लिया कि जब तक मैं जिन्दा हूं, आप प्रति वर्ष टाण्डा आइये, अपरिहार्य स्थिति को छोड़कर। वे मुझसे टाण्डा आर्य समाज की शताब्दी की प्रायः चर्चा करते और कहते कि शताब्दी के लिए बहुत काम करना है। आपको मुझे सहयोग देना होगा। बाबू जी शताब्दी के पूर्व ही चले गये। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि उनके सुयोग्य पुत्र आनन्द बाबू ने अपने मजबूत कन्धे पर टाण्डा आर्यसमाज का नेतृत्व और आर्य कन्या पाठशाला का संचालन भार संभाला है। आनन्द बाबू के अन्दर भी आर्यसमाज के प्रति अनन्य-प्रेम अपने पिता के समान ही कूट-कूट कर भरा है। बाबू जी को भी इनके ऊपर अनन्य विश्वास था और वे प्रायः कहा करते थे कि मुझे इस बात का जीवन की अन्तिम घड़ी में सन्तोष और विश्वास है कि मेरे न रहने पर भी आनन्द जी सारा कार्य संभाल लेंगे और मुझसे भी ज्यादा योग्यता से कार्य करेंगे। आज के युग में एक आर्य पिता के परिवार में पूर्ण आर्यत्व और उसके बाद भी आर्यत्वपूर्ण उत्तरदायित्व का दृढ़ विश्वास; एक सच्चे आर्य के सार्थक जीवन का इससे बढ़कर उदाहरण क्या होगा?

बाबू जी के परिवार के सभी सदस्यों तथा टाण्डा आर्यसमाज के सभी अधिकारियों, सदस्यों एवं विशेषकर विद्वान् मन्त्री मेरे मित्र श्री विज्ञमित्र शास्त्री के हृदय में बाबू जी की अशेष स्मृति और आर्य समाज के प्रति तड़प और समर्पण बना रहे, प्रभु से यही प्रार्थना है।

●●●

कीर्तिस्तम्भ

–ओजोमित्र शास्त्री

प्राचीन एवं नवीन आर्यसमाजों के नाम ग्रहण के समय आर्यसमाज टाण्डा का नाम स्वतः स्फूर्त रूप में सबके सामने उपस्थित हो जाता है। कलकत्ता से लेकर दिल्ली तक के सभी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं विद्वान्, उपदेशक, भजनोपदेशक टाण्डा का हृदय से अभिनन्दन करते हैं। उपेदशक और भजनोपदेशक संन्यासी आर्यसमाज टाण्डा के उत्सव के निमंत्रण को पाकर हार्दिक सन्तोष का अनुभव करते हैं। इसके कारण मूल आर्यसमाज के प्रखर सिद्धान्तवादी श्री स्व. मिश्रीलाल जी हैं। स्व. श्री मिश्रीलाल जी का व्यक्तित्व सरल था किन्तु अनुशासन की शिथिलता उन्हें असह्य थी। आप ने अपने प्रभाव से ग्रामीण क्षेत्रों में भी आर्यसमाजें स्थापित करायीं थी जिनमें फूलपुर, हंसवर, खासपुर, किछौछा, मरखधूमनगर की आर्य समाजें अभी भी कार्यरत हैं। आप के ही परामर्श से मुबारकपुर निवासी श्री स्व. पं. लालता प्रसाद मिश्र जी ने कन्या पाठशाला की स्थापना की थी जो आज तक क्षेत्रीय कन्याओं की शिक्षा की प्रमुख संस्था है। श्री वासुदेव शाह ने आप की प्रेरणा पाकर किछौछा में इण्टर कालेज की स्थापना की थी जो आज भी फल फूल रहा है। आप के अभाव का टाण्डा के मुसलमान अधिक दुःखी हृदय से अनुभव कर रहे हैं क्योंकि आर्यसमाज के उत्सव पर पं. शान्ति प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी जैसे विद्वानों का कुरान के सिद्धान्तों पर आधारित सरस उपदेश का श्रवण लाभ प्राप्त होता था। आर्य कन्या पाठशाला में मुस्लिम कन्याओं का बाहुल्य है जो आर्यसमाज के कार्यक्रमों में उत्सुकता के साथ भाग लेती हैं।

वस्तुतः श्री मिश्रीलाल जी सफेद खादी के कपड़ों में चलते फिरते आर्य समाज की प्रतिमूर्ति थे। अनाथों एवं दलित जाति के उत्थान में समर्पित थे। अपने परम प्रिय उत्तरदायी पुत्र आनन्द के सौभाग्यशाली पिता थे।

●●●

पूर्णमदः पूर्णमिदं

–डा.शान्तिदेव बाला

लगभग दो दशक पहले की बात है, उस दिन मैं घर पर ही थी कि कालबेज बजी। द्वार खोला तो खद्दरधारी दो सज्जन एक स्थूलकाय भरे बदन के, अब नाम याद नहीं आ रहा, दूसरे श्वेत खादी के वस्त्र कुर्ता–धोती और टोपी, लम्बी चौड़ी काठी पर स्थूलकाय नहीं, ग्राम्य झलक पर निष्ठावान व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप। उन्होंने मेरे कुछ लेख पढ़े थे और किसी आर्यसमाज में सुना था, वे मुझे टाण्डा आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव कार्तिक पूर्णिमा के पर्व पर निमन्त्रित करने आए थे। मैं तब विश्वविद्यालय में कार्यरत थी, कार्तिक पूर्णिमा का अवकाश तो था पर उससे एक दिन पहले विभाग में एक अत्यन्त आवश्यक मीटिंग के कारण अवकाश लेना संभव न था। मैंने असमर्थता प्रकट की, वह बोले यह सब कुछ नहीं, आप प्रातः पूर्णिमा के दिन ही चलें, फैजाबाद पर हमारी जीप आपको लेगी, आपको महिला सम्मेलन की अध्यक्षता करनी ही है और आगामी कार्यक्रमों में भाग लेना ही है। अत्यन्त शालीन और विनम्र पर ऐसा प्रबल आग्रह कि टाला न जा सका।

वे मिश्रीलाल जी थे, यह मेरी उनकी पहली भेंट थी। जाना पड़ा, गाड़ी काफी लेट हुई, फैजाबाद से सीधे जीप से सम्मेलन मंच पर ही पहुंचना पड़ा। सम्मेलन चल रहा था बड़ी संख्या में महिलाएं थीं, पंडाल एकदम भरा पड़ा था। इस सम्मेलन की विशिष्टता केवल इतनी नहीं थी कि महिलाओं की संख्या बहुत थी वरन् पहली ही दृष्टि में जो विशेष लगने वाली बात थी वह यह कि कई बुर्का पहने मुंह खोले मुस्लिम महिलाएं भी थीं। मंच पर विचार प्रकट करने वाली छात्राओं में भी मुस्लिम छात्राएं थीं जो अपने भाषण का प्रारम्भ गायत्री मंत्र से अथवा विश्वानि देव के मन्त्र से कर रही थीं और उनका उच्चारण अत्यन्त शुद्ध था। सम्मेलन ६ बजे तक चला और फिर सायंकालीन सत्र आरम्भ हो गया जो रात्रि ग्यारह बारह पर जाकर समाप्त हुआ। एक अत्यन्त ही व्यस्त दिन। प्रधानाचार्या ग्रोवर जी के यहां ही उन्होंने मेरे ठहरने की व्यवस्था की थी। दूसरे दिन प्रातः यज्ञ में भाग लेने के लिए

तैयार ही हुई कि पता लगा मिश्रीलाल जी मिलने आये हैं। कालिज का विशाल प्रांगण, वहीं केवल पांच मिनट के लिए मिलना चाहते हैं। बहुत आभार माना था उन्होंने, मेरे पहले दिन की अनवरत व्यस्तता का। मुझे किसी प्रकार कोई कष्ट तो नहीं, भोजन, खान पान, आवास निवास का। बहुत आत्मीय आतिथ्य के बाद भी कुछ न कर पाने की शालीन संस्कृति की छाप थी उन पर। 'कुछ कष्ट नहीं, पर मुझे जरूर आपसे कुछ पूंछना है- आर्यसमाज के सम्मेलन में इतनी मुस्लिम महिलाएं, यह मंत्रों का उच्चारण करती छात्राएं, फिर जो चर्चा चली तो पांच के पचास मिनट कब बीत गए, पता ही नहीं चला। कालिज के पेड़ों से सरकती धूप नीचे तक फैलने लगी थी, नहीं तो शायद और चलती चर्चा। पता लगा दूर दूर तक कोई लड़कियों का स्कूल नहीं, छात्रावास की तो बात ही दूर, फिर यहां तो फीस के नाम पर जौ बाजरा गेहूं मक्का सब कुछ स्वीकार्य है। उन कन्याओं के माता पिता को मिश्रीलाल जी पर इतना विश्वास कि बच्चियां यहां जितनी सुरक्षित हैं उतनी शायद घर में नहीं। हर कन्या के घर से सीधा सम्पर्क है मिश्रीलाल जी का। वे अग्निहोत्र में भी भाग ले रही थीं। भारत के अनेकों आर्यसमाजों में जाने का अवसर मिला है, छोटे मोटे तीखे शास्त्रार्थों को सुनने का भी कभी-कभी। पर यह सुरक्षा का आश्वासन, बिना किसी भेदभाव के अपनापन देकर, इनके परिवारों के सुख-दुःख से सीधे जुड़कर, इन्हें शिक्षा, अध्ययन का अवसर देकर मुस्लिम युवा पीढ़ी को राष्ट्रीय धारा से जोड़ने का काम जो यहां हो रहा था, बिना किसी प्रचार के, बिना किसी आडम्बर, प्रदर्शन के, सहज सांस सा, वह इससे पूर्व मुझे कहीं देखने को नहीं मिला था। शायद यही थी मिश्रीलाल जी के व्यक्तित्व की विशिष्टता, टाण्डा के प्रत्येक वर्ग से वे जुड़े थे, प्रत्येक सम्प्रदाय में उनका मान था, समाज का प्रत्येक व्यक्ति उन्हें अपना समझता था। सबके सुख-दुःख के भागी थे, सबकी सेवा में तत्पर। सब उन्हें पितृ तुल्य मानते थे। वटवृक्ष की छांह थे वह।

तब से बराबर कार्तिक पूर्णिमा पर उनके आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में भाग लेने का निमन्त्रण आता रहा, पर कभी पारिवारिक तो कभी किसी सामाजिक दायित्व के कारण जाना संभव न हो सका। एकबार उन्होंने समाज के किसी अधिकारी को भेजा ही था पत्र के साथ, स्पष्ट आग्रह था कि वय बढ़ रही है स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, इस वर्ष तो आप अवश्य ही आएं, न जाने किस दिन हंस उड़ जाये। कुछ था उस

पत्र में कि मैंने हर स्थिति में टाण्डा जाने का निश्चय किया। टाण्डा पहुंच कर पता चला कि मिश्रीलाल जी अस्वस्थ चल रहे हैं, घर में भी कुछ दुर्घटना हो गई है, सोचा कल प्रातः काल ही उनके घर पर जाकर मिल लूंगी। दूसरे दिन प्रातः उनके यहां जाने के लिए तैयार हो ही रही थी कि पता चला बाहर प्रांगण में खड़े हैं मिलने के लिए। वही आदर मिश्रित आत्मीयता, वही अपनापन। बोले- 'अगले वर्ष शताब्दी समारोह है आपको अवश्य आना पड़ेगा। अभी तो साल भर है कौन जाने क्या हो, तभी तो आपसे कह रहा हूं कि आप स्वीकृति दे दें, भगवान से मेरी तो यही प्रार्थना है कि प्रभु अगली कार्तिक पूर्णिमा तक की सांस और दे दे ताकि शताब्दी समारोह कर सकूं। पर यम ने तो नचिकेता से कहा ही था कि मैं यम निर्द्वन्द्व घूमता हूं कभी भी किसी को भी दायें या बायें घृतसिंचित मधु भात के ग्रास सा चट कर जाता हूं। देखिए, उसकी पकड़ से वच पाता हूं कि नहीं, पर शताब्दी समारोह तो भव्य होना ही है।'

शायद उसी के एकाध माह बाद ही पता चला वे नहीं रहे।

●●●

धवल वस्त्र वेष्ठित संन्यासी

-सत्य प्रकाश आर्य

भजनोपदेशक

प्रधान जी का दर्शन मैंने सन् १६७६ में आर्यसमाज टाण्डा के उत्सव पर किया, उन्होंने जैसे मुझे देखा, तुरन्त आदेश दिया कि उत्सव के बाद साप्ताहिक सत्संग में बराबर आते रहना। बाबूजी ने जब मेरा भजन सुना बहुत अधिक प्रसन्न हुए। एक वर्ष तक मैं टाण्डा के साप्ताहिक अधिवेशन में बराबर आता रहा। उस समय मैं टाण्डा महाविद्यालय में बी.ए. का छात्र था। मैंने बी.टी.सी. का प्रशिक्षण कर लिया था। बाबूजी ने अपने दयानन्द बाल विद्या मन्दिर में प्रधानाचार्य नियुक्त कर लिया। सन् १६७७ से आर्यससमाज टाण्डा में रहने लगा। जगह जगह प्रचार के लिए प्रधान जी भेजते थे। बराबर प्रचार में लगा रहता था। विद्यालय का कार्य देखते हुए प्रचार करता रहा।

प्रधान जी की प्रेरणा से आर्य वीर दल का गठन किया। टाण्डा आर्यसमाज में प्रतिदिन ३० से ५० नवयुवक प्रातः आने लगे। उत्सवों पर आर्य वीर दल के नौजवान बड़े उत्साह से भाग लेने लगे।

प्रधान जी के साथ मुझे प्रातःकाल बगीचे तक टहलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रधान जी को आंवला बहुत प्रिय था, मुझे भी आंवला बेल फल देते थे। प्रधान जी को मैंने बहुत निकट से देखा। वह एक संन्यासी की तरह थे। जिस प्रकार संन्यासी का जीवन समाज के लिए समर्पित रहता है, उसी प्रकार प्रधान जी बराबर आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में लगे रहते थे। एक बार मुझे प्रधान जी के साथ दिल्ली शतकुण्डी महायज्ञ में जाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहां पर वे प्रातः ७ बजे से सायं १० बजे तक रामलीला मैदान में रहते थे।उनके साथ रह कर देखा कि बाबू जी में कितना आत्मबल था। एक बेंत हाथ में लिये रहते थे। दिन भर आर्यसमाज के लिए दीवाने बने रहते थे। जिस प्रकार उनका वस्त्र श्वेत था उनका हृदय भी स्वच्छ था। कोई बात कहना होता साफ-साफ कह देते। प्रधान जी के अन्दर आर्यसमाज के कार्य के प्रति इतना उत्साह था कि होली में कई जगह हवन कराते थे। चौक में और अन्यत्र भी। आर्यसमाज टाण्डा के उत्सव में जो विद्वान आते थे, उनको दो-दो की टोली में आर्यसमाज मखदूम नगर, खासपुर, हंसवर, मुबारकपुर,

मुण्डेरा, फूलपुर, बसखारी, किछौछा में उत्सव करवाते थे। उक्त स्थानों पर मैंने कई बार प्रचार किया है। आदरणीय प्रधान जी का प्रयास आर्यसमाज के लिए कितना था, मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता।

प्रधान जी को एक योग्य तथा कुशल मंत्री श्री विज्ञमित्र जी शास्त्री प्राप्त थे, इसलिए और सोने में सुहागा जैसा अच्छा था। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री महानन्द (मिरजापुर), जो लगभग ७५ आर्यसमाजों के संस्थापक थे, के साथ प्रचार के लिए आर्यसमाज खासपुर गया था, वहीं पर एक बालक श्री वीरेन्द्र कुमार मिले थे। आजकल वह टाण्डा आर्य समाज के मंत्री के रूप में हैं। प्रधान जी का जीवन महान एवं आदर्श मय था। प्रधान जी अत्यन्त निर्भीक और साहसी आर्य थे। वे एक नक्षत्र की भांति थे। आज भी उनको टाण्डा का जनमानस याद कर रहा है और करता रहेगा।

●●●

आदर्श पुरुष

–सीताराम आर्य
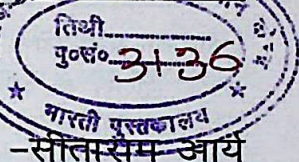
मेरे जीवन में २८ दिसम्बर १९९० का दिन अशुभ एवं बड़ा दुःखदायक है। जीवन पर्यन्त २८ दिसम्बर दुखी करता रहेगा। आर्यसमाज कलकत्ता का वार्षिकोत्सव होने वाला था, उस समय धनसंग्रह में लगा हुआ था। दिन में २ बजे भोजन हेतु हावड़ा निवास स्थान पर गया। भोजन करके विश्राम कर रहा था, टेलीफोन की घंटी बजी। टाण्डा से करतार सिंह ने फोन पर बताया कि बाबू श्री मिश्रीलाल जी का आज प्रातः स्वर्गवास हो गया है। समाचार सुनकर मुझे गोली-सी लगी और आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। धर्मरूपी पिता आज बिछुड़ गये। मन चंचल हो उठा कि कैसे शीघ्र टाण्डा पहुंचूं। हवाई जहाज का कोई साधन नहीं, जम्मू तवी एक्सप्रेस चली गई थी। दून एक्सप्रेस रात को आठ बजे हावड़ा से छूटेगी जो कल शाम तक पहुंचेगी। एक राजधानी एक्सप्रेस है जो कलकत्ता से सायं ४ बजे छूटती है। मैंने अपने अनुज श्रीराम जी से कहा कि तुम लन्दन, सेलम और दिल्ली ओमप्रकाश के पास फोन कर दो। श्री आनन्द कुमार जी जयपुर गये हैं, उन्हें फोन से सूचित करो कि वे तुरन्त टाण्डा पहुंचें और रामलखन बाबू से कहा कि हावड़ा स्टेशन आ जावें। मुझे राजधानी एक्सप्रेस की एक सीट दिलवा देवें। श्री रामलखन बाबू के प्रयास से धनबाद कोटा में एक सीट मिली। मैं शोकाकुल अवस्था में ही चल पड़ा। धनबाद पहुंचकर दिल्ली की सीट बुक कराया और रात में १२ बजे मुगलसराय स्टेशन पर उतर कर एक बजे रात को जम्मू एक्सप्रेस पर बैठकर प्रातःकाल टाण्डा पहुंचा, जहां बाबू मिश्रीलाल जी का शव मिला। बाबूजी की पत्नी, उनके अनुज श्री हीरालाल जी की पत्नी एवं परिवार के सभी सदस्य शोक विह्वल बैठे थे और कभी-कभी रोते और क्रन्दन करते। आर्यसमाज के लोग, हित, मित्र आदि बाबूजी का अन्तिम दर्शन करने के लिए व्याकुल थे। मेरे अनुज श्रीराम आर्य अन्त्येष्टि की तैयारियां कर रहे थे। अन्त्येष्टि हो कैसे क्योंकि बाबू जी के सभी पुत्र बाहर थे। तीन दिन तक बाबूजी का शव बर्फ पर रखा गया था। ३० दिसम्बर को दिन एक बजे शव-यात्रा उनके निवास स्थान से शुरू हुई। मकान जनसमूह से खचाखच भरा

हुआ था सभी लोग बाबू जी के अन्तिम दर्शन के लिए उमड़ पड़े थे। टाण्डा पुलिस के अधिकारी पुलिस की टुकड़ी के साथ मकान के बाहर उपस्थित थे। पुलिस ने बन्दूक को कन्धे से नीचे झुकाकर बाबूजी का अन्तिम अभिवादन किया तत्पश्चात् शवयात्रा आरम्भ हुई। जनता का नारा था-'ओ३म् नाम सत्य है, सत्य बोलो मुक्ति है' इस नारे से आकाश गूंज उठा। तहसीलहार थिरुवा नाला पार करते हुए, चिन्तौरा के पूर्व उनके बगीचे से होते हुए बगीचे क उत्तर ओर सरयू तट पर शव यात्रा समाप्त हुई। सरयू-तट पर ७ फीट लम्बा ४ फीट चौड़ा और ४ फीट गहरा यज्ञकुण्ड बनाया गया। १० मन आम की लकड़ी, चन्दन की चैली जो टाण्डा में मिल पाई, एक बड़ा बस्ता हवन सामग्री २१ किलो देशी घी और ओ३म् लिखित चादर आदि से यज्ञकुण्ड को सजाकर वेदमंत्रों द्वारा बाबू मिश्रीलाल का शव अग्नि को समर्पित कर दिया गया। बाबू जी के पुत्र आनन्द कुमार आर्य एवं समस्त लोग वेदमंत्रों की आहुति देते रहे। धधकती चिता को छोड़कर सरयू नदी में स्नान करके २ बजे सब अपने अपने निवास पर आ गये। अधिक लोगों का स्वर था कि बाबू मिश्रीलाल मर गये, साथ साथ आज टाण्डा का हिन्दुत्व भी मर गया।

मनुष्य की इच्छाएं बलवती होती हैं। यदि इच्छाओं का दमन कर दिया जाय तो कार्य क्षमता कम हो जाती हैं। बाबू जी की इच्छायें प्रबल थीं उनमें कार्य करने की क्षमता भी थी। वे ८८ वर्ष तक कार्यरत रहे। उपनी सेवा में दूसरों का सहारा न लेते हुए समाज की सेवा में लगे थे। उनकी अन्तिम इच्छा आर्यसमाज टाण्डा की शताब्दी मनाना था एवं आर्य कन्या उच्चतर विद्यालय के स्तर को महाविद्यालय में परिवर्तित करने का था। ये दोनों स्वप्न उनके समक्ष साकार न हो सके। किसी भी उच्च विचारक मनुष्य की अन्तिम इच्छाएं अन्य व्यक्तियों के द्वारा ही पूरी होती हैं, क्योंकि उच्च विचारक एक की पूर्ति के पश्चात उससे सन्तुष्ट न होकर अन्य कार्य को अपनाता रहता है। बाबू मिश्रीलाल आर्य सन् १९८९ में अपना संस्मरण (यादें) पं.देवनारायण पाठक से लिखवा रहे थे। यह बात मुझसे कही थी कि अपनी जीवनी लिखा रहा हूं। इस जीवनी को शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित कराऊंगा।

बाबू जी से मेरा परिचय १९३८-३९ में थोड़ा-थोड़ा था। मैं टाण्डा विद्या अध्ययन हेतु जाता था। सन् १९४८-४९ में आर्य कन्या विद्यालय की बाउण्डरी हेतु मुझसे कलकत्ता में मिले, मैंने सहयोग भी

दिया। समय-समय पर विद्यालय की सेवा हेतु मुझे प्रेरित करते रहते थे। मैंने उनका वचन कभी भी अस्वीकार नहीं किया। जब विद्यालय में इण्टर क्लास खोलना चाहा तो उन्होंने एक कमरा बनवाने को कहा। मैंने अपने परम मित्र श्री दुर्गाप्रसार कसौधा छज्जापुर टाण्डा निवासी के द्वारा बनवा दिया जो कि माता श्रीमती गुलाबी देवी और पिता श्री गयादीन के नाम से अभी भी स्थापित है।

चरित्रवान बाबू श्री मिश्रीलाल के चरित्र पर किसी ने उंगली उठाने का साहस कभी भी नहीं किया। चरित्रवान व्यक्ति ही दूसरों के चरित्र की भी रक्षा कर सकता है। विद्यालय की छात्राओं को रास्ते में आते जाते किसी मनचले युवक की छींटाकशी करने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। यदि किसी के प्रति बाबू जी कानों में खबर पहुंचती तो उस उद्दण्ड की खबर जरूर लेते।

बाल्यकाल में अपने पिता स्व.गया प्रसाद आर्य के नेतृत्व में वैदिक संस्कार से पूर्ण परिचित हो गये थे। आर्यसमाज धार्मिक तथा क्रान्तिकारी संस्था है। महर्षि दयानन्द सरस्वती को देश की गुलामी की पीड़ा हमेशा सताती रहती थी। आर्यसमाज के हजारों लोग जेल गये, फाँसी के फन्दे को चूमा। भगत सिंह जैसे योद्धा आर्यसमाज कलकत्ता १९ विधान सरणी में रहकर बम आदि बनाना सीखते थे। उस समय आर्यसमाज कलकत्ता के प्रधान दीपचन्द पोद्दार थे। आर्य युवक हर तरह से क्रान्तिकारियों की सहायता करते थे। अधिकतर आर्य समाजी कांग्रेस में सम्मिलित होकर देश को आजाद करने में लगे थे उसी सन्दर्भ में बाबू मिश्रीलाल आर्य ने भी कांग्रेस में शामिल होकर जेल की कठिन यातनाएं सहन कीं। नाना प्रकार की यातनाएं सहन करते हुए आर्यसमाज की सेवा में लगे रहे। उन्होंने व्यापार आदि को कमजोर होते देखा और सहन किया परन्तु आर्यसमाज की गति को मन्द न होने दिया।

साईं इतना दीजिए जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूं अतिथि न भूखा जाय।।

बाबू मिश्रीलाल जी ने उपरोक्त पंक्ति को चरितार्थ कर दिखाया। उन्हें वैदिकधर्म से विशेष लगाव था, धन सम्पत्ति आदि से कम।

सन् १९७५ में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी दिल्ली के समारोह में टाण्डा और अकबरपुर से अधिक आर्यसमाजी लोग दिल्ली गये। उसमें बाबू राजेन्द्र प्रसाद रामलीला मैदान में पुस्तकों के स्टाल को देख

रहे थे। एक स्टाल पर आर्यमहापुरुषों का चित्र बिक रहा था। मेरी नजर एक ऐसे चित्र पर पड़ी जिस पर लिखा था 'आर्यजगत के २०५ सितारे' गौर से देखने लगा। उन २०५ चित्रों में बाबू मिश्रीलाल आर्य का भी चित्र बना हुआ था। मेरा मन खुशी की तरंगों में लहराने लगा कि हमारे बाबू मिश्रीलाल आर्य की कीर्ति है। आर्यसमाज जैसी पवित्र एवं क्रान्तिकारी संस्था के सदस्यों को याज्ञिक, स्वाध्यायशील, परिश्रमी, त्यागी, परोपकारी, आदर्शवान एवं निःस्वार्थभाव से समाज की सेवा करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्पर्क में आकर अमीचन्द मुंशीराम जैसे पतित व्यक्तियों ने अपना जीवन सुधारकर महान आदर्श स्थापित किया। स्वामी श्रद्धानन्द लिखते हैं कि मैं शराब पीता था, मांस भी खता था और वेश्यागमन करता था। सभी बुराइयों में लिप्त था। मैंने अज्ञानतावश महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रश्न कर दिया कि स्वामी जी आपको कभी काम नहीं सताता? कितना घिनौना प्रश्न था! कहावत है कि 'दाई जाने अपने नाई' बुरा व्यक्ति दूसरों को भला नहीं समझता। महर्षि दयानन्द ने प्रश्न सुनकर मौन की समाधि लगाई। तत्पश्चात उत्तर दिया, मुशीराम मुझे जीवन में काम ने कभी नहीं सताया। आदित्य वाल ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती का नारा था- 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इस उद्घोष को सफल बनाना सभी आर्य समाजियों का परम कर्तव्य है। आर्यसमाज टाण्डा के कार्यक्रम को तीव्रगति से बढ़ाते रहना बाबू मिश्रीलाल आर्य के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

●●●

अन्वर्थनामकः प्रधान

–सुरेश नाथ कपूर

कुछ शब्द, जो समय की धारा के साथ बहुश्रुत होकर अपनी शाश्वत प्रासंगिकता को सिद्ध करते हैं, ऐसा ही एक शब्द है–'प्रधान जी' जो बाबू मिश्रीलाल जी आर्य का पर्यायवाची बन गया, आज भी यह शब्द अपनी सम्पूर्ण सार्थकता को लिये हुए है। समाज सेवा में सबसे आगे, नारी शिक्षा में सबसे आगे, स्वतन्त्रता आन्दोलन में सबसे आगे, दीन दुखियों की सहायता में सबसे आगे, राजनीति में बिना किसी पद के अग्रणी स्थान रखने वाले, आर्यसमाज के प्रधान के रूप में दीर्घकालीन संचालन का श्रेय यदि किसी को जाता है तो ये प्रधान जी ही थें।

एक उच्च व्यापारी कुल में जन्में प्रधान जी को वैभव और लक्ष्मी विरासत में मिली थी। फिर भी उन्होंने अपने पारिवारिक संस्कारों व सामाजिक परिवेश से प्रेरित होकर अल्पवय (२०-२२वर्ष) में ही आर्य समाज का कार्य अपने हाथ में लिया व जीवन पर्यन्त उसके उत्थान, प्रचार, प्रसार व उन्नयन में लगे रहे जिसकी कीर्ति पताका अब उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य के पुष्ट कन्धों पर है। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सस्वती के विचारों से अत्यन्त प्रभावित श्री प्रधान जी नारी शिक्षा के प्रति पर्याप्त प्रयासरत रहे। मात्र मिडिल उत्तीर्ण प्रधान जी शिक्षा के प्रति कितने जागरुक थे इससे कोई भी अनभिज्ञ नहीं है। मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज की यश कीर्ति, शिक्षा के प्रति उनकी निष्ठा, लगन, सम्मान व उत्थान का एक जीवन्त प्रतीक है।

एक समय था जब आर्य समाज देश-सेवा व स्वतंत्रता के कार्य करने का पर्याय था। बड़े-बड़े नेता लाला हंसराज, भाई परमानन्द, स्वामी त्यागानन्द, लाला हरदयाल आदि शीर्ष नेताओं के प्रभामण्डल से प्रभावित प्रधान जी ने देश-सेवा का व्रत लिया। उसी समय महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से वापस आकर स्वतंत्रता आन्दोलन में अपना प्रभाव रखने लगे थे। प्रधान जी महात्मा गांधी से प्रभावित होकर अपने जीवन की अन्तिम घड़ी २८ दिसम्बर १९९० तक खादी को वस्त्र नहीं विचार मानकर धारण किये रहे। खादी की धोती, कुर्ता व टोपी पहने,

छड़ी लिए हुए कृषकाय, दूरदृष्टि सम्पन्न, वैचारिक क्रान्तिके शलाका पुरुष व ओजस्वी वक्ता की जो छवि हमारे मानस में बनती है, वे हमारे प्रधान जी थे।

सार्वजनिक जीवन में मेरे पूज्य बाबा स्व. श्री त्रिलोक नाथ कपूर जी का व्यापक प्रभाव था। उनका सहयोग व मार्गदर्शन श्री प्रधान जी को प्राप्त था। प्रधान जी पूज्य बाबाजी को अपना अग्रज मानते थे। वर्तमान प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य हमारे सहपाठी रहे हैं। इस कारण हमारे मध्य कई पीढ़ियों से पारिवारिक घनिष्ठता चली आ रही है। हम लोगों को आपस में घुलने-मिलने का पर्याप्त अवसर मिलता रहा है। जब टाण्डा में शिक्षा का बिलकुल अभाव था, उस समय सन् १९२५ में हमारे पूज्य बाबाश्री के प्रबन्धकत्व में तथा प्रधान जी, बाबू राम रघुवीर वकील, वृषकेत सिंह तहसीलदार व सम्भ्रान्त नागरिकों की सहायता से होवर्ट इंग्लिश स्कूल की आठवीं तक एक संस्था खुली जो इस समय पोस्टग्रेजुएट कालेज तक पहुंच गई है। इस संस्था के संचालन में श्री प्रधान जी १९२५ से जीवन पर्यन्त प्रबन्ध-समिति के सक्रिय सदस्य रहे। विद्यालय की इतनी प्रगति उन्हीं लोगों के परिश्रम का फल है। टाण्डा शिक्षा समिति के अन्तर्गत संचालित संस्थाओं की प्रवन्ध-समिति में मैं १९६० से प्रधान जी के साथ रहा। वैचारिक मतभिन्नता के बाद भी वे प्रवन्ध-समिति के समर्थन में मत देते रहे। मैंने अपनी बाल्यावस्था से ही उन्हें अपने पूज्य पिता स्व. दादू बाबू के साथ देखा है। उनके सादगीपूर्ण जीवन, बहुआयामी व्यक्तित्व, वैचारिक दृढ़ता, प्रखर मेधा सम्पन्न और दूरदृष्टि वाली छवि का पर्याप्त अनुभव किया है।

१९४४ में आर्य विद्या प्रचार समिति की स्थापना करके बालिकाओं की शिक्षा के निमित्त आर्य कन्या प्राइमरी स्कूल की स्थापना की जिसमें हमारे आवास पर संचालित कन्या पाठशाला भी सम्मिलित कर दी गई। कालान्तर में यही पाठशाला इण्टर कालेज के रूप में हमारे सम्मुख अपनी यशगाथा को ध्वनित कर रहा है। विद्यालय परिसर में ही छात्राओं के लिए हॉस्टल व अध्यापिका निवास इसकी महती गुणवत्ता को प्रदर्शित करता है। विद्यालय की देश-रेख, शिक्षण कार्य, निर्माण कार्य व एक-एक ईंट श्री प्रधान जी की दृष्टि में रहती थी। विद्यालय का परीक्षाफल एवं अनुशासन अपने में सर्वोत्तम रहता रहा है। अच्छे परीक्षाफल के लिए शासन से अनेक वर्षों तक पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। इसकी उन्नति में प्रधानाचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर का अतुलनीय

योगदान रहा। श्रीमती ग्रोवर को भारत सरकार ने विशेष सेवा के लिए १९८५ में पुरस्कार प्रदान किया।

प्रधान जी की रुचि जनता के सभी कामों व सेवा में लगी रही। उन्होंने एक दयानन्द आयुर्वेदिक औषधालय, दयानन्द शिक्षा मन्दिर तथा वानप्रस्थ गुरुकुल की स्थापना व संचालन किया। टाण्डा क्षेत्र में मुबारकपुर, मखदूमनगर, फूलपुर, जहांगीरगंज, बसखारी, रामनगर इत्यादि स्थानों पर आर्यसमाज के प्रचार को व्यवस्थित किया।

प्रधान जी अपने पीछे एक भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं जिसमें तीन पुत्र व दो पुत्रियां हैं। सभी सुव्यवस्थित हैं तथा धर्मानुसार जीवनयापन में व्यस्त हैं। प्रधान जी मधुमेह से पीड़ित थे पर दवा, परहेज, नियमित दिनचर्या, पर्याप्त टहलने से अपने सारे कार्य उत्साह पूर्वक करते रहे। वर्तमान प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य जो मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज के प्रवन्धक तथा टाण्डा शिक्षा समिति के सदस्य हैं, अपने पिता के स्वप्नों को साकार करते हुए विद्यालय को प्रगति की दिशा में बढ़ा रहे हैं।

प्रधान जी की शताब्दी मनाई जा रही है। मैं इस शताब्दी अवसर पर अपनी सम्पूर्ण शुभकामनाएं प्रधान जी के परिवार को व विद्यालय परिवार को प्रेषित करता हूं कि वे सभी सदैव पुष्पित-पल्लवित होते हुए पूर्वजों के यशोगान में कृत-संकल्पित रहें।

श्रद्धापूर्वक शत् शत् नमन!

•••

एक सजग प्रहरी

–आचार्य देवी प्रसाद मिश्र

जुलाई १६३० में जव टाण्डा नौकरी करने आया, तव नमक सत्याग्रह का आन्दोलन चल रहा था। नमक कानून तोड़कर टांडे में जेल जाने वालों में जिस व्यक्ति की सवसे अधिक चर्चा थी वह थे स्व. मिश्रीलाल जी। कच्ची गृहस्थी की परवाह न करके उन्होंने नमक कानून तोड़ा और जेल चले गये।

टांडा में धोवी और चमारों की संख्या अधिक है। दोनों अपनी रोटी कमाने के लिए श्रम और मजदूरी करते थे। इस काम को स्त्री और पुरुष दोनों ही करते हैं। निकट सम्पर्क होने के कारण कभी अपहरण और वलात्कार की अशोभनीय घटनाएं हो जाती थीं। उस समय गिरे हुए लोगों को ऊपर उठाने का काम श्री मिश्रीलाल जी बड़े साहस के साथ करते थे। अपने रोजगार और जीवन की परवाह न करते हुए इस काम में जुट जाते थे।

वे कांग्रेस समर्थक थे लेकिन कांग्रेस की सदस्यता कभी भी ग्रहण नहीं की, कांग्रेस राज वनने पर अपने फायदे की वात भी नहीं सोंची। उनका विचार था कि जिन वातों पर उनका मतभेद था उनको करने के लिए कांग्रेस की सदस्यता आड़े आयेगी।

दो सार्वजनिक काम उन्हें अधिक प्रिय थे- आर्यसमाज का कार्य करना और स्त्री शिक्षा का प्रसार करना। आर्यसमाज के प्रचार में जिस लगन और निष्ठा के साथ काम करते थे उसका उदाहरण मिलना अब कठिन हो गया है। इस क्षेत्र में उनके चले जाने से जो स्थान रिक्त हुआ है वह शायद अब कभी पूरा न होगा। आर्य कन्या पाठशाला को सींच कर एक वड़ी संस्था वना डाला, इस संस्था के बढ़ने का सारा श्रेय उन्हीं को है।

बुराइयों को दूर करने की आग उनके हृदय में सदैव धधकती रहती थी, इसी कारण उनके शब्द कभी कभी कटु और कठोर हो जाते थे।

●●●

साक्षर बनाना जिनका ध्येय था

–ध्रुव जायसवाल

कुछ स्मृतियां या यादें पुरवाई हवा के सुखद झोंकों की तरह आती हैं जो अंतर्मन को आह्लादित करके चली जाती हैं और कुछ स्मृतियां जेठ की तपती दुपहरी की तरह मन में तीक्ष्ण ऊष्मा भर जाती हैं। दोनों प्रकार की स्मृतियों से व्यक्ति कभी मुक्त नहीं हो पाता। कुछ तो हमारे 'जीवित' अनुभवों के झरोखों से गुजर कर आती हैं तो कुछ श्रुतियों के आधार पर व्यक्ति स्मरण करता है। वैसे मैं स्मृतियों को कालखण्ड में रखने का हिमायती नहीं रहा। जैसे किसी महान् या मनीषी व्यक्ति को रजत जयंती वर्ष, स्वर्ण जयंती या हीरक जयंती वर्ष में ही स्मरण किया जाये। यादों का क्या, वे किसी पल या क्षण में भी आ सकती हैं। जब भी मन किसी अतीत से कुरेद उठे, स्मृतियां चहचहाने लगती हैं।

स्व. बाबू मिश्रीलाल जी आर्य जिन्हें लोग प्रायः 'प्रधान जी' ही सम्बोधित करते थे; वे भी बरबस मुझे याद आ जाया करते हैं। उनकी स्मृतियां कुछ पलों तक मानस पटल पर छा जाती हैं। जब भी मेरी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी रसोईधर में भोजन बनाने में जुटी रहती हैं, मैं अन्दर ही अन्दर ग्लानि से भर उठता हूं कि एक विदुषी डबल एम.ए. बी.एड. महिला का मूल्यवान समय धुएं में मिश्रित हो गया। यदि मैं गणित लगाऊं तो लक्ष्मी जी ने जीवन के एक बड़े कालखण्ड को रसोईघर में ही व्यतीत कर दिया। वे अपनी शिक्षा प्रतिभा का सही उपयोग नही कर सकती थीं। मैंने उन्हें उनकी प्रतिभा के सदुपयोग से वंचित रखा। लेकिन उनका भी एक लगाव मुझसे जुड़ा है कि मेरे साहित्य सृजन के समय रसोई में लगे रहना, एक प्रकार से मुझे सहयोग प्रदान करना है। यह विशेषता सिर्फ भारतीय नारियों में ही निहित है। विदेशी महिलाएं अपने को स्वावलम्बी बनाये रखने के लिए, आर्थिक पक्ष को मजबूत बनाये रखने के लिए, आर्थिक कार्यों में लगी रहती हैं।

इसी संदर्भ में प्रधान जी मुझे प्रायः याद आते हैं– जब लक्ष्मी जी रसोईघर में होती हैं और मैं खाने की मेज पर उन्हें खाना परोसते निहारता रहता हूं।

लगभग बीस वर्षों पूर्व प्रधान जी मेरे निवास पर आये। कुछ देर मेरे साहित्य सृजन के बारे में पूछते रहे फिर लक्ष्मी जी को बुलाकर पूछा- ध्रुव बाबू तो साहित्य सृजन में लगे रहते हैं, आप दिन भर क्या करती हैं? वे सहज भाव से मुस्करा कर बोलीं- 'मैं एक. गृहस्थ औरत की तरह खाना-नाश्ता बनाने में लगी रहती हूं।' इस उत्तर को गहराई से सोंचकर मैं अंदर तक हिल गया। जैसे एक व्यर्थता में जीवन गुजार देने के लिए मैं ही जिम्मेदार होऊं। खाना बनाने का काम तो सहायिका भी कर सकती थी। तभी प्रधान जी ने मुस्करा कर कहा- सुना है आप डबल एम.ए. और बी.एड. तक शिक्षित महिला हैं। आपका कार्यक्षेत्र मात्र रसोईघर ही नहीं होना चाहिए। इस छोटे से करवे टाण्डा में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति दयनीय है। आपको शिक्षा देने में भी योगदान देना चाहिए, मुझे याद है, तब मैंने व्यंग्य से कहा था- भगवान राम की अर्द्धांगिनी मां सीता को उनकी सास महारानी कौशल्या जी ने एक विशिष्ट रसोईघर बनवा कर दिया था- ऐसी किवदंती है। आज भी अयोध्या में 'सीता की रसोई' के नाम से विख्यात है। वे बेचारी किसी विद्यालय में शिक्षिका के रूप में शिक्षादान करने नहीं गयी थीं। वे सिर्फ अपने पति परमेश्वर की सेवा में लगी रहती थीं। यहां तक कि राम के वनवास काल में भी उनकी सेवा के लिए वनवास किया, जबकि उन्हें वनवास नहीं दिया गया था। सीता जी चाहतीं तो वे चौदह वर्ष तक अयोध्या में रह कर जनसेवा कर सकती थीं।

प्रधान जी मेरी इस यथार्थपूर्ण टिप्पणी पर चुप हो गये थे। मात्र इतना कहा था- स्त्रियां मात्र सेवा के लिए ही पैदा नहीं हुई हैं। उनका भी कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा है। वे बेचारी अशिक्षित रहकर मात्र सेवा में लगी रहने को वाध्य हैं। वे आर्थिक तौर पर स्वावलम्बी नहीं बन सकती हैं। खैर, ध्रुव, युग में तो तेजी से परिवर्तन आता जा रहा है। महिलाओं का कार्यक्षेत्र वढ़ने लगा है। आप बहू जी के लिये क्या सोचते हैं? इस नगर में एक आर्य कन्या विद्यालय है जिसका मैं प्रबन्धक हूं। यदि आप चाहें तो आप बहूजी को अध्यापन कार्य के लिए भेज सकते हैं। वेतन भी पायेंगी विद्यालय की क्षमता के अनुसार।

तब मैं वामपंथी विचारधारा रखते हुए भी, तत्काल स्वीकृति देने की स्थिति में अपने को तैयार नही कर पा रहा था। मैंने झिझकते हुए कहा था- 'आप यह आदेश लक्ष्मी ज़ी को ही दीजिए। मैं इस पर कोई निर्णय नही ले पाऊंगा।' फिर प्रधान जी ने लक्ष्मी जी से पूछा- 'आपका

क्या निर्णय है?' तब लक्ष्मी जी कुछ देर सोंचने के पश्चात बोलीं– मैं एक परम्परावादी परिवार में हूं। इस चौखट से आजीविका कमाने के लिए बाहर नहीं निकल पाऊंगी।

तब प्रधान जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था– आप दोनों मेरे इस अध्यापक कार्य के प्रस्ताव को आपस में विचार विमर्श करके मुझे सूचित कर दीजिएगा। इतना आप दोनों को जानना चाहिये कि नारियों को लज्जाशील के साथ कर्मशील भी होना चाहिए। वे अब कर्मशील भी बनें, समय और युग तेजी से बदल रहा है। सीता जी के रसोईघर के साथ विद्यादान का घर कब बनेगा, जैसा कि सीता जी के रसोईघर पर ध्रुव बाबू ने गहरा और सार्थक कटाक्ष किया है।

तब के दिन और आज का दिन, जब भी मैं लक्ष्मी जी को रसोईघर में देखता हूं तो मुझे अपने पर भी और उन पर भी ग्लानि होती है कि मैंने उन पर एक व्यर्थता का बोझ लादने को विवश किया है।

अब सोच रहा हूं, कि लक्ष्मी जी चौखट के बाहर निकल कर निरक्षरों को साक्षर बनाने में अपना योगदान दें! प्रधान जी तब हमारी 'पुण्य स्मृति' में रहेंगे।

●●●

जनजागरण के मसीहा

–श्रीमती गुणवती ग्रोवर

जीवन की अनमोल विभूतियों में, तुम भी एक विभूति थे।
जन जागरण की चेतना में, तुम ही एक मसीहा थे।
सरल, सौम्य, गांधी–बाने में, अनोखे गुदड़ी के लाल थे।
कुसमादपि कोमल, वज्रादपि कठोर, देवतुल्य दिव्य,
मिश्री सम मधुर, आर्य! तुम्हीं एक मिश्रीलाल थे।

पुण्य सलिला सरयू तट पर स्थित टाण्डा नगर क्या अपितु पूरे जनपद में विख्यात बाबू मिश्रीलाल जी आर्य 'प्रधान जी' के नाम से प्रसिद्ध थे। वे जीवन से तपस्वी, विद्यामय, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, टाण्डा आर्यसमाज के प्रधान एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं में अग्रणी थे। सादा पहनावा खादी का कुर्ता, धोती, गांधी टोपी एवं हाथ में एक छड़ी यह उनका भव्य भौतिक रूप था। सभी से प्रेमपूर्वक मिलना अहर्निश जन कल्याणरत, मानापमान से विरत आर्य कन्या इण्टर कालेज के सदैव सजग प्रहरी थे। ऐसे कर्मनिष्ठ, अदम्य साहसी, दृढ़प्रतिज्ञ मानव के संरक्षण में जो संस्था पनपी वह मण्डल में अद्वितीय संस्था के रूप में उभरी।

जीवन की क्षणभंगुरता को उन्होंने सूक्ष्मता से अनुभव किया था। समय के साथ कर्मठता ही उनकी गति थी। उच्च लक्ष्य के प्रणेता दिव्य पुरुष ने अपनी मर्यादाओं को कभी नहीं लांघा। परिवार, समाज, राष्ट्र और संजीवन संचेतना उनके पारम्परिक योजनाओं के जीवन्त उदाहरण थे। उनके जीवन के कार्यक्षेत्र राजनैतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक तथा विश्वबन्धुत्व के सम्पर्क सूत्र थे।

सम्पूर्ण जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध सदा राजनीति से रहा है। अंग्रेजों का जमाना था, भारत से अंग्रेजी राज्य को हटाना था। स्वतंत्रता संग्राम में आत्मत्याग की बलि और आर्यधर्म दोनों मार्ग कंटकाकीर्ण थे और यही मार्गदर्शक भी थे। यह उनके युवावस्था का संघर्षमय जीवन था। जीवन के अनुभव का प्रत्येक पहलू उनके लिए अछूता नहीं था। वे जानते थे– 'सर्वपरवंशम् दुखम् सर्वात्मवंशम् सुखम्।' इसी भावना ने

उनको क्रान्तिकारी बना दिया। देशप्रेम की उत्कट अभिलाषा, स्वाभिमान की उच्चाकांक्षा तथा स्वामी दयानन्द जी का सशक्त उद्घोष तथा आर्य धर्म के प्रजातन्त्रवाद ने भारतीय दासत्व को मिटाने की चुनौती थी। ब्रिटिश प्रशासन की दृष्टि में आर्यसमाज सबसे बड़ा शत्रु था। मद्य निषेध आन्दोलन के आरोप में प्रधान जी (बाबू मिश्रीलाल जी) धारा ४ के अन्तर्गत २३ सितम्बर १६३० जेल भेज दिये गए।

उनके अन्दर धार्मिक भावनाएं कूट-कूट कर भरी हुई थीं। उन्हीं के शब्दों में -

'मेरी दृष्टि में राजनीति और धर्म का घनिष्ठ सम्बन्ध है। धर्म के अभाव में राजनीति अंधी है और राजनीति के अभाव में धर्म लंगड़ा है। अतः राष्ट्र को धर्म प्रेरित राजनीति की आवश्यकता है। धर्म का अर्थ है धारणकरने की शक्ति। जिस मान्यता से हमारा वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय उत्थान हो, उस आधार पर राजनीति की नींव होनी चाहिए और उसके द्वारा लोकतांत्रिक व्यवस्था का परिचलन।'

गो-माता पर अत्याचार बन्द न होना, सम्पूर्ण देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी न होना, यह हमारे भारत का दुर्भाग्य होगा। सभी जाति के लोगों के लिए सामान्य विधि व्यवस्था शासन का प्रमुख कर्तव्य होगा।

जहां तक धार्मिक भावनाओं का जीवन से सम्बन्ध है, वे ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त थे, स्वयं को वैदिक संस्कारों के अटूट बंधन में पिरोये हुए थे, दैनिक संध्योपासना तथा यज्ञ करना उनके जीवन का अटूट नियम था जिसकी प्रतिछाया आज भी मेरे शरीर के रोम रोम में व्याप्त है। वस्तुतः आर्यसमाज ही उनका धर्म था। आर्यसमाज न धर्म है न सम्प्रदाय, यह तो वेदानुकूल एक क्रान्ति है, एक आन्दोलन है जिसका मूलस्रोत वेद है। वेद सनातन है। जिस प्रकार सूर्य के अस्त होने पर संसार अंधकार मय हो जाता है उसी प्रकार वेद विमुख होने पर मानव अज्ञान के अंधेरे में लुप्त हो जाता है। तब जन्म होता है अविद्या, अन्याय, हिंसा, अत्याचार एवं विघटनकारी तत्वों का। महर्षि का उद्घोष था- 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् सम्पूर्ण जगत को आर्य यानि श्रेष्ठ बनाओ। आर्यसमाज के दस नियम रूढ़िवादिता एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के प्रकाश स्तम्भ हैं।

टाण्डा में आर्यसमाज की स्थापना को एक सौ दस वर्ष पूरे हो चुके हैं जिसके कर्णधार बाबू मिश्रीलाल जी थे। इसका अपना एक

अलग इतिहास है। इस अवधि में इस समाज द्वारा धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में अद्भुत तथा उल्लेखनीय कार्य सम्पन्न हुए हैं। टाण्डा में आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जो मानव के सर्वांगीण विकास के लिए निरन्तर कार्यरत है। महिलाओं के लिए प्रति रविवार को आर्यसमाज में यज्ञ, सन्ध्या, भजनादि का कार्यक्रम चलता है जिससे नारी जाति जागृत हो, साथ ही साथ परिवार भी सुसंस्कृत तथा वैदिक विचारों से ओत प्रोत हो। आज भी आर्यमहिला समाज उच्च स्तर पर विद्यमान है।

ग्रामीण अंचलों में बसा इस छोटे से टाण्डा नगर में बालिकाओं की शिक्षा को हीन भावना से देखा जाता था। मुस्लिम बच्चियां पर्दे में रहती थीं। क्या करना है पढ़कर उन्हें तो चूल्हे चौके तक ही रहना है। इस अज्ञानता को मिटाने के लिए नारी जागरण की घोर आवश्यकता थी। नारी जागरण की शिक्षा के उत्थान का जो बीड़ा उठाया, सुप्त चेतना को जगाया इसका सम्पूर्ण श्रेय बाबू मिश्रीलाल जी को है। धन्य है वह आदर्श व्यक्तित्व जिसकी पूजा आज भी होती है। टाण्डा में लगभग ६० वर्ष पूर्व कन्याओं के लिए एक पाठशाला की स्थापना हुई थी जो आज इण्टर कालेज के रूप में विद्यमान है। इस संस्था में समस्त जाति की छात्राओं को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार है। आर्यसमाज के सिद्धान्तों, उसके अनुरूप धार्मिक कृत्यों पूर्णरूपेण शैक्षिक स्वरूप नारी में पिरो दिया जाता है। नारी सृष्टि निर्माता है, नारी देश की सुदृढ़ नींव है। सुचरित्र पावनता की शिक्षा सुगृहणी के रूप में आने वाली पीढ़ियों को समाज के सर्वांगीण विकास के लिए जन्म देगी। इस दृढ़ संकल्प के साथ प्रधान जी ने आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना की जो पूरे जनपद फैजाबाद में अपने परीक्षाफल, अनुशासन, प्रशासन की सुव्यवस्था तथा सुन्दर शैक्षणिक वातावरण के लिए विख्यात है। इसका अनुकरण करके पूरे मण्डल में अन्य संस्थाओं को पनपने की प्रेरणा मिल रही है। मैंने एक सेविका के रूप में विद्यालय संचालन किया जिसके परिणाम स्वरूप शैक्षिक सुन्दर प्रशासन हेतु तत्कालीन राष्ट्रपति डा.ज्ञानी जैल सिंह के कर कमलों द्वारा मुझे राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया, इसका मुझे गर्व है। अब इस विद्यालय की बागडोर कुशल प्रशासिका, विदुषी तथा मृदुभाषी कु.वीना वर्मा जी संभाले हुए हैं।

बाबूजी मेरे महान आदर्श एवं सन्मार्गदर्शक थे। उन्होंने पग पग

पर मेरे कन्धों को सहलाया, संघर्षों की आंधियों में मेरी सुप्त ज्ञानचेतना को जगाया, धैर्य बंधाया। प्रशासनिक गतिविधियों की अड़चनों में उलझी विपत्तियों एवं कष्टों से मुक्त कराया। यह क्या कम था? सफलता का सेहरा तो उनके मस्तक पर बंधा था। मैं तो केवल सहायक मात्र थी। टाण्डा तो एक जुलाहों का कस्वा है। अधिकांश जनता मुस्लिम तथा निर्धन वर्ग की थी। तभी प्रधान जी ने मुझे आग्रह से विद्यालय की छात्र संख्या न्यूनतम थी, बढ़ाने के लिए कहा। कतिपय मुस्लिम छात्राएं ठेले से आती जाती थीं। विद्यालयी वातावरण के परिवर्तन स्वरूप तथा छात्राओं के अन्तर में वैदिक धर्म में आस्था, धर्म के भेदभाव से दूर, आदि विचारों से प्रभावित हुईं। विचित्र बात तो यह है कि टाण्डा के जितने घर, उतनी ही छात्राएं विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रही थीं। बच्चों की विचारधारा ने अपने माता-पिता को भी बदल दिया। परिणामतः सारी जनता विद्यालय के प्रति अभिमुख हुई। मुस्लिम जनता का आकर्षण था विद्यालय में उर्दू विषय का खोलना। जूनियर कक्षाओं को उर्दू मैं पढ़ाती थी फिर बाद में एक मुस्लिम शिक्षिका मिल गई। यह सब प्रधान जी का प्रताप था। टाण्डा के पिछड़ेपन के संस्कारों में आधुनिक नवीनता के परिवेश ने भी जनता को प्रभावित किया। प्रधान जी की छत्रछाया में मैंने प्रशासनिक जीवन के २८ वर्ष व्यतीत किये थे। वह लगन, निष्ठा, प्रेम और कष्टकर क्षणों में कर्तव्य परायणता की मधुर आनन्दानुभूति मुझे आज भी नहीं भूलती। प्रधान जी को दो सार्वजनिक कार्य बहुत प्रिय थे- एक आर्यसमाज का प्रचार और दूसरा स्त्री-शिक्षा का प्रसार। वे आजीवन अनेकों शिक्षा संस्थाओं और आर्यसमाज के लिए निःस्वार्थ भाव से सर्वात्मना समर्पित रहे। आर्यसमाज की संस्थाओं के सम्पोषण, संवर्धन तथा उत्थान में तन-मन-धन से सतत् निमग्न रहे।

आज हमारे ऊपर से उस सत्पुरुष का साया उठ गया है इसका मुझे आत्मिक कष्ट है पर उनके आदर्श और सिद्धान्त जीवन के जो अटल नियम थे, वे उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य ने अक्षरशः अपने जीवन में उतारे हैं। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पांत' कहावत चरितार्थ हुई है। उनके उत्तम चारित्रिक गुणों, शील स्वभाव तथा कर्मठता के कारण ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान के रूप में मनोनीत हुए। यह गौरव की बात है। आज प्रधान जी की स्वर्गस्थ आत्मा कितनी तुष्ट हुई होगी कि उनके होनहार पुत्र ने

उनके कार्यों को पूर्ण करते हुए भविष्य में आर्यसमाज के उत्थान तथा प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया।

यद्यपि प्रधान जी हमारें बीच नहीं हैं पर आपने अमरत्व की जो छाप छोड़ गये हैं वह अमिट है। मैं जब अपने अतीत की स्मृतियों में डूब जाती हूं तो एक एक घटना चित्रपट की भांति मेरे हृदय को झकझोर देती है। आर्य कन्या इण्टर कालेज से जुड़ा हुआ मेरे जीवन के २८ वर्षों का इतिहास यद्यपि तपोमय, कंटकाकीर्ण अवश्य था, पर स्वर्णिम था। सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख यह तो क्रम है जीवन का आन्तरिक सुन्दर, सुखद साकार रूप है।

महाराज भर्तृहरि की यह ऋचा प्रधान जी के जीवन में पूर्ण रूपेण चरितार्थ होती है -

मनसि, वचसि काये पुण्य पीयूष पूर्णास्त्रि,
भुवन उपकार श्रेणिभि प्रीणयन्तः।
परगुणा परमाणून्यवंती कृत्यं नित्यं,
निजहृदि विकसन्त सन्ति सन्तः क्रियन्तः।।

●●●

समुज्ज्वल चारित्रिक गुणों के पुंज

–कु. वीना वर्मा

टाण्डा में आर्य कन्या इण्टर कालेज ही अकेली ऐसी संस्था है जिसके प्रवन्धक वाबू मिश्रीलाल आर्य थे, जो प्रधान जी के नाम से विख्यात थे। वे टाण्डा आर्यसमाज के प्रधान भी थे। सौभाग्यवश इस कालेज में मेंरी नियुक्ति सहायक अध्यापिका के पद पर हुई, तदुपरान्त प्रवक्ता के पद पर मैंने शिक्षणकार्य किया। प्रधान जी की सीधी सादी वेशभूषा, तेजस्वी आकृति तथा ओजस्वी वाणी से मैं वहुत अधिक प्रभावित हुई। मुझे ऐसा लगा कि प्रधान जी अत्यन्त ही विद्यामय तथा अनुशासन प्रिय हैं। मेरी कर्मठता, लगन और सत्यनिष्ठा से प्रसन्न होकर उन्होंने मुझे विद्यालय के प्रधानाचार्य के पद का भार दिया। उनके सान्निध्य एवं संरक्षण में रहकर मैंने कुल मिलाकर २० वर्षों तक कार्य किया है, अव भी सेवारत हूं। उनकी वैदिक विचारधारा, पद्धति और सिद्धान्तों से मैं इतनी प्रभावित हुई कि उनके आदर्श व्यक्तित्व और उच्च विचारों ने मेरे जीवन की दिशा ही वदल दी। वे विद्यालय में प्रतिदिन आते, विद्यालय की प्रगति को देखकर वहुत प्रसन्न होते। मैंने उनके संरक्षण में रहकर वहुत कुछ सीखा। विद्यालयीय समस्याओं को बड़े धैर्य और कुशलता से सुलझाने में उनकी ही प्रेरणा काम आती। राष्ट्रीय पर्वों पर छात्राओं तथा अभिभावकों को राष्ट्रीय प्रेम तथ समाज के उद्धार की वात याद दिलाते। उनकी सशक्त वाणी तथा चारित्रिक गुणों की उज्ज्वलता ने ही जनता को विद्यालय की ओर उन्मुख किया। समय की नियमितता तथा कर्म की प्रधानता उनके कठोर नियम थे। इसी नाते वे मेरे प्रेरणास्रोत थे।

आज वे हमलोगों के बीच में नहीं हैं, इसका कष्ट अवश्य है पर उनकी प्रेरणायें आज भी हमारे साथ हैं। उनके जीवनादर्श, परोपकार की भावना और आर्यसमाज के प्रति समर्पित निष्ठा आने वाली युवा पीढ़ी के स्वप्नों को साकार करेगी ऐसा मेरा विश्वास है। महान् युग पुरुष को मेरी भावभीनी श्रद्धांजलि!

•••

मेरे पिता

-राजेन्द्र कुमार आर्य

बाबू जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्यसमाज की सेवा में लगाया। शिक्षा से उन्हें बहुत प्रेम था। आर्य कन्या इण्टर कालेज की स्थापना उन्होंने की और अन्त तक उसके प्रबन्धक रहे। सामाजिक कार्यो एवं जनसेवा कार्यों में उनकी रुचि थी। टाण्डा नगर में उनके कृत्यों को टाण्डावासी कभी भूल नहीं सकते। स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयायी होने के नाते अधिक से अधिक लोगों को आर्यसमाजी बनाने का निरन्तर प्रयास करते रहे और इस कार्य में उन्हें आशातीत सफलता भी मिली थी। आर्यसमाज को ऐसे कुशल निष्ठावान, कार्यकर्ता नेता पर गर्व है।

आप स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व देश के सजग प्रहरी थे। टाण्डा में साम्प्रदायिक एकता के सूत्रधार थे और वहां की जनता उनसे सश्रद्ध प्रेम करती थी और वह भी सबको पुत्र तुल्य मानते थे। उनमें न्याय सच्चाई जैसे गुण कूट-कूट कर भरे थे और उसका पालन वह दृढ़ता से करते थे। आत्मसंयम और दृढ़ प्रतिज्ञा उनके जीवन के मूल आधार थे। वे हमेशा हमलोगों को वैदिक धर्म के अनुसार अपने जीवन को चलाने की उच्च शिक्षा देते थे और पूज्य पिताजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सब परिवार के लोग उनके बताये मार्ग का अनुसरण करते रहें।

●●●

एक पूर्ण व्यक्तित्व

–डा. नरेन्द्र कुमार आर्य

बाबू जी एक सच्चे, तेजस्वी, साहसी, नियमपूर्वक रहने वाले व कठिन–परिश्रम करने वाले व्यक्ति थे। मैंने उनको अपने बचपन से देखा व सुना था। बाबू जी के व्यक्तित्व में गुणों की भरमार थी। वे बड़ी से बड़ी समस्याओं का डटकर पूरी शक्ति से मुकाबला करते थे। ईश्वर में उनकी पूर्ण आस्था थी। सच्ची बात को कहने में बाबू जी कभी पीछे नहीं रहे। अपने पूरे जीवन में उन्होंने मानव जाति की भलाई की। उस बात का ज्वलन्त उदाहरण टाण्डा में आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना व आर्यसमाज टाण्डा का संचालन है। भारत की स्वतंत्रता के लिए बाबूजी को कई बार कारावास भी जाना पड़ा। बाबूजी स्वतन्त्रता संग्राम में कांग्रेस के पक्षपाती थे किन्तु कभी भी कांग्रेस की सदस्यता स्वीकार नहीं की। उन्हें राजनीति में पद से प्रेम नहीं था और इसी कारण से उन्होंने कभी कोई पद ग्रहण नहीं किया। उनका विश्वास शुद्ध राजनीति में था जो कि वर्तमान में सम्भव नहीं था अतः उन्होंने आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार का बीड़ा उठाया और जीवन पर्यन्त उसी में लगे रहे। बाबूजी ने सन् १९२७ में आर्यसमाज टाण्डा का चार्ज लिया था और तबसे निरन्तर उस समाज के प्रधान ही रहे सिर्फ नाम के प्रधान नहीं थे, कर्म से भी प्रधान थे।

आर्यसमाज टाण्डा के ९९वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुझे टाण्डा में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। उस समय अयोध्या कांड से उत्पन्न स्थिति से बाबूजी पूर्ण रूपेण अवगत थे। उस समय उत्तर प्रदेश राज्य में ट्रेन, डाक, तार, टेलीफोन सभी सुविधाएं शून्य के बराबर थीं ऐसी परिस्थिति में विद्वानों को निमंत्रण भेजना व उन लोगों के टाण्डा आने की व्यवस्था करना जटिल कार्य था लेकिन बाबूजी भी हार मानने वाले इन्सान नहीं थे। हर तरह से विपरीत परिस्थितयों के बावजूद वह उत्सव केवल बाबूजी के प्रयास से पूर्ण सफल रहा। आर्यसमाज के उत्सवों में छोटी से बड़ी बात तक में बाबूजी का व्यक्तित्व अवश्य शामिल रहता था तथा छोटे से छोटा व बड़े से बड़ा काम स्वयं करने को तत्पर रहते। उनके जीवन में आलस्य नाम की कोई चीज नहीं थी।

बाबूजी वास्तव में एक जननेता थे।

बाबूजी के जीवन का मुख्य उद्देश्य संसार के मानवों की भलाई करना था उनके अनुसार उसी व्यक्ति का जीवन सफल होता है जोकि संसार के लिए कुछ करे और उन्होंने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सम्पूर्ण जीवन को अर्पित कर रखा था। उनके इस त्यागमय जीवन का ही उदाहरण है टाण्डा में मुसलमान-हिन्दू का प्रेम। टाण्डा में मुसलमान की आबादी अधिक है लेकिन बाबूजी के प्रभाव से कभी भी वहां हिन्दू मुसलिम दंगा नहीं हुआ। बाबूजी की प्रत्युत्पन्न बुद्धि तनाव की स्थिति में बहुत काम आती थी।

बाबूजी अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को भी उच्छी तरह निभाते थे। हम सब भाई बहनों को अच्छा रहन-सहन व अच्छी शिक्षा प्रदान कराने में सदैव सचेष्ट थे। उनका व्यवसायिक जीवन भी उतना ही महत्वपूर्ण था। टाण्डा में कपड़े की आढ़त और उस पर छपाई का कारोबार था। व्यापार के सिलसिले में उन्हें आसाम, नेपाल की यात्रा अधिक करनी पड़ती थी और यातायात की यातनाएं भुगतनी पड़ती थीं। यात्रा से लौटते समय बाहर की अच्छी मिठाइयां तथा अच्छी वस्तुएं अवश्य लाते थे।

मैं २७ मई १९७६ से ब्रिटेन में रह रहा हूं। इस पत्र से अपने जीवन के आखिरी दिनों तक बाबूजी हमेश मुझे पत्र लिखते थे। उनका आखिरी पत्र २२ दिसम्बर १९९० का लिखा हुआ उनके मरणोपरान्त मुझे प्राप्त हुआ। मैं भी बाबूजी को पत्र का उत्तर उसी दिन या उसके दूसरे दिन जरूर लिख देता था। अब मुझे बाबूजी के पत्रों की कमी काफी खलती है।

पिताजी की जन्मशती के अवसर पर 'मिश्रीलाल आर्य : एक प्रेरक व्यक्तित्व' मेरे बड़े भाई श्री आनन्द कुमार जी आर्य के प्रयास से प्रकाशित हो रही है जिससे जन समुदाय को मार्गदर्शन प्राप्त होगा। मैं १९८९ में जब भारत गया था तब बाबूजी से विनती की थी कि आप अपनी जीवन परिचय लिखें और उसी समय उन्होंने वचन दिया था जिसे उन्होंने पूरा किया। मैं पूज्य बाबूजी की स्मृतियों को हमेशा याद रखूंगा और उनके आदर्शों पर अपने जीवन को चलाने का प्रयत्न करूंगा। इन शब्दों के साथ बाबूजी के चरणों में मेरा बार बार नमस्कार।

●●●

एक विशाल वटवृक्ष

-मीना आर्य

जव भी वटवृक्ष के विशल - विराट स्वरूप को देखती हूं बाबू जी याद आ जाते हैं। हां बाबू जी यानी कि मेरे श्वसुर जिन्होंने बहुओं को बहुत ही ज्यादा स्नेह एवं सम्मान दिया। बहुओं के लिए अस्वीकार या आपत्ति जैसा शब्द उनके शव्दकोश में था ही नहीं। कोई भी कार्य हो बाबू जी आगे बढ़कर हमारी हिम्मत बढ़ाते, उत्साहित करते। भले ही परिवार अथवा समाज के लोग आनाकानी करें, कानाफूसी करें, पर वे हमें हमेशा प्रेरित करते रहे।

आंखों से यादों की लड़ियां टपा-टप बरस रही हैं, बाबू जी को याद कर। कई वर्ष बीत गये, बाबू जी की छत्रछाया से बिछुड़े हुए। अभी भी विश्वास नहीं होता, मन नहीं मानता कि वह इस दुनियां में हमारा साथ छोड़ परलोक वासी हो गये हैं। मुझे याद है अन्तिम बार कलकत्ता से जाते समय कहा था- 'बहू, आज आखिरी बार मुझे बेसन की सब्जी बनाकर खिला दो।' यह सुनकर मन को बहुत धक्का लगा था। मैंने कहा भी- 'बाबू जी आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?' पर लगता था जैसे उन्हें अपने अन्तिम समय का पूर्वाभास हो गया था। उस दिन उन्होंने मेरे पिताजी, जो पटना से उनसे मिलने आये थे, को भी साथ खाने पर बैठाते हुए बोले- 'आइये आज तो हम आप एक साथ खाना खा लें, बाद में किस्मत में खाना बदा है या नहीं।' और सचमुच कलकत्ता से जाने के तेरह दिन बाद ही हमें उनकी मृत्यु का समाचार मिला। लगा जैसे कोई पहाड़ टूट पड़ा हो। बाबू जी के बिना टाण्डा और टाण्डा के अपने घर की कल्पना ही नहीं कर सकते थे। टाण्डा पहुंचे तो सारा टाण्डा शोक में डूबा हुआ था। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या गरीब, क्या अमीर, क्या छोटा, क्या बड़ा। उनकी नेकी, उनकी अच्छाइयां जैसे लोगों के हृदयों की फफक और हिचकियों में बंध गयीं थीं। और तो और बुर्का पहने कई औरते अपनी संवेदना प्रकट करने कई कई दिनों तक आती रहीं थीं।

आखिर क्या सम्बन्ध था उन सबका बाबू जी से? क्या लगते थे बाबू जी उनके? बाबू जी तो हमारे थे। पर शायद नहीं। वे पूरे टाण्डा

के बाबू जी थे। हर किसी के दुःख मुसीबत में आड़े वक्त में काम आने वाले। इन्सानियत के रिश्ते से सबको, उन्होंने अपना वना लिया था और वे सबके हो गये थे। कवि इकबाल की ये पंक्तियां बरबस याद आ रही हैं बाबू जी के लिए-

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले
खुदा बन्दे से खुद पूंछे, बता तेरी रज़ा क्या है?

अपनी धुन के पक्के। कथनी के धनी। मन, वचन और कर्म में एक रूप। ऊंची हांकने वाले, ऊंचे और भारी भरकम उपदेशों का झोला लटकाये हजारों मिल जायेंगे लेकिन कथनी की संकरी, मुश्किल राह पर बिरले ही चल पाते हैं। बाबू जी उन बिरलों में से ही थे। कट्टर आर्यसमाजी थे। अन्धविश्वासों, कुरीतियों का उन्होंने डटकर विरोध किया। मानव मात्र की समानता के पक्षधर। अपनी भाषा, अपनी संस्कृति से गहरा लगाव था उन्हें। स्त्री-शिक्षा के पक्के समर्थक थे। दहेज तथा पर्दा-प्रथा के सख्त विरोधी थे। वे जन्मपत्री में नहीं, कर्मपत्री में विश्वास करते थे।

मुझसे पहले मेरी अन्य बहनों की शादी पर्दे में हुयी थी। लेकिन बाबू जी के परिवार में मेरा सम्बन्ध जब हुआ, तो उन्होंने शादी के समय न तो मुझसे पर्दा रखवाया और न ही मेरे माता-पिता से दहेज की मांग की। उनके इस व्यवहार से विवाह के दिन से ही बाबू जी के लिए मेरे हृदय में विशेष श्रद्धा ने अपना स्थान बना लिया। बड़ी पुत्रवधू थी। हमारे यहां श्वसुर अथवा जेठ के बराबर बैठकर खाना खाना अथवा बातचीत करना अदब कायदे के खिलाफ माना जाता है। लेकिन बाबू जी नये आधुनिक विचारों के विचारवान व्यक्ति थे। उन्होंने हमें कभी छोटा अथवा निम्न नहीं समझा। बाबू जी व माता जी हमें बराबर में बैठाकर सलाह मशवरा करते थे। हमारा बहुत ध्यान रखते थे। आमतौर पर बहुओं को इस लायक नहीं समझा जाता कि वे परिवार के मामलों में सलाह दें या दखलन्दाजी करें। लेकिन बाबू जी न केवल हमें सम्मान देते वरन् हमारे विचारों का भी सम्मान करते थे।

वे गांधी टोपी और खादी का कुर्ता पहनते थे। गांधी जी का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। आज की भोगवादी संस्कृति की अन्धी दौड़ से वे बहुत दुःखी थे। देश को आजाद कराने के संग्राम में उन्होंने हिस्सा लिया था और जेल भी गये थे। विदेशी वस्तुओं के त्याग का जो व्रत उन्होंने स्वदेशी आन्दोलन के दौरान लिया था, उसे उन्होंने जीवन

पर्यन्त निभाया। स्वेदशी वस्तुओं का उपयोग ही उन्होंने अपने जीवन में किया। उनकी बहुत इच्छा थी कि सब मिलजुल कर टाण्डा में एक साथ रहें।

गांधीवादी होने के कारण सादगी उनके स्वभाव का अंग बन गयी थी और आर्यसमाजी होने के फलस्वरूप आडम्बर रहित उनका व्यवहार था। वैदिक धर्म और संस्कृति पर उनकी गहरी आस्था थी। कहां तो मेरे पीहर का वह मूर्तिपूजक परिवार और कहां कर्मकाण्डों एवं मूर्तिपूजा का विरोध करने वाला यहां का परिवार। दोनों की आस्थाएं भिन्न, विचार संस्कार अलग। बाबू जी ने धीरे-धीरे वैदिक धर्म से मेरा परिचय कराया। जड़रूढ़ियों, आडम्बर, क्रिया-कांडों की निरर्थकता से साक्षात्कार कराया। उनसे हमने बहुत कुछ सीखा और समझा है।

आर्य कन्या इंटर कालेज की उन्होंने स्थापना की थी और उन्हीं के प्रयासों का परिणाम है आज उस में हर जाति हर धर्म की लगभग तीन हजार लड़कियां ज्ञानार्जन कर रही हैं। वे नारी-शिक्षा के कड़े हिमायती थे।

हम पर जब भी कोई समस्या या दुःख पड़ता, बाबू जी की शरण में चले जाते थे। विश्वास था कि वे हर कठिन घड़ी में रास्ता निकाल ही देंगें। एक बार मेरे पति गंभीर रूप से बीमार पड़े और बम्बई ले जाकर उनका इलाज कराना पड़ा। उस समय अस्वथता के कारण बाबू जी बम्बई न आ सके थे पर उनके पत्र बराबर हिम्मत और सहारा देते रहते थे। ठीक होकर मेरे पति व मैं जब उनके मिलने गये तो उनके आनन्द का पारावार न था। उनके अटूट विश्वास एवं धैर्य ने मेरे पति को नया जीवन दिया।

कुछ वर्ष पूर्व हमारे लायनेस क्लब द्वारा आयोजित कलकत्ता से दार्जिलिंग की सद्भावना पद-यात्रा मे हिस्सा लेने की उन्होंने सहर्ष अनुमति दे दी थी जबकि परिवार के अन्य सदस्य गोरखालैन्ड के आन्दोलन के कारण आपत्ति कर रहे थे। लेकिन बाबू जी ने स्वीकृति ही नहीं वरन् उत्साहित भी किया। बाबू जी का यही उत्साह, ऐसी प्रेरणा मुझे हमेशा सेवा-कार्य करने को प्रेरित करती रहती है। निर्धनों की बस्ती बगुईहट्टी में जहां शिक्षा का कोई साधन नहीं था। मेरी अध्यक्षता कार्यकाल में सन् १९८६ में नवनिर्मित प्राइमरी स्कूल रवीन्द्र पाली अवैतनिक प्राथमिक विद्यालय में एक कक्ष का निर्माण पूज्य बाबू जी के नाम से मेरे द्वारा बनवाया गया। जिसे बाबू जी को देखने का सौभाग्य

प्राप्त हुआ था, देखकर उन्हें आन्तरिक शान्ति मिली थी विशेष कर इसलिए कि गरीबों के लिए उनके हृदय में जो स्थान था उसके अनुरूप यह कार्य हुआ था।

मेरे माता जी व पिता जी के सबसे प्रिय समधी थे बाबू जी। उनके परिवार में भी बाबू जी की मृत्यु से गहरा आघात पहुंचा है। आज बाबू जी के सत्कर्म, उनके दिए गये संस्कार हमारे साथ हैं। अपनी सेवा निष्ठा और समर्पण के बल पर वे आम लोगों से बहुत आगे निकल गये थे। एक ज्योति पीठ बन गये थे। अन्धेरे में राह सुझाने वाली। हमारी आने वाली पीढ़ियां उस महान बाबू जी को कभी विस्मृत न कर पायेगी।

●●●

मेरे पूज्य दादाजी

–अमिताभ आर्य

आर्यसमाज टाण्डा के प्रधान जी थे। मैंने उनमें एक सफल दादा जी का रूप देखा था। वह मुझे बहुत प्यार करते थे और अगर किसी संकट में होता तो वह मेरे संकट को दूर करने में मेरी अपार सहायता करते थे।

मैं छुट्टियां बिताने दादाजी के पास जाता था। वे मुझे रोज प्रातःकाल अपने साथ बगीचा ले जाते और हर रविवार को आर्यसमाज भी ले जाते थे। वे हमेशा ध्यान रखते कि मुझे मेरी पसंद का खाना मिले और मेरे लिये सर्वदा बगीचे से फल और सब्जियां मंगवाते थे।

दादाजी कई बार कलकत्ता आये थे और उन्होंने अन्तिम दिनों में ज्यादा समय हमलोगों के साथ बिताया था। दादाजी रोजाना शाम को विक्टोरिया टहलने जाते थे और मुझे जरूर ले जाते थे। यह सब बातें अभी भी मुझे याद आती हैं। दादाजी जब अस्वस्थ रहने के कारण कलकत्ता अपना इलाज कराने आते थे तो डाक्टर को दिखलाने के बाद तुरन्त ही वापस जाने की बात करने लगते क्योंकि उन्हें टाण्डा और अपने विद्यालय से बहुत प्रेम था और सदैव उसके बारे में चिन्ता करते रहते थे। दादाजी का जीवनान्त टाण्डा में ही हुआ। मेरे लिए यह बहुत दुःख की बात थी कि उस समय मैं उनके पास नहीं था। मगर हम वहां जल्दी पहुंच गये। मैं वास्तव में ईश्वर का बहुत बड़ा आभारी हूं कि उसने मुझे अपने दादाजी के मृत शरीर को उठाने का मौका दिया और उनकी चिता पर आहुति देने का अवसर दिया। मैं उनकी मृत्यु से बहुत दुखी था मगर मैंने सर्वदा उनकी बात याद रखी है कि आदमी को सदैव अपना हृदय मजबूत रखना चाहिए और कभी भी आंसू नहीं बहाना चाहिए।

पूज्य दादाजी की पावन स्मृतियां अब हमें प्रेरणा और उत्साह देने के लिए अवशिष्ट हैं। भगवान से प्रार्थना है वे हमें दादाजी के जीवनादर्शों पर चलने की शक्ति प्रदान करें जिससे हम सब अपने प्यारे दादाजी के मनोनुकूल आदर्श आर्य बन सकें। दादा जी के प्रति यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

●●●

हैं तपःपूत, हैं देवदूत!

–श्रीमती राजकुमारी गुप्ता

हे तपःपूत, हे देवदूत, हे यज्ञज्ञान ज्योतित् प्रकाश! जिन्हें अपने हाथ में कलम थमा कर लिखना सिखाया, उंगली थामकर चलना सिखाया, इस योग्य कहां कि हिमालय जैसे आपके विराट् व्यक्तित्व का गौरवगान कर सके। लेकिन गर्व है इस बात का कि मैं अकिंचन विराट् व्यक्तित्व का एक अणु हूं, ऐसा अणु जिसे आपकी सबसे छोटी पुत्री होने का गौरव प्राप्त हुआ।

मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट
मैं ऋचापूत मैं देवदूत की पुत्री हूं।

अपने ८ दशकों से अधिक की आयु में आपने इस धरित्री को धन्य बना दिया, नहीं तो न जाने कितने लोग इस धरा पर अवतीर्ण होते हैं, असमय काल कवलित हो जाते हैं, और संसार को कुछ दिए विना ही तिरोहित हो जाते हैं लेकिन हे पूज्य पिता! तुमने संसार से जितना लिया उससे अधिक ब्याज समेत वापस कर दिया। महाकाल की सत्ता के पक्षधर! मेरे प्रिय बाबू जी, यह अकिंचन लेख आपकी सेवा में सादर समर्पित है।

मैं अपने पिता की सबसे छोटी पुत्री होने के कारण उनके सान्निध्य में अधिक रही अतः इनकी एक-एक क्रिया एक-एक बात मेरी अनुप्रेरणा का कारण बनी। मानव जीवन में शरीर मन और बुद्धि का अपूर्व संगम है। उसका आदर्श उन्होंने स्थापित किया। जीवन के प्रारम्भिक सफर में उन्हें साधना का पोषक आहार उपलब्ध था, संस्कारिता के बीज मूल रूप में विद्यमान थे, अतः उन्होंने संसार में व्याप्त पाखण्ड, अन्धविश्वास, मिथ्याचार को मिटाकर टाण्डा समाज को आध्यात्मिक चेतना देने का व्रत कुछ इस प्रकार धारण किया–

मैं सविता का स्वर्णिम प्रकाश
प्राणों में बहता हुआ श्वास
जन–जन, अणु–अणु में विद्यमान
चेतनता ही मेरा प्रमाण।

उनकी यह चेतना, चेतनता की प्रेरणा किसी वर्ग विशेष के लिए

नहीं, सम्पूर्ण समाज के लिए थी। यहां तक कि मुस्लिम भाई उनका आदर कुछ और ही अधिक करते थे, इसका कारण था तुलसी जैसी परहिताय भावना, सूर सी भावविमलता और कबीर सा खरापन जो यथार्थ की पथरीली जमीन सा कठोर और चुटीला था। वे वही करते थे जो सही होता, चाहे वह किसी के मन को भाता या नहीं और इसके लिए उन्होंने अपने परिवार को भी कोई महत्व नहीं दिया। कभी कभी उनकी जिद कड़वी भी लगती लेकिन उस जिद का सुपरिणाम देखकर राहत महसूस होती थी।

पूज्य पिताश्री ने हमेशा दूसरों की भलाई में अपनी भलाई का अनुभव किया। यह अलग बात है कि कलंक लगाने में लोगों ने महापुरुषों तक को नहीं छोड़ा, मेरे पिता तो एक समाज सेवी इन्सान थे। सुधार में तो कटुता का विषपान करना ही पड़ता है। एक कवि के शब्दों में -

सुधा बीज बोने से पहले
काल कूट पीना होगा।
पहिन मौत का मुकुट, विश्वहित
मानव को जीना होगा।

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता प्रधान जी ने ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से नारी-शिक्षा को मूर्तरूप दिया। आर्यकन्या इण्टरमीडिएट कालेज की स्थापना करके जिसमें टाण्डा जैसे पिछड़ आबादी वाले क्षेत्र की आर्य ललनाओं को सुशिक्षित होने का अवसर मिला।

आर्थिक सम्पन्नता से ओतप्रोत होते हुए भी उन्हें अर्थलोभ छू तक न गया था। उनके पुत्र व्यापार चलाते रहे, दक्षिण भारत के सेलम की फर्म में उन्होंने झांक कर भी नहीं देखा, क्योंकि उनकी अपनी जन्मस्थली कर्मस्थली टाण्डा से अगाध लगाव था उसे छोड़कर वह जाना पसन्द नहीं करते थे। कभी-कभी अस्वस्थता के कारण उपचार हेतु कलकत्ता जाना पड़ता था तो अकुलाए रहते थे कि कब टाण्डा जाना होगा। आडम्बरहीन, सरल उच्च जीवन के वे हिमायती थे। मुझे याद है, कि एक स्वेटर मेरे छोटे भ्राता ने इंग्लैंड से उन्हें भेजा था- उसे कभी नहीं पहना और कहा कि मैं फिरंगियों की धरती से आयी कोई विदेशी चीज धारण नहीं करूंगा क्योंकि मैं स्वदेशी आन्दोलन में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर चुका हूं। उन्होंने वह स्वेटर नहीं पहना तो नहीं पहना। ऐसे थे वे कट्टर देशभक्त!

कभी कभी अत्यधिक सादगी का पाठ जब वह पढ़ाते तो मैं छोटी होने के नाते कुछ धृष्टता भी कर बैठती और कुछ ज्यादा जबानदराजी भी कर बैठती तो मुझे खूब डांट भी पड़ती थी किन्तु अन्य भाई बहन की अपेक्षा मैं उनसे खुलकर करीब थी और खुलकर बातचीत भी कर लेती थी, वे मेरे बारे में खूब चिन्ता भी करते थे और मेरी नासमझी पर बुरा भी नहीं कहते थे। मुझे भी इतना लगाव था कि मैं अधिक से अधिक टाण्डा में रहूं। उन्होंने पुत्र और पुत्रियों में कभी भेदभाव नहीं किया और यही कारण था कि हम सभी में आत्मबल की प्रधानता थी।

उनकी एक मित्र मण्डली थी जिसमें अधिकांश प्रबुद्ध और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, अनेक संस्मरण उनसे सुनने को मिलते थे जो जीवन के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा देते थे। इनमें से अधिकांश लोग अनेक संस्थाओं से जुड़े हुए थे।

अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक उन्होंने कार्य किया। दूसरों के काम के लिए हमेशा तत्पर रहे यह अलग बात है कि जो काम उनको सटीक नहीं लगा वह उन्होंने न किया हो लेकिन हमेशा लोग उन्हें घेरे रहते थे। शारीरिक अक्षमता के बावजूद भी वे अपनी दैनिक क्रियाएं स्वयं करते। कभी अक्षमता से लड़खड़ा जाते तो हमलोग भले ही सहारा दे दें किन्तु वे आत्मबल के पुतले थे। वे गायत्री संजीवनी को पान करने वाले, आध्यात्मिक नशे में रह कर संसार को महाचेतना से एकाकार कराने का स्वप्न देखते थे।

उनकी इसी भावना के कारण परमपिता ने उनकी हर आकांक्षा पूर्ण की। एक कामना उनकी थी कि आर्य समाज की शताब्दी को शान से सम्पन्न कराने की, वही वे नहीं देख पाये किन्तु ईश्वर ने उन्हें सुयोग्य संतानें दी हैं जिन्होंने उनकी इस कामना को पूर्ण कर दिखाया। अपनी मृत्यु से १० दिन पूर्व ही डाक्टरों के लाख मना करने पर परिवार वालों के बरजोरी वे टाण्डा वापस ही चले आये थे शायद उन्हें अपने महाप्रयाण का आभास मिल गया था। टाण्डा मोह ने उन्हें अपनी सन्तानों से अंतिम क्षणों में काफी दूर कर दिया। परिणामतः उन्हें अपनी चिरनिद्रा में लीन होने के बाद भी हमलोगों को ढाई दिन तक प्रतीक्षा करनी पड़ी, जिसका हम सभी को दुख है।

●●●

मेरे श्रद्धेय दादा जी

–ममता आर्य

जब मैं अपने आदणीय दादा जी के विषय में कुछ पंक्तियां लिखने बैठी हूं तो यह समझ में नहीं आ रहा है कि कहां से शुरू करूं तथा कहां पर अन्त करूं। शायद इस का मूल कारण यह है कि उनके विशाल अस्तित्व का न तो कोई ओर है और न ही कोई छोर। ऐसे मनुष्य इस दुनियां में कम जन्म लेते हैं जो कि भीड़ में पहचाने जाते हों। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे दादा जी की पोती हूं जो न केवल यशस्वी थे वरन् उनका नाम आज भी इज्जत और आदर से लिया जाता है।

जैसे बीज अपना अस्तित्व मिटाकर वृक्ष बनकर एक से अनेक हो जाता है, उसी प्रकार से वह प्राणी जो सब प्राणियों के हित में अपने को मिटा देता है, वह अत्यन्त शक्तिमान हो जाता है। ऐसे थे मेरे पूज्य दादा जी! वह केवल अपने परिवार के बाबू जी नहीं थे, वे तो सारे टाण्डा के बाबू जी थे। कमरे में लोगों का जमघट, राय–मशवरे का दौर तथा चाय पर चाय की फरमाइश– इन सब की याद आज भी मस्तिष्क में तरोताजा है। परन्तु आज वही कमरा सन्नाटे के साये में घिरा हुआ है। वही चारपाई जिसपर उनका दिनरात का बसेरा था, रिक्त पड़ी हुई है, लोगों का तांता अब छंट गया है। शायद यह सभी को अहसास हो गया है कि इस रिक्त स्थान का भरना असम्भव है।

बचपन में हमलोग प्रायः उनके इर्द–गिर्द बैठ कर उनसे कहानियां सुनते थे। राजा रानी या परियों की कहानियां नहीं बल्कि कहानियां थीं देशभक्ति की, आजादी की लड़ाई की तथा अंग्रेजों की क्रूरता एवं अत्याचार की। आजादी की लड़ाई में उन्हें कई बार जेल के चक्कर लगाने पड़े, जहां उनकी भेंट महात्मा गांधी तथा अन्य महान देशभक्तों से हुई। इन दिनों की वे हमेशा गर्व से चर्चा करते थे। उन्हें अंग्रेजों से घृणा थी। फिरंगियों के देश का सामान छूने में भी वे अपना अपमान समझते थे। उन्हें नफरत थी अंग्रेजी दवाइयों से। उनके अन्तिम दिनों में कलकत्ते के डाक्टरों ने उन्हें ढेर सारी अंग्रेजी दवाइयां लिख दी थीं। उन्हें समय से दवाइयां खिलाने की जिम्मेदारी मेरी ही थी और यह उत्तरदायित्व बिलकुल ही आसान नहीं था। हमेशा कहते थे कि ये अंग्रेजी दवाइयां मेरी जान समय से पहले ही ले लेंगी। उन्हें दवाई

खिलाना भी एक समस्या थी। उनकी जिद एवं डांट-फटकार के बावजूद मै। उन्हें दवाइयां खिलाने में सफल हो जाती थी।

उनकी बड़ी कामना थी कि हमलोग प्रतिवर्ष आर्यसमाज के वार्षिक जलसे पर टाण्डा पहुंचें परन्तु स्कूल तथा कालेज के खुले रहने के कारण मैं कभी भी जलसे में नहीं पहुंच सकी। सन १९९१ के शताव्दी समारोह के लिए उन्होंने एक वर्ष पहले से ही कह रखा था कि तुमको इसमें भाग लेने के लिए टाण्डा आना ही पड़ेगा। मुझे क्या पता था कि मुझे बुलाने वाला ही दुनियां से बुला लिया जायेगा। शताब्दी समारोह धूमधाम से हुआ बस वे नहीं थे।

उनकी याद में आज भी आंसू निकल आते हैं। उनके प्रति मेरी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि मैं उनके बताये मार्ग को अपना सकूं। हे ईश्वर! मुझे इतनी शक्ति दो कि मैं अपने दादा जी की पोती बन कर दिखा सकूं, उनकी भावनाओं के अनुकूल महान एवं कर्तव्यनिष्ठ बन सकूं। मेरे देव तुल्य श्रद्धास्पद दादा जी को मेरा शत शत नमन!

●●●

पूज्य मामा जी

–मनोहर लाल वर्मा

पूज्य मामा जी स्व. मिश्रीलाल जी आर्य के दर्शन पहली बार गोण्डा जेल में जब मेरी आयु १०–११ साल की थी, हुए थे। उनको असहयोग आन्दोलन में सजा हुई थी और वह फैजाबाद जेल से बदल कर गोण्डा जेल आ गये थे। लगभग १५ वर्ष की आयु में मैं भी नमक कानून तोड़ने के कारण जेल गया था और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हो गया।

मामा जी ने मेरी शादी अपनी भांजी के साथ कर दी थी, जिससे मुझे उनके विशेष निकट होने के अवसर मिलते रहे। मामा जी कितने सादगी पसन्द थे, यह उनकी वेशभूषा से ही अनुमान लग जाता था। बहुत सस्ते और मोटे खादी के वस्त्रों का प्रयोग करते थे। मामा जी मुझे सदैव खादी मसलिन की ही धोती देते थे क्योंकि मैं बढ़िया खादी पहनता था। हर बात का कितना ध्यान रखते थे। भोजन बहुत सादा और शुद्धता का ध्यान रखते थे। गौ दुग्ध दही घृत ही इस्तेमाल करते थे। अतिथि सत्कार में जो प्रेम वह सबके साथ करते थे। उनका जीवन सेवाभाव से परिपूर्ण था।

●●●

मेरे सर्वस्व

-राम बहोर मौर्य

पूज्य बाबू जी का मेरे पिता जी से अच्छा खासा परिचय था। मेरे बड़े भाई श्री रामकिशोर जी बार्बू जी की दुकान के मुनीम थे। मेरे भाई साहब पर परिवार के लोगों को बहुत विश्वास था, बाबू जी उन्हें बहुत मानते थे। जुलाई १९५३ में जब मैं टाण्डा पढ़ने आया तो बाबू जी के मकान में जहां भाई साहब रहते थे, रहने लगा और वहीं से मैं उनके सन्निकट आता गया। वर्ष १९५७ में इण्टरमीडिएट पास करने के बाद तुरन्त बाबू जी ने मेरी नियुक्ति अपने विद्यालय आर्य कन्या इण्टर कालेज टाण्डा में पुस्तकाध्यक्ष पद पर कर दी। मैं बड़ी लगन और परिश्रम से विद्यालय का कार्य करने लगा और वहीं से उनके सन्निकट आता गया। १९६४ में मेरे कार्यों से प्रसन्न हो बाबू जी ने मेरी पदोन्नति करके मुझे प्रधान लिपिक नियुक्त कर दिया।

बाबू जी की प्रेरणा से मैं शुरू से ही आर्यसमाज जाया करता था। मेरे कार्यों एवं लगन को देखकर मुझे आर्यसमाज टाण्डा का सदस्य बना लिया। मैंने टाण्डा आर्यसमाज में पुस्तकाध्यक्ष और लेखा परीक्षक के पद पर भी कार्य किया है। विद्यालय में कार्याधिक्य के कारण मैं आर्यसमाज में समय कम दे पाता था इसलिए पद से हट गया। बाबू जी की कृपा मेरे ऊपर विशेष रूप से थी। वे मेरे ऊपर पूरा विश्वास करते थे और हमेशा पिता तुल्य प्यार दिया। मेरा सौभाग्य है कि मैं एक ऐसा था, जो उनके जीवन के अन्तिम क्षण में उनके पास था।

पूज्य बाबू जी एक सच्चे राष्ट्रप्रेमी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, दृढ़ प्रतिज्ञ, न्यायप्रिय एवं ईमानदार व्यक्ति थे। 'सादा जीवन उच्च विचार' उनके जीवन का ध्येय था। वे हमेशा खादी की धोती तथा कुर्ता पहनते थे। वे इस विद्यालय आर्य कन्या पाठशाला के संस्थापक एवं प्रबंधक थे जिसे अब 'मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज टाण्डा' के नाम से जाना जा रहा है।

बाबू जी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ बड़ा सहयोग तथा सहृदयता का व्यवहार करते थे। विद्यालयीय कार्यों में विद्यालय की

तत्कालीन प्रधानाचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर, जो राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करके सेवा निवृत्त हुई हैं, बाबू जी का बड़ा सहयोग करती थीं। दोनो अधिकारियों के सहयोग से विद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति करता रहा और फैजाबाद मंडल में अग्रणी रहा। बाबू जी के हृदय में किसी प्रकार का जातीय या धार्मिक भेदभाव नहीं था। टाण्डा के हिन्दू मुसलमान सिक्ख सभी उन्हें समान रूप से मानते थे। वे सर्वप्रिय व्यक्ति थे। वे सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझते थे। सभी उनपर पूरा विश्वास एवं भरोसा रखते थे। आज बाबू जी इस संसार में नहीं हैं परन्तु उनके द्वारा किये गये कार्य एवं उनकी स्थापित की गई संस्था उनका बराबर स्मरण कराती रहेगी। वे आज भी आपने कार्यों से टाण्डा में अमर हैं।

माता पिता ने मुझे जन्म दिया परन्तु बाबू जी ने जीवन प्रदान किया।

●●●

वर्तमान प्रधानाचार्या सुश्री वीना वर्मा
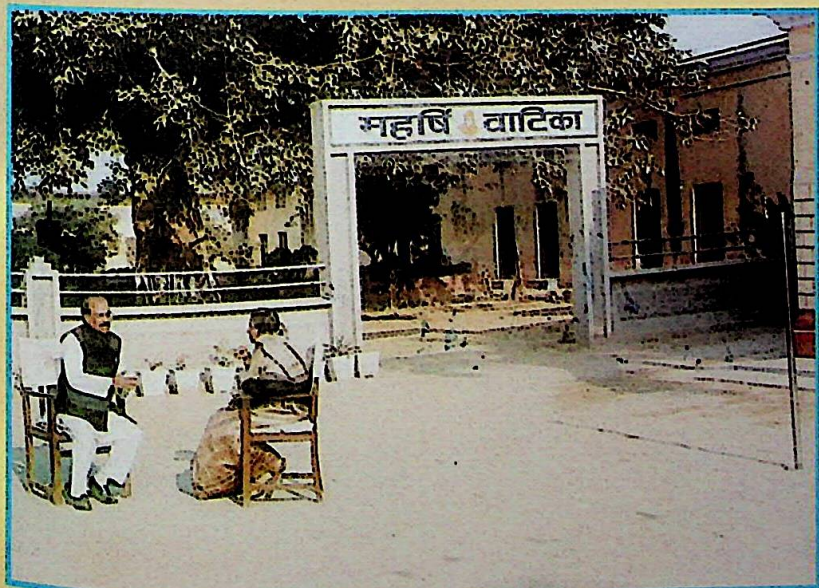
श्री आनन्द कुमार (प्रबन्धक) विचार विमर्श रत
आर्य कन्या इंटर कालेज में निर्मित
'महर्षि वाटिका' के द्वार पर
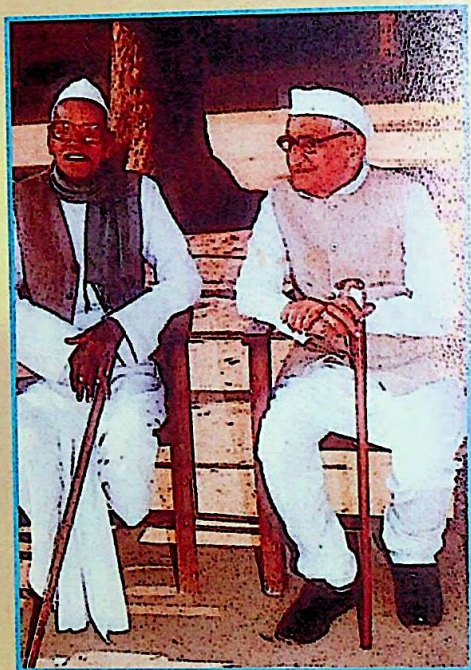
बाबू मिश्रीलाल जी, श्री सुरेन्द्रनाथ कपूर (दादूबाबू)
के साथ प्रसन्न मुद्रा में
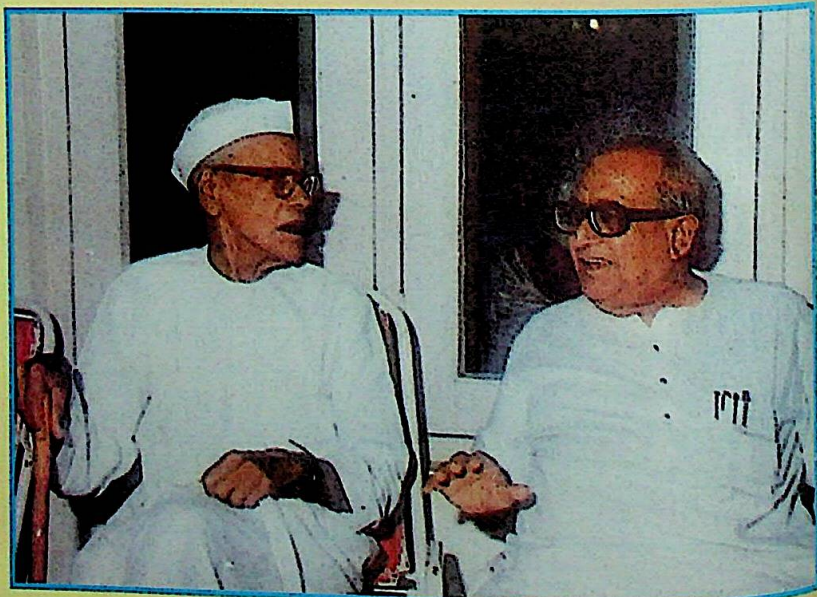
बाबू जी, श्री यतिन चक्रवर्ती, मंत्री–प.बंगाल
(1987) के साथ
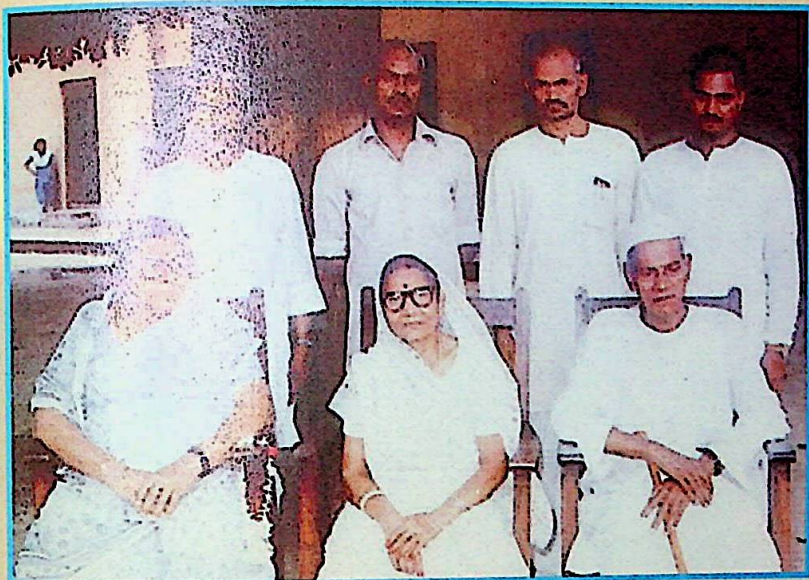
श्रीमती गुणवती ग्रोवर,, श्रीमती रामप्यारी देवी
एवं बाबू मिश्रीलाल जी, रामबहोर मौर्य,
त्रियुगीनारायण पाठक, रामसूरत मौर्य

पुरस्कार वितरण के एक अवसर पर बाबू मिश्रीलाल जी,
तत्कालीन मण्डलीय बालिका विद्यालय निरीक्षिका के साथ
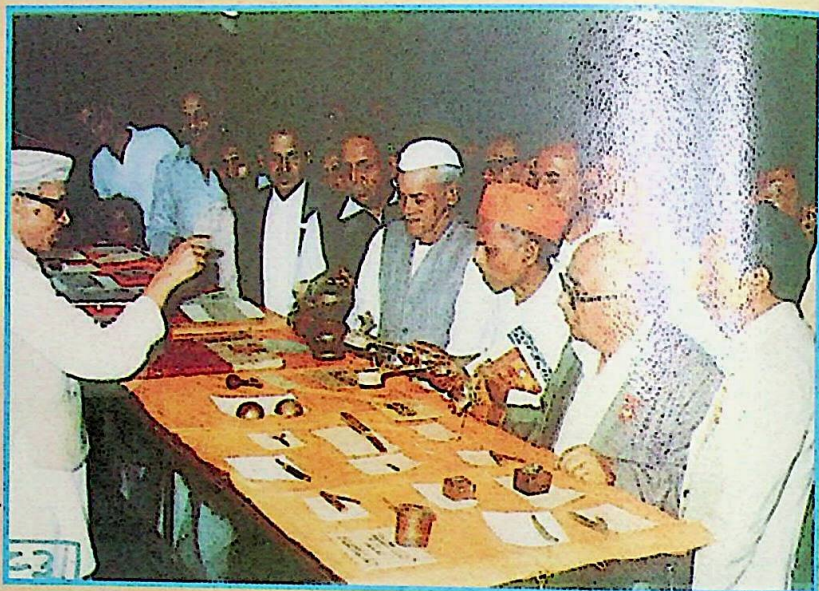
आर्यसमाज कलकत्ता शताब्दी समारोह (1985) के
अवसर पर प्रदर्शनी में महर्षि दयानन्द सरस्वती
की वस्तुओं का निरीक्षण करते हुए बाबूजी
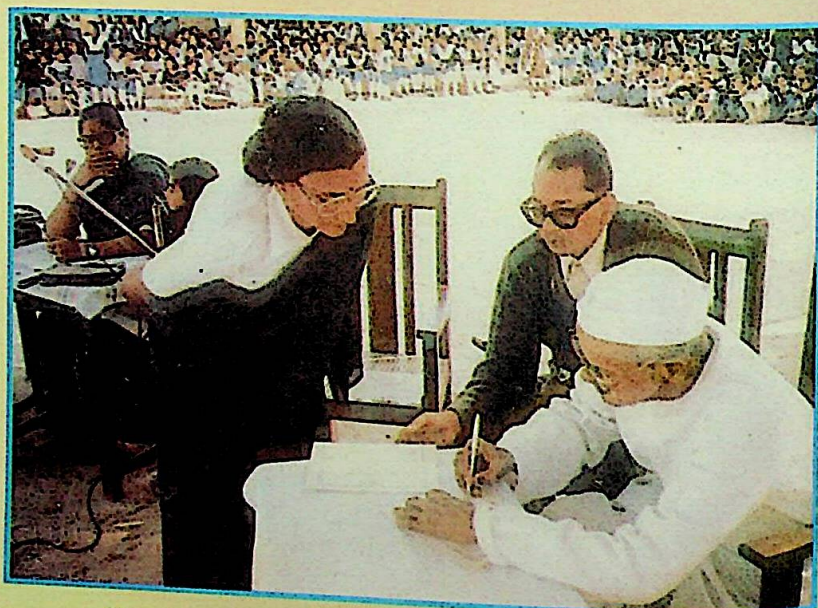
विद्यालय में आयोजित गाइड–शिविर के प्रमाण–पत्रों पर
हस्ताक्षर करते हुए बाबू जी साथ में प्रधानाचार्या कु.वीना वर्मा
तथा विद्यालय कमटी के प्रतिष्ठित सदस्य श्री पुरुषोत्तम दास खेमानी

श्रीमती शोभा श्रीवास्तव को 'शिक्षक–दिवस' पर सम्मानित करती हुई श्रीमती मीना आर्य (धर्मपत्नी श्री आनन्द कुमार आर्य)
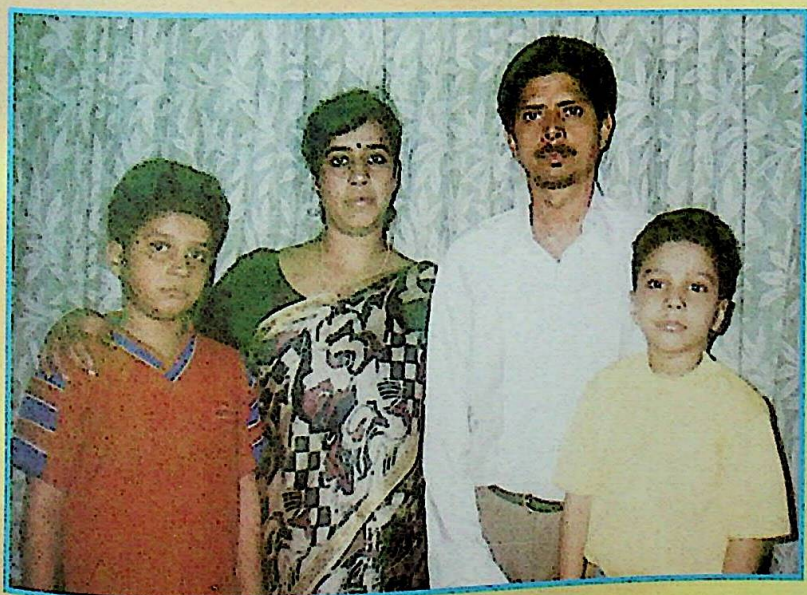
डा. हनुमन्तलाल जायसवाल तथा श्रीमती ममता जायसवाल (पुत्री श्री आनन्द कुमार) व उनके पुत्र हरिदश्व एवं कौस्तुभ

शिक्षक–दिवस पर प्रधानाचार्या कु. वीना वर्मा को सम्मानित करती हुई माताजी श्रीमती रामप्यारी देवी
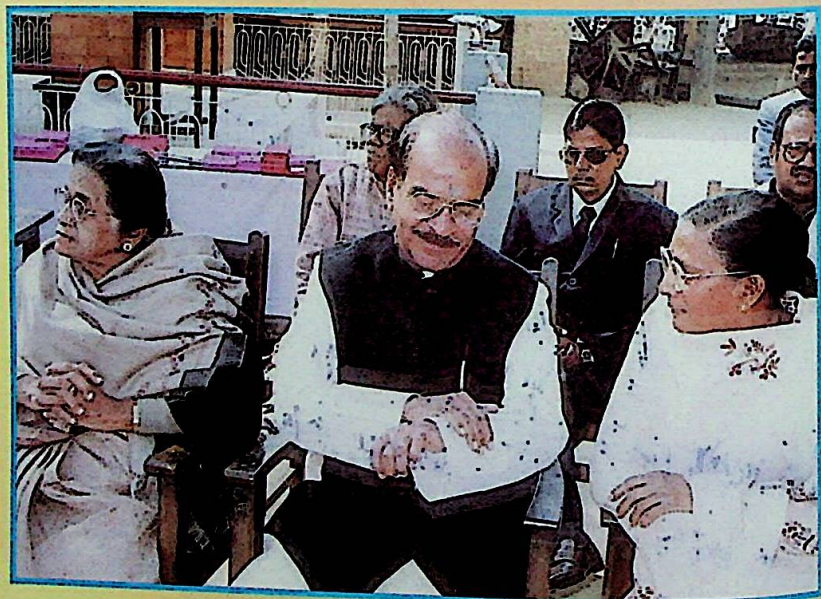
श्रीमती गुणवती ग्रोवर, आनन्द कुमार आर्य एवं कु.वीना वर्मा

टाण्डा नगर के मसीहा बाबू मिश्रीलाल आर्य नागरिकों की जनसभा में हिन्दू –मुस्लिम का भाईचारे का बोध कराते हुए
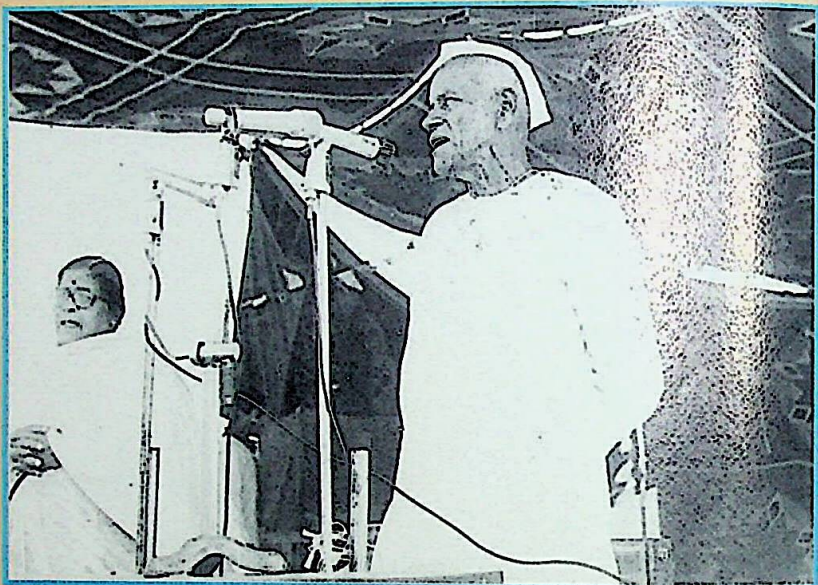
बाबूजी की दो मुद्रायें
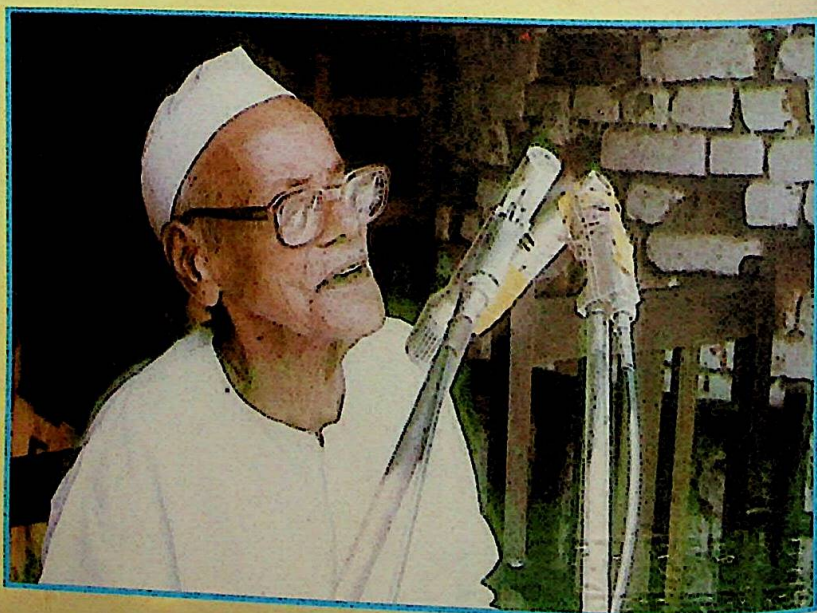
सम्मति

सम्मतियां

आर्यसमाज टाण्डा जीता जागता समाज है। यहां के अधिकारी, सदस्य और जनता जागरुक है। महिला कालिज एक रोशनी है जिसमें मुसलिम लड़कियां भी पढ़ती हैं। मुसलमानों, अन्यों, हिन्दुओं को आर्यसमाज पर पूर्ण विश्वास है। पूज्य बाबू मिश्रीलाल जी इस समाज के प्राण और जीवन दाता के रूप में हैं। माननीय मंत्री विज्ञमित्र शास्त्री जी अच्छे विद्वान सदाचार से विभूषित तथा आर्य सभासद और आर्यजन सभी जागरूक हैं। नगर और इलाके पर प्रभाव का कारण यही है। निर्भय समाज ही वैदिक धर्म का प्रचार कर सकता है। यह शुभ गुण भी बहुत है तभी तो प्रतिवर्ष शंकासमाधान और शास्त्रार्थ होता है जिससे नगर को वैदिक सिद्धान्तों का प्रसादरूप भोजन मिलता है।

परमात्मा इससे भी अधिक शक्ति दे और जन हन तक वैदिक धर्म की आवाज पहुंचे।

मई, 1985

शान्तिप्रकाश आर्योपदेशक
(शास्त्रार्थ महारथी)
गुणगांव, हरियाणा

•••

आर्यसमाज टाण्डा उत्तर भारत का एक सक्रिय समाज है। औद्योगिक क्षेत्र होने के कारण यहां सभी वर्ग को लोग रहते हैं, ऐसी नगरी में इस संस्था के तत्वावधान में चल रहा कन्या विद्यालय यहां की शोभा है, जहां सहस्रो हिन्दू, मूस्लिम पुत्रियां साथ साथ अत्यंत सौहार्दपूर्ण वातावरण में पढ़ती हैं, साथ ही इसमें धर्म शिक्षा का कार्यक्रम इसकी विशेषता है। श्री मिश्रीलाल जी आर्य एक कर्मठ आर्य कार्यकर्ता इसके संचालक एवं प्रबंधक हैं। वर्तमान मंत्री जी (श्री विज्ञमित्र शास्त्री) जो विगत कई वर्षों से इसे चलाते हैं, एक उत्साही एवं सदाचारी युवक हैं।

प्रभु इन दोनों कार्यकर्ताओं को शक्ति, साहस एवं धैर्य प्रदान करे जिससे भविष्य में भी यह कार्य पूर्व की भांति अपने गौरवपूर्ण पद का निर्वाह कर सकें।

महात्मा आर्यभिक्षु
विद्यावाचस्पति (डी.लिट.)
सम्पादक 'आर्य गजट' दिल्ली
1985

आर्यभिक्षु
आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर
हरिद्वार–उ.प्र.

•••

ओड़ीसा प्रान्त से आकर आर्यसमाज टाण्डा के दैनिक सत्संग में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस समाज में उत्साही कार्यकर्ता हैं, उनमें श्रद्धा और दृढ़ विश्वास है। प्रभु से प्रार्थना है कि इस समाज तथा समाजियों को उन्नति के मार्ग में प्रेरित करे। मुझे आशा है समाज के कार्यकर्ता संगठन सूक्त को आधार करके आगे बढ़ेंगे तो वैदिक धर्म प्रचार में आशा के अनुरूप सफलता मिलेगी। इत्योम्।

दि. 10.02.1985

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती
संस्थापक–गुरुकुल पानपोस,
राउरकेला, उड़ीसा

•••

श्री पं. विज्ञमित्र जी गुरुकुल अयोध्या के योग्य स्नातकों में हैं। आपका जीवन सरल शुद्ध आचरण संस्कृत निष्ठ है। आर्यसमाज के श्रेष्ठ सेवारत मन्त्रीपद को श्री बाबू मिश्रीलाल की छत्रछाया में निरन्त निभा रहे हैं। आप सुन्दर सुयोग्य वक्ता लेखक संस्कृतज्ञ है। बराबर बहुत सी समाजों में जाकर प्रचाररत रहते हैं। आप स्वाध्यायरत रहते हैं। अध्यापक होते हुए टाण्डा समाज की सेवा करते रहते हैं। भगवान इनको चिरायु करे जिससे वैदिक धर्म की सेवा करते रहें। परिवार भी आर्य है।

दि. 05.11.1987

सत्यमित्र शास्त्री 'वेदतीर्थ'
शास्त्रार्थ महारथी

•••

मैं आर्यसमाज टाण्डा में विगत तीन वर्षों से वार्षिकोत्सव में आ रहा हूं। यह समाज एक आदर्श आर्यसमाज है। इससे जुड़ी हुई एक संस्था आर्य कन्या इण्टर कालेज का यश दूर दूर तक फैला हुआ है।

छात्राओं में आर्य सिद्धान्तों का ज्ञान और उसमें रुचि, अनुशासन, परीक्षा परिणाम सभी कुछ श्लाघनीय है। इन छात्राओं में मुस्लिम परिवार की कन्याओं की भी प्रभूत संख्या है। आर्यसमाज टाण्डा का प्रमुख कार्य वैदिक धर्म का प्रचार करना है और इसके लिए ये व्यवस्थित और सुचारुरूप से सभी कार्य करते हैं। इस आर्यसमाज के प्रधान श्री मिश्रीलाल आर्य तथा मंत्री श्री विज्ञमित्र शास्त्री का इस कार्य में अत्यंत सहयोग रहता है। प्रधान जी तो इस समाज और कन्या विद्यालय के प्राण हैं। मैं चाहता हूं कि इस आर्यसमाज और विद्यालय का भविष्य सदा ही अतीत के समान स्वर्णिम रहे।

नवम्बर, 1987

ज्वलंत कुमार शास्त्री
संस्कृत विभागाध्यक्ष
राजा रणवीर रणंजय महाविद्यालय, अमेठी

•••

यह आर्यसमाज टांडा है। इसकी यशः सुगन्धि को मैंने पूर्व से सुन रखा था, जिससे लालायित होकर इसे निकट से देखना चाहता था। अतः आज से बहुत वर्ष पूर्व स्वेच्छया अनाहूत रूप में मैं इस समाज के वार्षिकोत्सव पर पहुंचा और परमहर्ष का विषय है कि जितन. मैंने सुन रखा था उससे कई गुना अधिक इस समाज को संगठित, संयमित, श्रद्धा से पूरित तथा जागृत पाया। उस समय आर्यसमाज टाण्डा के प्राण स्व. मिश्रीलाल जी प्रधान तथा गुरुकुल अयोध्या के स्नातक श्री विज्ञमित्र शास्त्री मंत्रीपद को सुशोभित कर रहे थे। सम्प्रति श्री बाबू मिश्रीलाल जी की शुभ छाया नहीं रही पर हर्ष का विषय है कि आज भी विज्ञमित्र जी शास्त्री की सेवाओं से आर्यसमाज टाण्डा लाभान्वित हो रहा है।

मुझे तब से अनेक बार टाण्डा आते हो गया पर मेरी दृष्टि में आर्यसमाज टांडा की उत्तरोत्तर श्री वृद्धि ही हो रही है। इस समाज का प्रत्येक सदस्य जागरूक है, प्रत्येक के हृदय में आर्यसमाज तथा वैदिक सिद्धान्त और उसकी संस्कृति में श्रद्धा है। यहां का कन्या विद्यालय सम्प्रति श्री मिश्रीलाल महाविद्यालय है। इसमें वैचित्र्य है कि मुस्लिम कन्याओं की संख्या पर्याप्त है जो आर्यसमाज के प्रत्येक कार्य में योगदान करती हैं, सबके साथ यज्ञ में सम्मिलित होती हैं, संस्कृत सम्मेलन में भाग ले दक्षता के साथ संस्कृत में भाषण करती हैं, यह वर्ग विद्वेष समापन का एक जाज्वल्यमान उदाहरण है। एक मुस्लिम अभिभावक ने

मुझे बताया कि हमलोग अपने मदरसों के मुकाबिले अपनी लड़कियों को बाबू मिश्रीलाल के मदरसे में ज्यादा महफूज पाते हैं। यह आर्यसमाज की गरिमा का एक ज्वलन्त उदाहरण है। सम्प्रति स्वर्गीय बाबू जी के सुपुत्र श्री आनन्द बाबू समाज के प्रधान हैं। निःसन्देह उनके प्रधानत्व में आर्यसमाज टाण्डा की और भी श्रीवृद्धि हुई है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आर्यसमाज टाण्डा के सभी सदस्य अपने स्वाध्याय, श्रद्धा, सेवाभाव और कर्तव्यपालन के द्वारा आर्यसमाज टांडा की महती गरिमा में चार चांद लगायेंगे और अपने परिश्रम तथा सहयोंग से आर्यसमाज टांडा के द्वारा वैदिक धर्म प्रचार में कीर्तिमान स्थापित करेंगे। मैं हृदय से यहां के आर्य सज्जनों तथा आर्य महिलाओं की सहयोग भावना व पारस्परिक प्रेम की सराहना करना अपना कर्तव्य समझता हूं।

दि. 12.11.1997

सूर्यबली पाण्डे, वैदिक विद्वान
स्वतंत्रता सेनानी, जौनपुर, उ.प्र.

•••

आर्यसमाज टाण्डा के वार्षिकोत्सव पर आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसमें सन्देह नहीं के यह समाज सशक्त तथा जाग्रत समाज है। सारे क्षेत्र में समाज से सुप्रभाव आश्चर्यजनक है। बाबू मिश्रीलाल जी का व्यक्तित्व तथा तपस्वी जीवन नगर पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। साथ ही श्री विज्ञमित्र शास्त्री जी की विद्वता एवं नम्रता संगठन को विशेष शक्ति प्रदान करती है।

यहां का शंकासमाधान कार्यक्रम और समाजों के लिए आदर्श हैं ईश्वर समाज को सामाजिक तथा राष्ट्रीय कर्तव्य पालन में अधिक सामर्थ्य प्रदान करे, ऐसी प्रार्थना है।

दि. 05.12.1990

उत्तमचन्द्र शरर
पानीपत

•••

श्री आनन्द कुमार जी आर्यसमाज के प्रधान और मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कालेज टाण्डा के प्रबन्धक हैं। श्री विज्ञमित्र शास्त्री आर्यसमाज के मंत्री है। आर्य समाज और मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कालेज का अस्तित्व पृथक् पृथक् है।

कालेज महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों के अनुरूप ही संचालित

है। जिसमें सभी धर्मों की कन्याएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। छात्रावास भी है। गुरुकुलीय पद्धति दृष्टिगोचर होती है, वैसे शिक्षा पद्धति आधुनिक ही है।

कहना न होगा–संचालित शिक्षण संस्था अन्य आर्य शिक्षण संस्थाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इसका श्रेय प्रवंधक जी एवं कालिज की प्राचार्या कु. वीना वर्मा जी तथा अध्यापिकाओं को जाता है। मेरी हार्दिक कामना है कि आर्यसमाज तथा कालिज वैदिक भावनाओं एवं सिद्धान्तों को मूर्तरूप देने में सक्षम हो।

दि. 23.11.1999 *नेत्रपाल शास्त्री (काशमीर)*

आर्यसमाज दीवानहाल, चांदनीचौक, नईदिल्ली

•••

आर्यसमाज टाण्डा के अनेक वार्षिकोत्सवों पर आने का अवसर मिला है। शताव्दी समारोह के बाद इस वर्ष के वार्षिकोत्वस में आने पर कुछ अच्छा अनुभव हुआ। इस आर्यसमाज की कार्यप्रवृत्ति एवं प्रचार से प्रभावित होकर निकटस्थ समाजों के कार्यकर्ता एवं सदस्य यहां आकर जो प्रेरणा एवं अपने यहां जाकर प्रचार करने की भावना को अन्तःकरण में धारण करके जाते हैं, वह श्लाघनीय है।

इस समाज की प्रगति एवं आर्य कन्या इन्टर कालेज के विकास में वाबू मिश्रीलाल जी एवं उनके पुत्र श्री आनन्द कुमार जी का जो योगदान है वह अत्यंत प्रशंसनीय है। टाण्डा आर्यसमाज की ख्याति, यहां के हिन्दू–मुस्लिम छात्राओं की एकता एवं इंटर कालेज में बहुतायत में उनकी शिक्षा के कारण अत्यन्त चर्चाकी बात रही है।

यहां के वर्षों तक निष्ठापूर्वक मंत्री के रूप में कार्य करने एवं व्यक्तिगत रूप से हमारे निकट गुरुकुल के वरिष्ठ छात्र एवं अध्यापक के रूप में भी स्नेह मित्रता एवं सौजन्य की भावना के कारण श्री विश्वमित्र जी के प्रति मेरे मन में एक विशिष्ट स्थान बन गया है। इसी कारण यहां आने में भौगोलिक कष्ट के कारण भी आना सुखद लगता है तथा ४–५ वर्षों के अन्तराल के बाद आना हो जाता है।

मैं यहां के सभी सदस्यों के प्रति अपनी सद्भावना एवं इन्टर कालिज की अध्यापिकाओं के प्रति उनकी निष्ठा की सराहना करता हूं।

दि. 21.11.1999 *प्रशस्यमित्र शास्त्री महोपदेशक*

बी–29, आनन्द नगर, रायबरेली, उ.प्र.

•••

आर्यसमाज टाण्डा के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होकर अत्यन्त आनन्द आया। प्रधान जी, महाशय आनन्द आर्य ने व्यक्तिगत देखरेख की, सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखा। माताजी खाने की स्वयं देखरेख करती रहीं। मंत्री श्री विज्ञमित्र शास्त्री ने मेरा परिचय कलम तोड़कर लिखा। वेद प्रवचन एवं वीडियो प्रदर्शन में मुझे पूरा सहयोग मिला। टेलीविजन पर स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं कारगिल के वीडियो को दर्शकों ने पसन्द किया। प्रधान, आर्यसमाज टाण्डा और उनके कार्यकर्ताओं का पूर्ण सहयोग मिला मुझे।

दि. 10.02.1985 *चितरंजन सावन्त ब्रिगेडियर*

•••

श्रद्धासुमन

एक बार की बात है, बाबू मिश्रीलाल जी आर्य कन्या इण्टर कालेज टाण्डा के बीच से गुजरने वाली सड़क को बन्द करवाने के लिए गेट लगवा रहे थे। किसी व्यक्ति ने आपको जान से मारने की धमकी दी परन्तु आप तनिक भी भयभीत नहीं हुए अपितु साहस पूर्वक वहां अपना कार्य करते रहे। फिर उस व्यक्ति के घर पर जाकर उसके पिता से उसे बुलाने के लिए कहा और कहा कि मैं आया हूं, वह आकर मुझे मारे। वह इतना लज्जित हुआ कि उसने अपने कृत्य के लिए क्षमा याचना करते हुए कहा कि वे उसे माफ कर दें। बाबू जी ने उसे क्षमा कर अपनी अदम्य क्षमाशीलता का परिचय दिया। बाबू जी वास्तव में साहसी आर्य पुरुष थे।

–ज्योति प्रकाश आर्य, टाण्डा, अम्बेडकरनगर

•••

स्व. बाबू जी ने सन् १९४४ ई. में ऐसे समय में विद्यालय की स्थापना की थी जब समाज में लड़कियों को पढ़ाना ठीक नहीं समझा जाता था। फलस्वरूप उन्हें कठिनाइयों और विरोधों का भी सामना करना पड़ा। परन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और विद्यालय को इण्टर कालेज तक पहुंचाया। आज यह विद्यालय जनपद ही नहीं, मण्डल की अग्रणी शिक्षण संस्था है।

योग्य पिता के योग्य पुत्र और वर्तमान प्रबंधक श्री आनन्द कुमार आर्य विद्यालय के विकास के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। विद्यालय के प्रांगण को भव्य रूप देने में उनका प्रयास सराहनीय है। मेरे प्रति उनका भ्रातृत्व स्नेह है जो मेरे लिए गर्व की बात है। शुभकामनाओं सहित।

–पुरुषोत्तम खेमानी, टाण्डा, अम्बेडकरनगर

•••

श्री बाबू जी यह कहा करते थे कि धार्मिक नेता कभी असत्य नहीं बोलता। बुराइयों को दूर करने की आग उनके हृदय में धधकती रहती थी। इसी कारण उनके शब्द अटपटे एवं कठोर हो जाते थे। वे जिस लगन और निष्ठा से कार्य करते थे उसका उदाहरण अब मिलना कठिन हो गया है। उनकी कमी टाण्डा को हमेशा अनुभव होती रहेगी। वे ऐसे

निःस्वार्थ सामाजिक कार्यकर्ता थे जो दूसरों के सुख एवं दुख में सम्मिलित होने वाले थे। एक ऐसा सच्चा इंसान चला गया जिसकी कमी इस क्षेत्र के लिए शोचनीय है।

इन शव्दों के साथ मैं उस 'अग्निपुंज की जीवन ज्योति' को शत शत नमन करता हूं।

–लाल जी प्रसाद पाठक, भू.पू. प्रधान लिपिक
मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा, अम्बेडकरनगर

•••

बार बार मन होता जिनकी नेकी के गुण गाने का।
आज समय आया है उनकी प्रबल चाह अपनाने का।।
क्वार सुदी तेरह को जन्मे संवत् रहा उन्नीस सौ साठ।
पिता गया प्रसाद आर्य ने सिखलाया वेदों का पाठ।।
युग–ऋषि ने संकल्प लिया स्वामी के पथ पर जाने का।
इसी लिए गौरव पाया था मिश्रीलाल कहाने का।।

–डा. मनीराम वर्मा, प्रवक्ता हिन्दी
त्रिलोकनाथ डिग्री कालेज, टाण्डा, अम्बेडकरनगर

•••

सारी सभ्यता दूषित थी विकृत समाज के ढांचे थे।
घोर अविद्या के साये में जब जनमानस सोये थे।
घर से बाहर जब बालाओं के पैर निकलना मुश्किल था।
सरस्वती पुत्र मिश्रीलाल का उसी समय अवतरण हुआ।

टाण्डा की पावन नगरी को जिसने विद्या से महकाया है।
कर्तव्यनिष्ठ हे महामने, यह तेरी कर्मठता की ही माया है।
है श्रेष्ठ हुआ यह विद्यालय यश अनिल भुवन में छाया है।
श्री मिश्रीलाल का चित्र हृदय में हमने रम्य बनाया है।

–देवराज वर्मा, आर्यसमाज मखदूमनगर
टाण्डा, अम्बेडकरनगर

•••

श्रेष्ठिप्रवर, कर्तव्यनिष्ठ, सेवाव्रती
श्री मिश्रीलाल जी आर्य
की सेवा में

अभिनन्दन पत्र

आर्यवर,

आज की इस पावन पुण्य आनन्दमयी वेला में आपको अपने मध्य पाकर हम धन्य हो रहे हैं। आपका जीवन, आपकी कर्तव्यनिष्ठा, समाज सेवा, महर्षि के प्रति आपकी भक्ति, आपकी उदारता, सूझ-बूझ, हमारा संबल है, मार्ग दर्शक है।

महर्षि भक्त,

आप ऋषि मुनियों की शिक्षा और संस्कृति के भक्त हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्त और आर्यसमाज का मिशन आपके जीवन का लक्ष्य रहे हैं। आर्यसमाज का यह नियम -'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए' आपके जीवन का मार्ग दर्शक रहा है। आर्यसमाज के प्रचार में आपका जीवन सेवामय रहा है।

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी,

स्वतन्त्रता संग्राम के समय आपने अपने व्यवसाय, सम्पत्ति आदि की चिन्ता न करके देश का साथ दिया, पर्याप्त समय तक कारागार का कष्ट झेला। आपकी सरलता,

सादगी, स्वदेशी खादी व्रत आदर्शमय है।

शिक्षा प्रेमी,

आपका शिक्षा प्रेम सर्व विदित है। आप 'आर्य कन्या विद्यालय' टाण्डा (फैजाबाद) के संस्थापक ही नहीं, कुशल संचालक भी हैं। आपके कार्य, आपके व्यवहार, आपकी संचालन क्षमता, सर्वत्र आपकी योग्यता प्रमाणित होती रहती है। हिन्दू, मुसलमान सभी बिना भेदभाव के आपकी उदारता और क्षमता के प्रशंसक हैं।

आदर्श चरित्र,

आप आदर्श हैं, आपका चरित्र आदर्श है, आपकी कट्टर नियमानुवर्तिता सर्वथा आदर्शमय है। आपका निर्लोभ व्यक्तित्व स्वार्थ से सदा ऊपर रहता है।

आप हमारे सम्मान हैं, आप हमारे आदर्श हैं। परम प्रभु जगदीश्वर आपको स्वस्थ, प्रसन्न एवं चिरायु करें, हम सबका सादर अभिनन्दन स्वीकार करें।

रविवार, माघ शुक्ल
१४, २०३८ वि.

हम हैं
आपके आदर्श जीवन मुग्ध
आर्यसमाज कलकत्ता
के सदस्य गण

❀❀❀

द्वितीय खण्ड

वंश : परम्परा एवं अनुक्रम

आज मुझे अपने पूर्वजों को स्मरण करने में जो आनन्दानुभव हो रहा है, उसको शब्दों में व्यक्त करने में मैं स्वयं को असमर्थ पा रहा हूं। अपने वंशक्रम में अपने पितामह स्वर्गीय श्री रग्घूराम जी साहु के जीवन परिचय के कुछ संस्मरण मस्तिष्क में हैं अस्तु मैं अपने वंश-वृक्ष का वर्णन उन्हीं देवस्वरूप पूज्य पितामह से ही प्रारम्भ करना समीचीन समझता हूं।

स्व.रग्घूराम एक उदार, दानशील धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। पौराणिक परम्पराओं में अनका विश्वास था, वे परम शैव सनातनी थे। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी, व्यापार में वह निपुण थे। अपने पुरुषार्थ से उन्होंने ग्राम पखनापुर को क्रय करके नानकशाही गद्दी (उदासीन आश्रम हज्जापुर-टाण्डा) के महन्त श्री शंकरदास को संकल्प किया था। समाज में उन्हें प्रतिष्ठा प्राप्त थी, लोग उनको आदर और स्नेह की दृष्टि से देखते थे। पूजनीया दादीजी के विषय में कुछ भी स्मरण नहीं आ रहा है इसलिए यह कमी इस वंश-इतिहास की रहेगी। उन दिनों टाण्डा का मुख्य व्यवसाय कोरे कपड़े पर छपाई का था, जिसे छींट कहा जाता था और वह माल, मुख्यतः नेपाल राज्य जो भारतवर्ष के उत्तर में स्थित एकमात्र हिन्दू-राष्ट्र है, वहां जाता था, जहां उस माल की पर्याप्त खपत थी। व्यापार की सुविधा हेतु रग्घुराम जी ने नेपालगंज में एक निजी दूकान भी खरीद ली थी, और सुचारु रूप से कारोबार चल रहा था।

स्व. रग्घूराम जी के चार पुत्ररत्न थे -

१. श्री भगवान दास २. श्री रामदास ३. श्री नारायण दास तथा ४. श्री गया प्रसाद।

पितामह श्री रग्घूराम जी के निधन के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र

एवं मेरे ताऊ श्री भगवान दास परिवार से पृथक हो गये। उनके दो पुत्र थे -श्री महावीर प्रसाद साहू तथा श्री महादेव प्रसाद साहू। मेरी ताई, श्रीमती महादेवी जी कुशल गृहिणी, धार्मिक विचारों में आस्था रखने वाली नारी थीं। रग्घूराम जी के बाकी तीन पुत्र एक साथ रहते एवं व्यापार करते थे और तीनों उस समय के आर्यसमाज के ख्याति प्राप्त विद्वान् वेदज्ञ पं.तुलसीराम जी से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए थे तथा सन् १९१० ई. में आर्यसमाज मंदिर, टाण्डा के निर्माण हेतु तत्कालीन आर्यसमाज के मंत्री महाशय श्री बच्चूलाल जी को एक सहस्र रुपये प्रदान किये थे। यही मेरठ निवासी पं. तुलसीराम जी आगे चलकर स्वामी तुलसीराम के नाम से विख्यात हुए थे।

श्री रामदास जी के तीन पुत्र थे - श्री परमेश्वर दयाल उर्फ ओरीलाल, श्री रूपचन्द तथा श्री दीपचन्द आर्य।

(१) स्व.श्री परमेश्वर दयाल के दो पुत्र - प्रथम श्री बृजमोहन उर्फ बिरजू बाबू जिनका स्वर्गवास ६० वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से हो गया, उनके चार पुत्र हैं। द्वितीय श्री वीरेन्द्र कुमार उर्फ बिल्लू बाबू के कोई पुत्र नहीं है, एक पुत्री थी, जिसने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की थी। उसके विवाह की तैयारी हो रही थी, किन्तु कालचक्र ने अपनी लीला दिखलाई और वह पुत्री कालगति को प्राप्त हो गई। एक मात्र पुत्री के वियोग का प्रभाव निश्चित रूप से वीरेन्द्र जी पर पड़ा किन्तु उनमें ईश्वर तथा वेद के प्रति अगाह निष्ठा है और वे उसके अनुरूप आचरण करते हुए आर्यसमाज के कार्यों में रुचि लेते हैं। वर्तमान में आर्यसमाज टाण्डा के उपप्रधान तथा दयानन्द बाल विद्या मन्दिर टाण्डा के अध्यक्ष हैं। उन दोनों भाइयों का परिवार आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है तथा व्यापार में अच्छा स्थान प्राप्त है।

(२) स्व. श्री रूपचन्द जी की समयान्तर से प्रथम पत्नी के इन्तकाल के पश्चात् दूसरी शादी हुई थी। दोनों से सन्तानें हैं और सभी अपना-अपना व्यापार, तथा जीविकोपार्जन कर रहे हैं। उनके तीन पुत्र श्री प्यारेलाल, श्री प्रकाश तथा श्री विजय प्रकाश हैं।

(३) श्री दीपचन्द जी, जिनका निधन कुछ समय पूर्व हो गया, सरल विचार के आर्य पुरुष थे। ईश्वर भक्ति तथा महर्षि दयानन्द के विचारों में अटूट प्रेम और श्रद्धा रखते थे। उनका भी दो विवाह हुआ था। प्रथम पत्नी से ही सन्तानें हैं, उसकी मृत्यु के पश्चात। दूसरी शादी

उन्होंने की थी, वह भी उनके समक्ष दिवंगत हो गयी थीं। उनके चार पुत्र- श्री प्रेमचन्द्र, श्री मामचन्द्र, श्री त्रिलोकचन्द्र तथा श्री कैलाशचन्द्र। श्री त्रिलोक चन्द्र ने युवावस्था में ही वैराग्य धारण कर लिया, बाकी उनके तीनों पुत्र, कानपुर में व्यापार करते हुए अपने परिवार को सुख के साथ चला रहे हैं।

मेरे तीसरे ताऊ स्वर्गीय श्री नारायणदास जी के तीन पुत्र श्री सूर्यबली जी, श्री गणेशलाल जी तथा श्री मेवालाल जी थे और तीनों ही स्वर्गवासी हैं।

(१) श्री सूर्यवली जी के दो पुत्र- प्रथम श्री विश्वनाथ प्रसाद (अविवाहित) जिनका निधन हो चुका है। द्वितीय श्री महेन्द्र कुमार जी हैं जो अपने परिवार के साथ टाण्डा में निवास करते हैं। आर्यसमाज के कार्यों में रुचि लेते हैं तथा सामाजिक कार्यों में अपनी परवाह न करके तत्परता से लोगों के दुःख-दर्द में सम्मिलित होते हैं।

(२) स्वर्गीय श्री गणेशलाल जी के एक पुत्र श्री हरिनाथ जी तथा उनके दो पुत्र-प्रथम अशोक कुमार, द्वितीय अभय कुमार हैं। अशोक कुमार एक योग्य उत्साही परिश्रमी युवक हैं जिन्होंने पूरे परिवार को संभाल कर रखा है तथा अपना व्यापार करते हैं। अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग हैं।

(३) स्वर्गीय मेवालाल के एक ही पुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार थे, जिनका विवाह भी हुआ था, किन्तु ईश्वर के विधान के समक्ष किसी का वश नहीं, और आज उनका वंश समाप्तप्राय है।

(४) पूज्य पितामह श्री रग्घूराम जी के चतुर्थ पुत्ररत्न थे मेरे पूज्य पिता श्री गया प्रसाद आर्य। आप प्रकृति के कट्टर, निष्ठावान, कर्मशील व्यक्ति थे, व्यापार में निपुण तथा ईमानदारी से अपना व्यवसाय करते हुए सामाजिक व धार्मिक कार्यों में रुचि रखते थे। आर्यसमाज में श्री पं. तुलसीरामजी द्वारा प्रविष्ट हुये थे और उन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन किया था और उनमें अटूट आस्था रखते थे। परस्पर के वार्तालापों में आप सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न अंशों का उद्धरण जो कि उन्हें कण्ठस्थ था, प्रस्तुत किया करते थे। वह अपना मार्ग दर्शक ऋषि दयानन्द को ही मानते थे। परिवार को बड़े ही संयम और धर्मानुकूल रीति से चलाने

में सतर्क रहते थे। उनका विवाह संस्कार श्रीमती झिनका देवी के साथ टाण्डा से ६ मील की दूरी पर स्थित फूलपुर ग्राम के सम्पन्न परिवार में हुआ था। मेरी पूज्या माताजी सरल, उदार प्रकृति की कुशल गृहिणी थीं, धर्म में उनकी अगाध आस्था थी तथा पिताजी के धार्मिक कार्यों में पूर्ण सहयोग देती थीं। पिताजी को, आर्यसमाजी होने के कारण तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के कठोर उत्पीड़न को सहन करना पड़ा था। विशेष उल्लेखनीय है कि टाण्डा नगर में सर्वप्रथम मेरे पूज्य पिता श्री गया प्रसाद जी ने ही अपने पिता श्री रग्घूराम जी का अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीत्यनुसार किया था, जिसके कारण जाति के आधार पर गठित समाज ने हमारे परिवार को बिरादरी से पृथक् कर दिया था। ऐसी-ऐसी विषम परिस्थितियों में भी आप वैदिक सिद्धान्तों से जुड़े रहे और बिरादरी की परवाह किये बिना आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द सम्मत वैदिक विचारों से पृथक् नहीं हुए। पिता जी को उर्दू भाषा का अच्छा ज्ञान था, उर्दू भाषा मे लिखित सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन उनकी दिनचर्या थी। उन्हें आयुर्वेद में बहुत विश्वास था, उन्होंने अनेक वैद्यक ग्रन्थों का अध्ययन किया था जिनमें चरक संहिता, सुश्रुत, वाग्भट्ट, माधव-निदान मुख्य हैं और स्वर्गवास पूर्ण आयु प्राप्त कर मेरे विवाह के ६ वर्ष पश्चात हुआ था और उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुई थी।

अपने माता-पिता से हमलोग पांच सन्तानें हुए -

१- श्री जियालाल आर्य २- श्रीमती मंगला देवी

३- श्री मिश्रीलाल आर्य ३- श्रीमती शान्ति देवी

५- श्री हीरालाल आर्य

[स्वर्गीय श्री जियालाल जी पिताजी के ज्येष्ठ भ्राता थे, उनके दो पुत्र- श्री पन्नालाल और श्री धर्मदेव (दिवंगत) व चार पुत्रियां- श्रीमती ज्ञानवती (दिवंगत), श्रीमती शीलादेवी (दिवंगत), श्रीमती सत्यवती देवी तथा श्रीमती कृष्णादेवी (दिवंगत)।

स्वर्गीया श्रीमती मंगला देवी पिताजी की बड़ी बहन थीं उनकी एकमात्र सन्तान सुश्री सुशीला देवी हैं, उनका विवाह संस्कार बहराइच के एक लब्ध प्रतिष्ठित आर्य परिवार में श्री मनोहर लाल वर्मा के साथ सम्पन्न हुआ। वर्मा जी स्वयं अनुभवी वैद्य हैं, बहराइच में उनका

स्वदेशी दवाखाना प्रसिद्ध औषधि केन्द्र है। वर्तमान में उनके पुत्र अरुण जी मान मर्यादा के साथ व्यवसाय का संचालन कर रहे हैं। उन्हें अपने पूज्य पिता एवं पूजनीया माता जी का आशीर्वाद प्राप्त है।

श्रीमती शान्तिदेवी पिताजी की छोटी बहन (मेरी बुआजी) हैं। वह स्वभाव से सरल, सुशील एवं कर्तव्यपरायण नारी हैं। उनका विवाह संस्कार बलिया निवासी रईस बाबू वासुदेव प्रसाद के साथ हुआ था। वासुदेव बाबू का निधन १६८५ में हो गया था। उनके चार पुत्र- श्री रामेश्वर प्रसाद (हरीश बाबू), श्री द्वारिका प्रसाद (भीमबाबू-दिवंगत), श्री जगन्नाथ प्रसाद व डा. बद्रीनारायण तथा दो पुत्रियां श्रीमती निर्मला एवं श्रीमती नर्वदा क्रमशः डा. छेदीलाल गुप्त एवं डा. श्रीकृष्ण देव वर्मा से विवाहित हैं।

श्री हीरालाल आर्य पिताजी के कनिष्ठ भ्राता थे। उनका विवाह संस्कार चुनार मिर्जापुर में श्रीमती चम्पादेवी के साथ सम्पन्न हुआ था। उनके चार पुत्र- श्री वशिष्ठमुनि, श्री देवेन्द्र कुमार, श्री राघवेन्द्र कुमार व श्री राजकुमार तथा एक पुत्री श्रीमती सरोजनी देवी। मेरी भाभी जी का आशीर्वाद अभी भी उनके पुत्रों को प्राप्त है।]

मेरा जीवन और मेरा परिवार

मेरा जन्म सं. १६६० वि. आश्विन शुक्ला त्रयोदशी दिन सोमवार (सायं चार बजे) को टाण्डा नगर में हुआ था। मेरा अध्ययन हिन्दी और उर्दू भाषा के माध्यमसे हुआ और मैंने सन् १६१६ ई. में मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की। टाण्डा में शिक्षा ग्रहण का साधन सीमित होने के कारण मेरी शिक्षा अधिक नहीं हो सकी, किन्तु शिक्षा के प्रति प्रेम, लगाव और उसमें रुचि बराबर बनी रही।

जब मातृभूमि दासता की शृंखला में जकड़ी पड़ी थी, मेरा जन्म भी उसी काल में हुआ था। मेरे जीवन पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा। मेरे पिता पहले से ही देशभक्त थे, परिवार में बराबर देश चिंतन की चर्चाएं होती रहती थीं। परिणामस्वरूप स्वतंत्रता की प्रवृत्ति मुझमें बचपन में ही उत्पन्न हो गई, और इसमें मेरी रुचि निरन्तर बढ़ती गई। सन् १६१६ में शिक्षा समाप्त होने के उपरान्त सन् १६१७ में देश की परातंत्रता के विरुद्ध हृदय में क्रान्ति-भाव व क्रान्तिकारी

विचार उत्पन्न हो गया, और मैं राजनीति में प्रविष्ट हो गया। पिताजी आर्यसमाजी थे ही इसीलिए महर्षि दयानन्द तथा वैदिक सिद्धान्तों से प्रेम तथा उसमें निष्ठा होना स्वाभाविक था। मैंने सन् १९१७-१८ में ऋषि कृत अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन किया तथा अपने जीवन को उसके अनुरूप ढालने का व्रत लिया।

मैं अपने जीवन के धार्मिक, राजनैतिक एवं शैक्षिक कार्य क्षेत्र की विस्तृत व्याख्या आगे के अध्यायों में करूंगा।

मेरा व्यवसायिक जीवन

मेरे जीवन का एक पंक्ष व्यवसाय से सम्बन्धित है जो संक्षेप में इस प्रकार है-

मेरा जन्म टाण्डा नगर के एक उच्च व्यापारी परिवार में हुआ, पिताजी निष्ठावान धार्मिक, ईमानदार, वचन के धनी व्यापारी थे। छींट की छपाई का व्यवसाय पारिवारिक था। छींट नेपाल के पहाड़ की जनता एवं आसाम प्रदेश में पहनने के काम आती थी। अध्ययन की समाप्ति पर मैं अपने घर के व्यवसाय में भी पूरी तल्लीनता से रुचि लेता था तथा अपने व्यापारियों के यहां विराटनगर, नेपालगंज, बुटल, काठमांडू, दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी, तिनसुकिया, डिब्रूगढ़ आदि नगरों में छोटी उमर से ही आता-जाता था। इससे जहां आर्थिक लाभ होता था वहीं पर जान-पहचान तथा ज्ञान में भी वृद्धि होती थी। मेरे व्यावसायिक जीवन का यह क्रम सन् १९७१ तक चलता रहा।

गृहस्थ जीवन में प्रवेश

मेरा विवाह-सम्बन्ध आर्य जगत् के विद्वान् उपदेशक पं.सहदेव शर्मा के माध्यम से, मोतिहारी, जिला चम्पारण(बिहार) निवासी एक प्रतिष्ठित जमींदार, समाजसेवी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं आर्य नेता बाबू जगन्नाथ प्रसाद चौधरी की कनिष्ठा बहन के साथ होना निश्चित हुआ। चौधरी जी का परिवार भी आर्यसमाजी और ऋषि दयानन्द में पूर्ण निष्ठा रखने वाला था। सन् १९३२ में मेरा विवाह-संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार बिना किसी प्रकार के दहेज के पूज्य पं. गणेशदत्त शास्त्री के पौरोहित्य में रामप्यारी देवी के साथ सम्पन्न हुआ। तत्कालीन एक महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूं, वह इस

प्रकार है- मेरे विवाह के समय ही ब्रिटिश प्रशासन का आदेश हुआ कि मैं टाण्डा में एक माह आवास नहीं कर सकता और उसी समय जगन्नाथ जी चौधरी को आदेश था कि वह मोतिहारी छोड़कर बाहर नहीं जा सकते। अस्तु मैं अपनी बहन शान्तिदेवी के घर बलिया चला गया और बारात को मेरे बिना टाण्डा से लेकर पिताजी मोतिहारी पहुंचे। विवाह के पश्चात् मैं पुनः बलिया लौट गया और बारात पिताजी के साथ टाण्डा चली गयी। मैं बलिया से आसाम के विभिन्न स्थानों पर अपने व्यवसाय के निमित्त यात्रा करके निर्वासन अवधि समाप्ति के पश्चात टाण्डा पहुंचा।

टाण्डा पहुंचने के पश्चात् मैं आर्यसमाज एवं देश की सेवा में पूर्ववत् भाग लेता रहा। मेरा गृहस्थ-जीवन भी अत्यंत सुखदायी एवं आदर्शमय रहा। मेरा घर सभी प्रकार के सुख साधनों से सम्पन्न था जैसा कि संस्कृत के कवि ने कहा है-

अर्थागमो नित्यमरोगिता च
प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वशश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या,
षड् जीवलोकेषु सुखानि राजन्। (विदुर नीति)

अर्थात हे राजन् संसार के छः सुख हैं- धन की प्राप्ति का सातत्य, सदा स्वस्थ रहना, प्रिय एवं मधुर बोलने वाली पत्नी, आज्ञाकारी पुत्र तथा लक्ष्य को सफल बनाने वाली विद्या।

परमपिता परमात्मा की कृपा से मुझे गृहस्थ-जीवन में सब कुछ की प्राप्ति हुई है। परिवार में अच्छा व्यवसाय था, जिससे धन पर्याप्त था। मेरा स्वास्थ्य उत्तम था। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती रामप्यारी देवी प्रिय तथा मधुर भाषिणी नारी है। मेरे पुत्र आज्ञाकारी हैं तथा परिवार का प्रेम और स्नेह मुझे प्राप्त है। मैं अपने लक्ष्य की प्राप्ति में पूर्ण सफल रहा हूं।

मेरी धर्मपत्नी का व्यक्तित्व एवं दिनचर्या

मेरी पत्नी श्रीमती रामप्यारी देवी, शिक्षिता, सुसंस्कृत, सुशील, मृदुभाषी एवं कर्तव्यपरायणा नारी है। वे आदर्श आर्य नारी हैं। उनका गृहस्थ, सामाजिक, धार्मिक एवं व्यावहारिक जीवन अत्यन्त मधुर, विनम्र, स्नेहयुक्त तथा त्यागमय है और नारी जाति के लिए अनुकरणीय

है। आर्य परिवार की पुत्री होने के कारण आर्यसंस्कारों को अपने में धारण की हुई है। धार्मिक-संस्कारों के प्रति उनमें अगाध श्रद्धा है। राष्ट्रीय भावना भी उनमें कूट कूट कर भरी है जिसका श्रेय उनकी जन्मस्थली बिहार प्रान्त को जाता है जिसने डा. बाबू राजेन्द्र प्रसाद जैसे रत्न भारत को दिये, जो भारत गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति हुए तथा कुंअर सिंह ने तो अपना सर्वस्व भारत मां की स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया था। मेरी पत्नी का हर प्रकार का सहयोग मुझे राष्ट्रीय सामाजिक एवं आर्यसमाज संचालन में मिला तथा उनका स्वयं का सक्रिय योगदान सरहनीय है। नारी-जागरण, नारी-उत्थान, नारी शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने बहुत प्रयास किया है। वह महिला आर्यसमाज की बहुत दिनों तक प्रधाना भी रही हैं।

हमारा दाम्पत्य जीवन सुखमय रहा है। नित्य संध्योपासना एवं दैनिक यज्ञ हमारे जीवन के प्रधान कर्म रहे हैं। प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में उठकर नित्यकर्म से निवृत्त होकर, ईश्वराराधना में लग जाते हैं। मैं नियमित रूप से प्रातः भ्रमण अपने निवास से अपने बगीचे तक करता हूं। उससे मेरा स्वास्थ्य ठीक रहता है मन प्रसन्न रहता है। यज्ञ और भजन के उपरान्त वह मेरे अल्पाहार की व्यवस्था करती। गृहस्थी के समस्त कार्यों का संचालन प्रायः स्वयं करती हैं। घर पर आये हुए मेहमानों, स्वजनों, साधु-संन्यासियों महात्माओं एवं विद्वानों का आतिथ्य सत्कार करने में उनकी अगाध श्रद्धा हैं। रुचिकर भोजन तथा तरह तरह के व्यंजन बनाना उनका शौक है। गरीबों के लिए उनके हृदय में दया है। बराबर अपने सामर्थ्य के अनुसार लोगों की सहायता करती हैं। परिवार में सबके प्रति अगाध प्रेम रखती हैं। परिवार में किसी भी प्रकार के कष्ट में धैर्य रखती हैं तथा दूसरों को भी आश्वासन देती रहती हैं। इस प्रकार ऐसी जीवन संगिनी को पाकर मैं अपने जीवन को धन्य मानता हूं तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि हमदोनों का यह साथ चिरस्थायी बना रहे।

[माता जी का आशीर्वाद हम सभी को आज भी प्राप्त है। उनकी आयु ८६ वर्ष की है। मात्र पैरों की कमजोरी से चलने में असमर्थ हैं, स्मरण शक्ति, पहचानना, बुद्धि, आंख, बोलना सभी कुछ अवस्था के अनुसार ठीक काम कर रहा है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी छत्रछाया हम सभी पर दीर्घकाल तक बनी रहे।]

मेरी सन्तानों का परिचय

परमपिता जगदीश्वर की असीम कृपा से मेरे तीन पुत्र और दो पुत्रियां इस प्रकार हैं–

१. श्री आनन्द कुमार आर्य

२. श्री राजेन्द्र कुमार आर्य

३. डा. नरेन्द्र कुमार

४. श्रीमती विद्योत्तमा देवी

५. श्रीमती राजकुमारी गुप्ता

मेरे सभी बच्चे मेरे अनुरूप हैं, सब आर्य सिद्धान्त के पोषक हैं। सबमें मेरे प्रति श्रद्धा–भक्ति विद्यमान है, हम दोनों पति–पत्नी के प्रति सभी आज्ञाकारी हैं।

मेरे ज्येष्ठ पुत्र आनन्द कुमार हैं, उन्होंने बी.ए. तक शिक्षा ग्रहण की है, स्वभाव से सरल एवं मृदुभाषी हैं, अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहते हैं तथा उत्तरदायित्व को पूर्णरूप से निभाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। हमारा व्यवसाय कलकत्ता महानगरी में भी है जिसे अध्ययन समाप्त करने के पश्चात आनन्द जी देखते हैं। उनका विवाह पटना निवासी श्री ब्रजनन्दनलाल उर्फ पूरन बाबू रईस की पुत्री श्रीमती मीना देवी के साथ ७ मार्च १९६४ को पं. गंगाधर शास्त्री के पौरोहित्य में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ था। श्री पूरनबाबू पटना के व्यवसायी हैं, स्वभाव से सरल, हृदय से निर्मल तथा अपने कर्तव्य के प्रतिजागरूक रहने वाले व्यक्ति हैं। इनका पटना में एक उच्च स्तर का नर्सिंग होम है तथा औषधियों का व्यापार भी करते हैं। उनकी पत्नी श्रीमती रामा देवी एक सुशील कर्तव्य परायण गृहिणी हैं। पूरे परिवार की देखभाल एवं उसका संचालन स्वयं करती हैं। उनके तीन पुत्र तथा तीन पुत्रियां हैं। सभी में परस्पर प्रेम है। मेरे जीवन की एक घटना का उल्लेख करना यहां आवश्यक है वह इस प्रकार है– मुझे जून सन् १९६४ ई. में पता चला कि मैं मधुमेह से पीड़ित हो गया हूं। टाण्डा में चिकित्सा का उचित साधन नहीं होने के कारण मैं क्षय रोग से भी ग्रसित हो गया और स्थिति बिगड़ गयी थी और उस अवस्था में मैं, साथ में आनन्द, राजेन्द्र पटना गये। आनन्द बाबू बहू की विदाई कराके टाण्डा वापस गये

और मैं राजेन्द्र के साथ वहां रुक गया और काफी समय पूरनबाबू के बंगले पर ही रहा, वहां अच्छे अच्छे डाक्टरों से निदान हुआ, उन लोगों ने विशेष रूप से मेरी देख रेख और सेवा सुश्रूषा की सर्वथा समुचित सुव्यवस्था की जिसकी यहां प्रशंसा किये बिना मैं नहीं रह सकता। यहां तक कि मुझे लाभ होने पर पूरनबाबू स्वयं टांडा पहुंचाने। विधि का विधान है कि मैं दुबारा सन् १९६६ में भयंकर रूप से रुग्ण हो गया और पुनः मैं पटना ले जाया गया, उस समय तो मेरे जीवन का अन्त ही नजर आ रहा था किन्तु पूरनबाबू के सारे परिवार ने मेरी सेवा करके मुझे जीवन दान दिया। इसके पश्चात् मैं बराबर पटना में इलाज में रहा। मेरी दोनों आंखों का आपरेशन भी पटना में ही हुआ। इस तरह मैं पूरनबाबू जैसा सम्बन्धी पाकर धन्य हूं, ईश्वर पूरनबाबू, उनकी स्त्री तथा उनके बच्चों को सुखी रखे, उनके परिवार के प्रति मेरी यही शुभकामना एवं आशीर्वाद है।

आनन्द बाबू जिनका उपनाम नन्दूबाबू है, उनकी पत्नी सौभाग्यवती मीना शिक्षित, सुशीला एवं गुणवती हैं। गृहस्थी के कार्यों में निपुण हैं, बच्चों की देखभाल एवं लिखाई-पढ़ाई में सजग रहती हैं साथ ही सामाजिक विचारों की नारी हैं। नारी जागृति, नारी उत्थान के लिए तथा दीन-दुखियों की सेवा में लायन्स क्लब के माध्यम से सक्रिय भाग लेती हैं। दोनों का दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं आदर्शमय है। आप दोनों को प्रभु ने दो पुत्ररत्न और दो पुत्रियां प्रदान की हैं। उनके सभी बच्चे कलकत्ता के उच्च विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

मेरी प्रथम पौत्री का नाम मीता है। उसने बी.काम. तक शिक्षा प्राप्त की है, अध्ययन में तीव्र बुद्धिवाली, सरल स्वभाव की मृदुभाषिणी लड़की है। उसका विवाह-संस्कार बड़ौदा (गुजरात) निवासी एक सम्पन्न प्रतिष्ठित परिवार में उद्योगपति श्री चन्दूलाल जायसवाल के ज्येष्ठ पुत्र श्री जयेन्द्र जायसवाल के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार १० अप्रैल १९८७ को सम्पन्न हुआ था। मैं उस विवाह में आशीर्वाद देने हेतु टाण्डा से कलकत्ता आया था, यह मेरा सौभाग्य ही था। शादी का सारा आयोजन बहुत ही सुन्दर रूप से हुआ था, जिसे देखकर मेरा हृदय गद्गद् हो गया। बिटिया मीता को दो सन्तानें (कन्या) हुई हैं। प्रथम कन्या सुन्दरता एवं हंसमुख स्वभाव के कारण उसका नाम लोगों ने खुशबू रखा। दूसरी कन्या भी वैसी ही सुन्दर है उसका नाम मोहिनी रखा गया। मुझे ईश्वर

ने दोनों प्रपौत्रियों को आशीर्वाद देने का अवसर प्रदान किया जिसके लिए मैं अपने को कृतार्थ समझता हूं।

दूसरी पौत्री चि. ममता एक सुन्दर बालिका है। वह मृदुभाषिणी, उत्तम स्वभाव वाली तथा गुणवती है। उसने बी.ए. आनर्स तक की उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त की है। गृहकार्य तथा आतिथ्य सत्कार करने में पूरी रुचि लेती है। वह मुझे बहुत प्रिय है। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि उसकी शादी मेरे सामने हो जाय, आगे प्रभु की इच्छा।

[चि. ममता का विवाह एक सुसंस्कृत परिवार में बनारस के रईस श्री कैलाशनाथ जायसवाल के सुयोग्य शिक्षित सुपुत्र डा. हनुमन्त लाल जायसवाल, पी-एच.डी. के साथ बनारस में सन् १९९२ ई. में अमेठी के विद्वान् पं.दीनानाथ शास्त्री एवं टाण्डा के श्री विज्ञमित्र शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। उसके दो पुत्र हैं। चि. हनुमन्त जी अभी वर्तमान में मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज, टाण्डा के मंत्री पद को सुशोभित कर रहे हैं तथा बड़ी ही तत्परता और लगन के साथ विद्यालय के प्रति अपने उत्तरदायित्व को निभाते हैं। विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा को अत्यंत आधुनिक परिवेश में प्रारम्भ करने का श्रेय उनको तथा चि. ममता को है।]

नन्दू बाबू की तीसरी संतान मेरा पौत्र चि.मनीष सुन्दर एवं आज्ञाकारी है। अभी ११वीं कक्षा में अध्ययन कर रहा है, पढ़ने में तेज है, ईश्वर उसे बुद्धि दे तथा दीर्घायु प्रदान करे जिससे भविष्य में वह परिवार की मर्यादा का पालन करता हुआ अपने पूर्वजों-परिजनों के नाम को उजागर करे।

[चि. मनीष ने बी.एस-सी. तक की शिक्षा प्राप्त की। इलेक्ट्रिक का निज का व्यवसाय कर रहे हैं। इनका विवाह कोलकाता के व्यवसायी श्री अरविन्द कुमार गुप्ता की सुपुत्री आयुष्मती श्वेता के साथ १८ जनवरी २००० ई. को सम्पन्न हुआ। श्वेता सौम्य, सुन्दर मृदुभाषी के साथ साथ सांस्कारिक गुणों से युक्त है। विवाह संस्कार आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानों पं. नेत्रपाल शास्त्री दिल्ली, डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री एवं पं. दीनानाथ शास्त्री अमेठी के पौरोहित्य में सभी सगे सम्बन्धियों, इष्ट मित्रों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार हुआ था। चि. मनीष और चि. श्वेता प्रतिदिन यज्ञोपरान्त अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करते हैं।]

आनन्द बाबू की संतानों में अंतिम संतान मेरा पौत्र अमिताभ है, जो कि बहुत सरल स्वभाव का चंबल बालक है। अपनी मातृभूमि टाण्डा से बहुत प्यार है। छुट्टियों में टाण्डा आता है तो मेरे पास काफी बैठता है। मेरा हाथ पकड़कर बगीचा घुमाने ले जाता है। मुझसे बहुत प्रेम रखता है। अभी कलकत्ता में नवीं कक्षा में अध्ययन कर रहा है। ईश्वर उसे दीर्घायु करे तथा धन-धान्य से परिपूर्ण रखे।

[चि.अमिताभ कलकत्ता से बी.काम. तक की शिक्षा प्राप्त करके एम.बी.ए. कि लिए दिल्ली चले गये। वहां से फाइनेन्स में एम.बी.ए. करके एक प्रसिद्ध औद्योगिक प्रतिष्ठान, जयभारत मारुति उद्योग, दिल्ली में फाइनेन्स विभाग संभाल रहे हैं, उल्लेखनीय है कि जयभारत मारुति उद्योग के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य (एस.के.आर्य) कलकत्ता के प्रसिद्ध व्यवसायी स्व. फूलचन्द आर्य के भतीजे हैं।]

इस तरह मेरे प्रति सम्पूर्ण परिवार में स्नेह और प्यार है। आनन्द बाबू समय-समय पर तथा आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर टाण्डा आते रहते हैं। मेरे अस्वथ होने का समाचार पाते ही तुरन्त मेरे पास आ जाते हैं और मेरी सेवा-सुश्रूषा तथा स्वास्थ्य-सुधार में लग जाते हैं। वह अपने व्यवसाय से अधिक समाज के कार्यों में रुचि लेते हैं। कलकत्ता महानगरी में बड़ावाजार स्थित आर्यसमाज की भूमि जिसका मूल्य एक करोड़ रूपये के लगभग लोग बताते हैं उसे आततायियों से खाली कराने का श्रेय मेरे पुत्र आनन्द को है। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज कलकत्ता की शताब्दी में उनका सक्रिय सहयोग, डायमन्ड हार्बर रोड में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल का निर्माण एवं उसकी स्थापना आनन्द बाबू की कार्य दक्षता के द्योतक हैं। आजकल वह प्रान्तीय स्तर की शिरोमणि आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के महामंत्री हैं, तथा सभा के भवन का नवनिर्माण करा रहे हैं। यह सब देखकर मेरा हृदय अतिप्रसन्न एवं गद्गद् है। आर्यसमाज तथा उसके सिद्धान्तों में निष्ठा उसके अन्दर कूट कूट कर भरी है। उनकी क्षमता तथा कार्यशैली को देखकर मुझे पूर्ण विश्वास एवं सन्तोष है कि मेरे परिवार के द्वारा आर्यसमाज का कार्य मेरे अनुरूप भविष्य में भी होता रहेगा। ईश्वर आनन्द बाबू को दीर्घायु प्रदान करे, प्रभु से यही कामना है तथा मेरा आशीर्वाद सतत उसके साथ है।

मेरे द्वितीय पुत्र राजेन्द्र कुमार हैं। इनका स्वभाव सरल है तथा ये स्पष्टवादी हैं। इन्होंने बी.काम., एल.एल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की है

किन्तु वकालत नहीं करके अपना व्यवसाय करते हैं तथा दक्षिण भारत में स्थित सालेम नगर में पारिवारिक व्यापार को संभालते हैं। सालेम में हिन्दी भाषी कम हैं किन्तु राजेन्द्र का प्रेम सबसे है और वहां पर अपनी दुकान पर ही आर्यसमाज का सत्संग चलाते हैं। आर्यसमाज के सिद्धान्तों में पूरी निष्ठा है और उसके अनुसार अपने परिवार का संचालन करते हैं। आर्यसमाज टाण्डा के प्रत्येक वार्षिकोत्सव पर सालेम से धन एकत्र करके टाण्डा भेजते हैं जिससे उत्सव के सम्पन्न होने में सहायता मिलती है। उनका विवाह संस्कार टाण्डा से १२ किलोमीटर की दूरी पर फूलपुर निवासी स्व.श्री रामनारायण की पुत्री नीलादेवी के साथ कलकत्ता में ४ मार्च १६६६ को पूर्ण वैदिक रीति से आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य रमाकान्त शास्त्री के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ था। सौभाग्यवती नीला ने टाण्डा के आर्यकन्या इण्टर कालेज में शिक्षा प्राप्त की है। वह सौम्य स्वभाव वाली गृहिणी है। उसके पांच भाई और एक बहन है। सौभाग्य से उसकी माता जी का आशीर्वाद उसे प्राप्त है। उसके पांच भाई श्री सीताराम आर्य, श्री हरीराम आर्य, श्री राधेश्याम आर्य, श्री श्रीराम आर्य और श्री मनीराम आर्य हैं। सभी पूर्ण आर्य विचार के कट्टर आर्यसमाजी हैं।

श्री सीताराम आर्य, आर्यसमाज के प्रतिष्ठित कार्यकर्ता एवं आर्यसमाज कलकत्ता, १६ विधान सरणी के प्रधान पद को सुशोभित कर चुके हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में उन्होंने बहुत उन्नति की है तथा उनके प्रतिष्ठान नार्थ इण्डिया आटोमोबाइल्स को व्यावसायिक क्षेत्र में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। सीताराम जी बंगाल, उड़ीसा के बहुत सारी आर्य-संस्थाओं के प्रधान एवं अध्यक्ष हैं। टाण्डा आर्य कन्या इण्टर कालेज की प्रबन्ध समिति के भी अध्यक्ष हैं। उन्होंने अपने ग्राम फूलपुर में अपने पिता की स्मृति में -'श्री रामनारायण उच्च माध्यमिक विद्यालय' सरकार से मान्यता प्राप्त, खोलकर उस क्षेत्र की जनता के लिए बहुत उपकार का काम किया है। ये आर्य संस्थाओं को खुल कर दान देते हैं। उनके ही अनुरूप उनके सभी भ्राता अपने व्यवसाय के साथ साथ समाज के कार्यों को प्राथमिकता देते हैं। सारा परिवार कलकत्ता, दिल्ली और फूलपुर में निवास करता है। सभी में प्रेम है। श्री हरीराम जी अकबरपुर स्थित व्यवसाय देखते हैं, मुझसे बराबर प्रेम तथा सम्पर्क रखते हैं। मुझे उनके बहुत सहयोग मिलता है तथा मेरे सुख-दुःख में सदैव सम्मिलित होते हैं।

राजेन्द्र बाबू सपरिवार सालेम में रहते हैं। उनके एक पुत्र तथा दो पुत्रियां हैं सभी की शिक्षा-दीक्षा सालेम में ही हो रही है, उनके नाम इस प्रकार हैं-

कु. संगीता आर्या राजेन्द्र की सबसे बड़ी लड़की है स्वभाव से मृदु, हंसमुख तथा प्रिय है। अध्ययन में तीव्र बुद्धि वाली है तथा बी. काम. तक शिक्षा प्राप्त करके गृहकार्य में दक्षता प्राप्त कर रही है।

[संगीता का विवाह कलकत्ता निवासी स्व. हीरालाल साव के सुपुत्र श्री चन्द्रगुप्त से हुआ, उसके एक पुत्री तानिया तथा एक पुत्र गौरव है।]

राजेन्द्र बाबू की दूसरी सन्तान उनका पुत्र सतीश कुमार मेरा सबसे बड़ा पौत्र है। वह अभी हायर सेकेन्ड्री फाइनल में अध्ययन कर रहा है। पढ़ने में रुचि लेता है तथा अभी वर्तमान में अपने पिता के काम में भी हाथ बंटाता है। स्वभाव से सज्जन है, सबका आदर करता है तथा सभी से प्रेम रखता है।

[चि.सतीश ने बी.काम. तक शिक्षा प्राप्त की, उसका विवाह कलकत्ता में आर्यसमाज कोलकाता के मंत्री श्री राजेन्द्रप्रसाद जायसवाल की पुत्री चि. प्रतिभा के साथ सम्पन्न हुआ।]

उनकी तीसरी संतान कु. एकता है जो बहुत ही मधुर भाषिणी है। अध्ययन में मन लगाती है किन्तु शरीर से कमजोर है। स्कूल की छुट्टियां होने पर मुझसे मिलने सभी आते हैं, तथा सभी को मुझसे प्रेम है।

[अभी वर्तमान में एम.बी.ए. कोर्स सालेम (दक्षिण भारत) में कर रही है।]

ईश्वर से प्रार्थना है कि चि.राजेन्द्र उनकी पत्नी एवं तीनों बच्चे स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहकर अपना जीविकोपार्जन करें तथा दीर्घायु प्राप्त करें।

मेरे तृतीय पुत्र डा. नरेन्द्र कुमार हैं। उन्होंने एम.बी.बी.एस. लखनऊ से, एम.एस. पटना से विश्वप्रसिद्ध हड्डी के सर्जन डा. बी. मुखोपाध्याय के निर्देशन में तथा एफ.आर.सी.एस. लन्दन से पास किया है। वह हड्डी के कुशल सर्जन हैं। सन् १९७४ में नरेन्द्र इंग्लैण्ड गये वहां हास्पिटल में नौकरी करते थे तथा एफ.आर.सी.एस. की

तैयारी भी करते थे। उनका विवाह संस्कार १९७३ में कलकत्ता निवासी प्रतिष्ठित सम्पन्न परिवार में बाबू श्री तपसीप्रसाद जायसवाल की तृतीय पुत्री कु. शमा के साथ पूर्ण वैदिक रीति से पं.उमाकान्त उपाध्याय के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ था। तपसीबाबू का निधन हृदयगति रुक जाने के कारण हो गया। नरेन्द्र कुमार अपने परिवार के साथ यू.के. में रहते हैं। प्रायः प्रतिवर्ष भारत आते हैं तथा हमारे पास रहते हैं, उनकी श्रद्धाभक्ति मां-बाप के प्रति सराहनीय है। आप कई वर्ष साउदी अरब में भी प्रैक्टिस कर चुके हैं। अब वर्तमान में अपना निजी मकान खरीदकर इंग्लैण्ड के शहर सटन कोल्डफील्ड (वेस्ट मिडलैण्ड) में स्थायी रूप से परिवार के साथ निवास करते हैं, उनका दाम्पत्य जीवन सुखमय है। *[वर्तमान में विरमिंघम में स्थायी रूप से रहते हैं।]*

मेरे जीवन से सम्बन्धित उस घटना का उल्लेख करना समीचीन प्रतीत होता है जब मैं १९६९ में भयंकर रूप से बीमार था और इलाज के लिए पटना ले जाया गया था उस समय नरेन्द्र का एम.बी.बी.एस. के अध्ययन का अन्तिम वर्ष चल रहा था किन्तु पढ़ाई की परवाह न करके वह पटना आ गया और एक माह से अधिक मेरी सेवा में रात-दिन लगा रहा उससे मेरे उपचार में जो मदद मिली और जिसके कारण मुझे उस समय जीवन दान मिला उसके लिए रोम-रोम से उसे हार्दिक आशीर्वाद है तथा मुझे लगता है कि मेरी सेवा-सुश्रूषा करके वह अपने पितृऋण से पिता की ओर से सर्वथा उऋण हो गया। मेरी हार्दिक इच्छा है कि डा. नरेन्द्र कुमार भारत में रहकर यहां की जनता की सेवा करें, भारत में योग्य डाक्टरों की कमी है उनके यहां रहने से हमलोगों को भी प्रसन्नता होगी। डा.नरेन्द्र की तीन पुत्रियां हैं।

कु. प्रियंका का जन्म कलकत्ता में हुआ था। बहुत ही सौम्य स्वभाव की सुन्दर बालिका है। वह कई वर्ष तक कलकत्ता में रहकर पढ़ती रही है। अभी १९८७ से लगातार इंग्लैण्ड में रह रही है। *[ग्रेजुएशन के पश्चात दक्ष फारमासिस्ट के रूप में कार्यरत है।]*

कु. नवीनता तथा कु. श्रद्धा का जन्म यू.के. में हुआ, मेरी पत्नी कु. नवीनता के जन्म के समय इंग्लैण्ड गयी थी। अपनी मां से उनको बहुत प्रेम है। *[वर्तमान में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में तृतीय वर्ष में डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त कर रही है। चि. श्रद्धा लंदन के इम्पीरियल मेडिकल कालेज में प्रथम वर्ष की डाक्टरी शिक्षा प्राप्त कर रही है।]*

चि. नरेन्द्र के तीनों वच्चे बहुत प्रिय हैं। इधर तीन वर्षों से चि. शमा एवं बच्चे भारत नहीं आये किन्तु इस अवधि में नरेन्द्र तीन बार-चि.मीता की शादी, दूसरे चि. आनन्द कुमार के पेट के आपरेशन में बम्बई तथा तीसरे अभी १९९० में आकर मेरे पास एक माह रहे। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि डा.नरेन्द्र कुमार एवं उनके परिवार को दीर्घायु करे और सभी प्रकार के ऐश्वर्य से परिपूर्ण रखे तथा जहां भी रहें जनता जनार्दन की सेवा करते हुए अपने कर्तव्य का पालन करते रहें।

मेरी पुत्रियों में श्रीमती विद्योत्तमा देवी सबसे बड़ी है। उसका विवाह संस्कार कलकत्ता निवासी प्रतिष्ठित बाबू श्री गंगा प्रसाद साव के तृतीय पुत्र श्री राजेन्द्र प्रसाद के साथ १६ जून १९६२ को टाण्डा में वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ था। दोनों का दाम्पत्य जीवन सुखी है। मेरे दामाद राजेन्द्र बाबू बहुत ही सीधे-सादे सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं, निजी जमीन में कलकत्ता में उनका कारखाना है। वह अपने परिवार के साथ कलकत्ता में रहकर जीवन यापन कर रहे हैं। चि. विद्योत्तमा गृहकार्य में दक्ष है, गृहस्थी ठीक से चला रही है। मुझसे, उसे बहुत प्रेम है। उसके तीन पुत्रियां एवं एक पुत्र है, सभी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

मेरी प्रथम दौहित्री कु. रश्मि सौम्य स्वभाव की सुन्दर कन्या है, उसने बी.काम. तक शिक्षा प्राप्त की है। गृहकार्य में दक्ष है। मुझे उसकी शादी की चिन्ता है। देखें ईश्वर मेरी जिन्दगी में वह दिन दिखाता है या नहीं? वैसी लड़की जिस घर में जायेगी वही घर सुखी रहेगा। मेरा आशीर्वाद उसके साथ है। *[इसका विवाह संस्कार कोलकाता निवासी श्री कन्हैयालाल के सुपुत्र श्रीकृष्ण लाल जायसवाल के साथ हुआ है, एक पुत्री चि. प्रेरणा और पुत्र चि. आशीष हैं।]*

दूसरी दौहित्री कु. ऋनि उसका उपनाम डाली है, सीधी-सादी लड़की है। वह बचपन से मेरे पास ही रहती है। उसका अध्ययन टाण्डा व लखनऊ में हुआ है। मेरी इच्छा थी कि वह डाक्टर बनती किन्तु ईश्वर को मंजूर नहीं था और वह डाक्टर तो नहीं बन सकी किन्तु मेरी अभिलाषा है कि वह जीवन में कुछ बन जाती। लखनऊ से बी.ए. करके कम्प्यूटर का कोर्स कर रही है। ईश्वर उसे सद्‌बुद्धि प्रदान करे जिससे वह अपने जीवन को सार्थक बना सके। *[इसका विवाह बाराबंकी में चि.मुकेश जायसवाल के साथ १९९९ में सम्पन्न हुआ। एक*

पुत्र चि.तेपरिवन है।]

तृतीय नतिनी कु. सोनी मृदुभाषिणी है तथा अध्ययन में विशेष रुचि रखती है। बी.काम. करके कम्प्यूटर का कोर्स कलकत्ता में कर रही है। वह एक जिम्मेदार लड़की है, वह अपने जीवन में सफल रहेगी ऐसा मेरा विश्वास है। *[इसने बी.एस-सी.की परीक्षा उत्तीर्ण की है, कम्प्यूटर में दक्षता प्राप्त कर ली है।]*

चि. विद्योत्तमा का एक पुत्र और मेरा एकमात्र नाती चि. सौरभ कुमार सीधा-सादा चंचल प्रवृत्ति का बालक है, अभी कक्षा आठ में अध्ययन कर रहा है। *[चि. सौरभ बी.काम. करने के पश्चात व्यवसाय कर रहे हैं।]*

ईश्वर, विद्योत्तमा तथा उसके परिवार को दीर्घायु करे तथा सभी स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहें। मेरा सभी को आशीर्वाद है।

मेरी अन्तिम सन्तान श्रीमती राजकुमारी है। उसने एम.ए. तक लखनऊ विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की है। बहुंत ही भोली-भाली निश्छल स्वभाव की महिला है, उसमें अभी बाल-बुद्धि जैसी बुद्धि है, पूरे परिवार से उसको प्रेम है। सबके दुःख-सुख में सम्मिलित होती है। उसका विवाह संस्कार जौनपुर निवासी अलंकार के प्रमुख व्यवसायी सम्मानित परिवार में बाबू राधेश्याम गुपत के द्वितीय पुत्र डा. रमेशचन्द गुप्त एम.बी.बी.एस. एम.एस. (आर्थोपैडिक) के साथ २५ फरवरी १९७० को वैदिक रीत्यनुसार टाण्डा में सम्पन्न हुआ था। हमारा सारा परिवार इस शादी से अतिप्रसन्न था किन्तु विधि का विधान, तथा उस लड़की का भाग्य जिसे पारिवारिक सुख प्राप्त नहीं हुआ, जिससे हमारा परिवार दुखी है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वे मेरे दामाद डा. रमेश को सद्‌बुद्धि प्रदान करें, जिससे मैं अपने एकमात्र इस दुःख से शान्ति प्राप्त कर सकूं। मेरा आशीर्वाद उन दोनों के सुखी-जीवन के साथ है। चि.राजकुमारी टाण्डा के समीप रहती है अतः हमलोगों के सुख-दुःख में तुरन्तु उपस्थित हो जाती है और हम लोगों को उससे बहुत सहारा मिलता है। अपनी माताजी का वह विशेष ध्यान रखती है।

इस तरह मेरी सन्तानें मेरे अनुरूप और सभी का हम पति-पत्नी के प्रति परमस्नेह एवं श्रद्धा है। हमलोगों की समस्त शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद अपने पुत्रों तथा पुत्रियों एवं उनके परिवार के साथ है।

परमात्मा मेरे सभी बच्चों को दूध-पूत से सम्पन्न रखे तथा सभी शतायु हों, यही मेरी हार्दिक कामना है।

परम पिता की असीम कृपा है कि आज ८८ वर्ष की आयु में भी मैं नित्य संध्योपासना, यज्ञ करता हूं तथा समाचार-पत्र आदि पढ़ लेता हूं। अभी भी आर्यसमाज तथा स्कूल के कार्य में अपने को व्यस्त रखता हूं, और मेरा सौभाग्य है कि मेरी धर्मपत्नी जी मेरे जीवन में अपना पूर्ण योगदान करती चली आ रही हैं। इन शब्दों से पूर्ण शान्ति एवं विश्वास के साथ मैं अपने जीवन के प्रथम अध्याय को यहीं पर समाप्त करता हूं।

[द्रष्टव्य - पिताजी का निधन २८ दिसम्बर १६६० ई. को टाण्डा में हो गया। प्रातःकाल नित्यकर्म करने के पश्चात् यज्ञ पर बैठे, पूरा यज्ञ नहीं कर पाये, बगल में खाट पर लेट गये। माताजी उनका अल्पाहार तैयार कर रही थीं। माताजी, जिनको वह नन्दू नाम से सम्बोधित करते थे, पुकारा। वह तत्काल ही पहुंच गईं, कुछ ही क्षण में ओ३म्, ओ३म् का उच्चारण करते रहे और देखते ही देखते प्राण पखेरू उड़ गये।]

●●●

धर्म-क्षेत्र

धर्म-क्षेत्रं

प्रथम अध्याय में प्रसंगवश मेरे जीवन की धार्मिक मान्यताओं का वर्णन हुआ है, उसके अनुसार मेरे पितामह श्री रग्घूराम जी तथा मेरे पिताश्री गयाप्रसाद जी कट्टर आर्यसमाजी थे और उन्हें उस समय की जातीय, सामाजिक व्यवस्था की विषम कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, किन्तु पिताजी अडिग रहे, और उनके वैदिक संस्कारों का प्रभाव हमारे पूरे परिवार पर छा गया। परिवार में संध्योपासना, यज्ञ, ऋषि दयानन्द प्रणीत 'संस्कार- विधि' के अनुसार नित्य होता था तथा अन्य संस्कार समय-समय पर वैदिक विद्वानों के द्वारा सम्पन्न होते थे। मेरी आस्था बाल्यकाल से ही कर्मकाण्ड में थी। ईश्वर की महती कृपा से आज ८८ वर्ष की आयु में भी उसी निष्ठा एवं विश्वास के साथ मेरी पत्नी और मैं, नित्य संध्योपासना और यज्ञ करते आ रहे हैं। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है इस कर्म को नित्य करने की शक्ति प्रभु मेरे जीवन पर्यन्त मुझको प्रदान करता रहे। कर्मकाण्ड के प्रति आस्था मेरे सम्पूर्ण परिवार की धरोहर है।

मेरे धार्मिक कार्यों की जननी आर्यसमाज है। आर्यसमाज जैसी पावन संस्था जिसके सिद्धान्तों ने मेरे जीवन को प्रभावित किया है तथा दिशा प्रदान की है, वह आर्यसमाज क्या है? तथा उसकी मान्यताएं क्या हैं? इसकी विवेचना संक्षेप में करना आवश्यक है जो कि मेरे मतानुसार इस भांति है-

आर्यसमाज न धर्म है और न सम्प्रदाय। आर्यसमाज मतमतान्तरों से परे वेदानुकूल मानव धर्म के मूल एवं सार्वभौम सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने वाली एक क्रान्ति है, एक आन्दोलन है, जिसका मूल स्रोत वेद है। वेद सृष्टि के आदि में चार ऋषियों के हृदयाकाश में प्रकाशित ईश्वर प्रदत्त शाश्वत-ज्ञान है। 'वेद' सनातन हैं। जिस प्रकार

भौतिक बाह्य जगत् को सूर्य प्रकाशित करता है उसी प्रकार मानव के आध्यात्मिक जीवन को वेद प्रकाशित करते हैं। जैसे सूर्य के अस्त हो जाने पर संसार अंधकारयुक्त हो जाता है उसी प्रकार वेद के विमुख होने पर मानव अज्ञान के अंधेरे में लुप्त हो रहा था, सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही थी, अविद्या, अन्याय का ताण्डव नृत्य हो रहा था। प्रमाद, आलस्य एवं स्वार्थ का बोलबाला था, जिसका परिणाम भयंकर विध्वंसकारी महाभारत का युद्ध हुआ।

'महाभारत' युद्ध के पश्चात विश्व में जो विघटनकारी तत्त्व उत्पन्न हुये उनमें पुराणों का प्रमुख स्थान है और उससे असंख्य मतवादों ने जन्म लिया। संसार में भेदभाव, रागद्वेष, संकीर्णता, घृणा, अस्पृश्यता, अन्याय, दुर्व्यवहार, चरित्रहीनता एवं मनोविकार उत्पन्न होना, धर्म के बिगड़े रूप का ही फल है। वैदिक ऋषियों ने जहां मानवजाति के विकास एवं उत्थान के मूलाधार 'वर्णाश्रम व्यवस्था' का आधार गुण, कर्म और स्वभाव को माना था, वहां इन मतवादियों ने जन्म को आधार मान लिया और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र जन्म से माने जाने लगे। अस्तु मानव समाज में ऊंच-नीच अस्पृश्यता आदि दोष उत्पन्न हो गये तथा समाज कुरीतियों से पीड़ित हो गया। सम्पूर्ण देश राजा-महराजों, रियासतों में बंटा हुआ था, सभी में आपसी मतभेद चरमसीमा पर था जिसका लाभ ब्रिटिश अंग्रेजी सरकार ने उठाया तथा व्यापार की दृष्टि से भारत में पदार्पण करके सम्पूर्ण भारत के शासक बन बैठे। अंग्रेजों ने भी हमारी बची खुची संस्कृति और सभ्यता को जी भर के रौंदा, क्रूरता तथा बर्बरतापूर्ण ढंग से शासन किया। ऐसी विकट स्थिति में युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का आविर्भाव हुआ। इन्हीं कुरीतियों एवं अवैदिक मान्यताओं को समाप्त करने और जन-जन में वैदिक ज्ञान-गंगा को उसके विशुद्ध रूप में प्रवाहित करने के लिये ऋषि ने, आज से लगभग ११६ वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला पंचमी सम्वत् १९३२ वि. शनिवार तदनुसार १० अप्रैल १८७५ ई. को बम्बई नगर के गिरगांव मुहल्ले में डा.माणिकराव जी की वाटिका में सायं ५ बजे यज्ञोपरान्त 'आर्य समाज' नामक संस्था को स्थापित किया।

महर्षि ने आर्यसमाज के उद्देश्य एवं सिद्धान्त किसी देशकाल विशेष के लिए नहीं बनाये। वह एक दूरदर्शी महात्मा थे, उनके मस्तिष्क में सम्पूर्ण जगत के मानवमात्र के कल्याण की परिकल्पना थी, उन्होंने

कृण्वन्तो विश्वमार्यम का उद्घोष किया। सम्पूर्ण जगत को आर्य यानी श्रेष्ठ बनाओ। इस तरह आर्यसमाज एक विश्वजनीन एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना तथा संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करना। आर्यसमाज की दृष्टि में मनुष्य को केवल अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये बल्कि सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिये। आर्यसमाज के नियम एवं सिद्धान्त आज के भौतिक विज्ञान के युग में भी अकाट्य हैं। आर्यसमाज विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार, रूढ़िवादिता, जातिवाद एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए कृत संकल्प है।

आर्य समाज टाण्डा : एक परिचय

आर्य समाज टाण्डा (फैजाबाद) को स्थापित हुए ९८ वर्ष (सन् १९९० में) हो गये हैं और इसका स्वयं का अपना इतिहास है। इस अवधि में, इस समाज के द्वारा, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा शिक्षा के क्षेत्र में जो अद्भुत एवं उल्लेखनीय कार्य हुये हैं, उस पर प्रकाश डालने के लिए अलग से एक ग्रन्थ लिखे जाने की आवश्यकता है, किन्तु यहां पर मैं आर्य समाज टाण्डा का एक लघु परिचय अपनी स्मृति के अनुसार देना समीचीन समझता हूं।

आर्य समाज टाण्डा के प्रारम्भिक इतिहास के पृष्ठों में मेरे ताऊ स्व.रामदासजी आर्य का नाम अपने सुकृत्यों के लिये अमर रहेगा जिन्होंने एक हजार की धनराशि देकर सन् १९१० ई में आर्यसमाज मंदिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया था। उनकी प्रेरणा के स्रोत थे पं. तुलसीराम तथा भजनोपदेशक श्री भजनानन्द। उन्हीं विद्वानों के उपदेशों से प्रभावित होकर स्व. महाशय बच्चूलाल जी आर्यसमाज में प्रविष्ट हुये थे और उन सबकी प्रेरणा एवं कर्मठता का फल है आर्य समाज टाण्डा, जिनके महान उपकारों को भुलाया नहीं जा सकता। आर्यसमाज की उन महान् विभूतियों का संक्षिप्त वर्णन अगले पृष्ठों में करूंगा।

आर्य समाज टाण्डा द्वारा मानव के सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। पर्वों को उनकी महत्ता एवं मर्यादा के अनुरूप मनाया जाता है जिनमें-रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी श्रावणी

उपाकर्म रक्षाबन्धन, विजयादशमी, दीपावली, होलिकोत्सव तथा शिवरात्रि (बोधरात्रि) प्रमुख हैं तथा प्रीतिभोज का आयोजन किया जाता है जिसका व्यापक प्रभाव जन-समाज पर पड़ता है। समाज में व्याप्त कुरीतियों का खण्डन एवं वैदिक परम्परा का दिग्दर्शन कराना इस समाज का मुख्य कार्य है। शुद्धि-आन्दोलन का कार्य इस समाज की प्राथमिकता है, अनेकों लोग शुद्ध होकर आर्यसमाज में प्रविष्ट हुये हैं तथा आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज टाण्डा द्वारा नारी-जागरण एवं नारी उत्थान के लिए किया गया कार्य आर्यजगत् के लिये अनुकरणीय है। टाण्डा में लगभग ४५ वर्ष पूर्व कन्याओं के लिए एक पाठशाला की स्थापना हुई थी, जो कि आज इन्टरमीडिएट कालेज के रूप में विद्यमान है और जिसमें आज २७०० कन्यायें जिनमें हिन्दू, मुस्लिम तथा सिक्ख समुदाय सभी सम्मिलित है, शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। टाण्डा नगर को, कन्याओं के इस विद्यालय का श्रेय आर्यसमाज को ही है, जिसकी विशेषता है कि यह कालेज आर्य सिद्धान्तों के अनुकूल नित्य प्रार्थना, साप्ताहिक सामूहिक यज्ञ तथा सत्संग एवं धार्मिक शिक्षा के साथ निरन्तर देश एवं मानव जाति की सेवा में अग्रसर है। विद्यालय का अनुशासन एवं परीक्षाफल समूचे प्रदेश में अपना स्थान रखता है। इस विद्यालय को स्थापित करने एवं उसका संचालन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त है, तथा प्रारम्भ से आज तक सभी बन्धुओं एवं विद्यालय परिवार के सहयोग से उसका प्रबन्ध कार्य देखता चला आ रहा हूं। एक तरफ जहां बालिकाओं के उत्थान के लिए आर्यसमाज प्रयत्नशील है, वहीं दूसरी तरफ नन्हें-मुन्ने बालकों के लिए आर्यसमाज मंदिर परिसर में ही दयानन्द बाल विद्या मंदिर के नाम से एक विद्यालय मेरी ही देख-रेख में चल रहा है। इसके अतिरिक्त टाण्डा से ५ किलोमीटर दूरी पर वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल रजौर स्थित है जिसके मुख्याधिष्ठाता (व्यवस्थापक) के रूप में मैं लगभग २५ वर्षों से उस संस्था से जुड़ा रहा और अभी तीन वर्ष पूर्व अपने स्वास्थ्य के कारण उससे मुक्त हुआ हूं। इस तरह शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज टाण्डा की देन इतिहास के पन्नों में अविस्मरणीय रहेगी।

आर्य समाज टाण्डा द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार निरन्तर हो रहा है, साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से आर्यसमाज

मंदिर में होता है। वार्षिकात्सव अपने निश्चित समय से प्रति वर्ष होताआ रहा है जिसकी ख्याति दूर-दूर तक हुई। आर्य समाज टाण्डा का सौभाग्य है कि उसे प्रारम्भ से श्री बच्चूलाल जी, श्री कन्हैयालाल चौधरी जैसे अध्ययनशील वाक्पटुता के धनी एवं कर्मठ मंत्री प्रापत हुये थे और वर्तमान में भी श्री विज्ञमित्र शास्त्री जैसे विद्वान् आर्य समाज टाण्डा के मंत्री हैं जिनकी देख-रेख में आर्य समाज टाण्डा के सारे कार्यक्रम पूरी गति के साथ सुचारु रूप से चल रहे हैं। टाण्डा नगर के निवासी आर्यसमाज के प्रति श्रद्धावान् हैं। समाज के अधिकारी एवं सदस्यों में सामंजस्य है तथा समाज के सभी कार्यों के प्रति सबमें पूरी श्रद्धा एवं भक्ति है। सभी के प्रेम एवं सहयोग के आधार पर मैं आर्य समाज टाण्डा के विभिन्न पदों पर रहते हुए लगभग ५० वर्षों से निरन्तर प्रधान पद का कार्यभार संभाल रहा हूं।

दिवंगत विभूतियां : एक स्मरण

आर्य समाज टाण्डा की दिवंगत विभूतियों का स्मरण उसके उज्ज्वल इतिहास में सुरक्षित एवं स्मरणीय रहेगा और जिनपर हमें गर्व है, उनका योगदान इस समाज की धरोहर है। मैं संक्षेप में उन विभूतियों का वर्णन करना उचित समझता हूं।

आर्य समाज टाण्डा के प्रारम्भिक इतिहास के पृष्ठों में मेरे ताऊ स्व. श्री रामदास जी आर्य का नाम अपने सुकृत्यों के लिए अमर रहेगा जिन्होंने उस समय एक सहस्र की धनराशि देकर आर्यसमाज मंदिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया था।

तत्कालीन आर्य जगत के विद्वानों में पं.तुलसीराम जी तथा भजनोपदेशक श्री भजनानन्द की प्रेरणा का ही फल है, टाण्डा का आर्यसमाज, जिनके उपकारों को भुलाया नहीं जा सकता।

स्वर्गीय महाशय बच्चूलाल जी भी पूज्य पंडित तुलसीराम जी द्वारा प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रविष्ट हुये थे। महाशयजी एक त्यागी, तपस्वी, स्वाध्यायी एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे। उनके अथक परिश्रम से उनके नेतृत्व में आर्य समाज टाण्डा की सर्वांगीण प्रगति हुई है, आर्यसमाज मंदिर का निर्माण उन्हीं की देन है। आप सच्चे आर्यनेता के साथ बाइबिल, कुरान, पुराण और वेदान्त के अच्छे ज्ञाता थे। उनकी वाक्पटुता भी प्रसिद्ध थी और एक अच्छे प्रचारक का काम करते थे।

वह एक सफल व्यवसायी होते हुए भी आर्य समाज के प्रति समर्पित थे। आपके त्याग व तपस्या का सच्चा प्रतीक वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल, राजौर है, जिसका निर्माण बच्चूलाल जी ने अपनी भूमि पर अपनी धनराशि से करवाया था जो कि आज भी चल रहा है तथा आपके परिवार के लोग इस संस्था के प्रति निष्ठावान हैं। महाशय जी की अमर कृतियां सदैव आर्य समाज टाण्डा के लोगों को प्रेरणा प्रदान करती रहेंगी।

स्वर्गीय कन्हैयालाल जी चौधरी आर्य समाज टाण्डा के प्राण थे। उनका अगाध अध्ययन, उनकी वाक्पटुता, उनकी विद्वत्ता तथा उसको जनसाधारण के बीच हृदयंगम कराने की कुशलता को कैसे भुलाया जा सकता है? उन्होंने अपने जीवनपर्यन्त आर्यसमाज की सेवा की है तथा एक लम्बे समय तक आर्य समाज टाण्डा के मंत्री पद को सुशोभित किया है।

आर्य समाज टाण्डा को, स्व. पं. रामप्रसादजी उर्फ शीलू महाराज तथा उनके परिवार का सदैव सहयोग प्राप्त रहा। वह पौराणिक ब्राह्मण होते हुए भी आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति पूरे निष्ठावान थे तथा कर्मकाण्ड के अच्छे ज्ञाता थे। परिवारों में यज्ञ, विवाह आदि अनुष्ठान आपके द्वारा सम्पन्न होते थे। आपके दोनों पुत्रों - श्री ब्रह्मदेव और श्री विश्वदेव ने गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन से शिक्षा प्राप्त की थी जिनमें श्री विश्वदेव जी को वेद, ईश्वर और महर्षि दयानन्द पर अपार श्रद्धा एवं भक्ति थी। स्वभाव से वे सरल एवं उदार थे।

स्वर्गीय श्री सुखमंगल जी कर्मठ आर्यसमाजी तथा सक्रिय कार्यकर्ता थे। उनका पूरा परिवार आर्यसमाज में निष्ठा रखता है। उनके पुत्र स्वर्गीय श्री केदारनाथ जी आर्यसमाज के परम भक्त थे। उनके चारों पुत्र - श्री वीरेन्द्र जी, श्री देवेन्द्रकुमार जी (चानूबाबू), श्री नरेन्द्र जी एवं श्री सुरेन्द्र जी तथा उन सबका पूरा परिवार आज भी आर्यसमाज की सेवा में तन, मन तथा धन से सहयोग करता है, उनके परिवार पर आर्य समाज टाण्डा को गर्व है।

स्वर्गीय श्री जवाहरलाल पहलवान एवं उनका समस्त परिवार ऋषिभक्त एवं कट्टर आर्यसमाजी है तथा समाज के समस्त कार्यों में पूरा सहयोग देता है।

आर्य समाज टाण्डा को श्री रामयश जी तथा श्री रामलखन जी जैसे आदर्श भ्राताओं के आशीर्वाद का सौभाग्य प्राप्त है। श्री रामयश जी स्थायी रूप से कलकत्ता में निवास करते थे, किन्तु उनका प्रेमपूर्ण व्यवहार आर्य समाज टाण्डा से निरन्तर बना रहा तथा प्रायः वार्षिकोत्सव के समय टाण्डा पधारते थे। कलकत्ता में भी वह कर्मठ आर्यसेनानी के रूप में समाज की सेवामें सदा तत्पर रहते थे, बहुत वर्षों तक उन्होंने आर्यसमाज कलकत्ता के कोषाध्यक्ष पद का भार बहुत ही उत्तरदायित्व से निभाया था। उनकी पत्नी तथा सभी पुत्र पक्के आर्यसमाजी हैं तथा समाज के कार्यों में सक्रिय भाग लेते हैं। उनके लघु भ्राता श्री रामलखन जी उदार प्रवृत्ति तथा सौम्य स्वभाव के धनी, कर्मठ आर्यसमाजी एवं कार्यकर्ता थे। वे विद्वानों तथा संन्यासियों का आदर सत्कार करते थे। आर्यसमाज तथा उससे सम्बन्धित संस्थाओं के प्रति प्रेम रखते थे तथा उसके विभिन्न पदों पर रहकर अपने जीवन पर्यन्त उसकी सेवा में तत्पर रहते थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुन्दरी देवी आज भी आपके समस्त आदर्शों का पालन करते हुए आर्यसमाज की सेवा में सदैव लगी रहती हैं। यज्ञ में विशेष श्रद्धा रखती हैं। विद्वानों के आदर-सत्कार में उनकी रूचि प्रशंसनीय है। वह एक धर्मप्रेमी, स्वाध्यायशील एवं ईश्वरभक्त स्वाध्यायशील आर्य देवी हैं। उनका एकमात्र पुत्र चि. ज्योतिप्रकाश भी अपने माता-पिता के पदचिन्हों पर चलने वाला एक कर्मठ बालक है।

पं. महादेव प्रसाद जी, महाशय यशोदानन्दनजी, श्री जवाहर पहलवान के भ्राता श्री हीरालाल जी, श्री रामचन्द्र आर्य, श्री लालजी, श्री रामआसरे जी लेखपाल, श्री बेनीमाधव जी, पं. बद्रीप्रसाद मिश्र (स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती) मुबारकपुर, श्री रामलालजी आर्य आदि प्रमुख विभूतियां थीं जिनका संस्मरण मेरे मानस पटल पर सदैव छाया रहता है। इसके अरिरिक्त जिन दिवंगत आर्य बन्धुओं का स्मरण नहीं हो रहा है उनके प्रति तथा समस्त आर्य विभूतियों के प्रति मैं नतमस्तक हूं तथा अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

आर्य समाज टाण्डा के वर्तमान कर्णधार

वर्तमान में, आर्य समाज टाण्डा के प्रमुख सदस्यों में श्री विज्ञमित्र जी शास्त्री, श्री जगदीश नारायण सिंह, श्री रामकर्ण जी वैद्य, श्री शम्भूनाथ आर्य, श्री लक्ष्मीशंकर गुप्त, श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य (बिल्लूबाबू), श्री देवेन्द्रकुमार आर्य (चानूबाबू), श्री रामदेव आर्य (मुनीम जी), श्री

घनश्यामजी आर्य, श्री रामबहोर जी, श्री विश्वनाथ, श्री जगदीश प्रसाद वैद्य, श्री ओमप्रकाश साहू (साहू स्टूडियो), श्री कृष्णकुमार आर्य (मिट्ठूबाबू), श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री मनोजकुमार आर्य, श्री मास्टर भगौतीप्रसाद जी आदि हैं जिन पर आर्य समाज टाण्डा को गर्व है। श्री विज्ञमित्र शास्त्री आर्य समाज टाण्डा के मन्त्रीपद का भार संभालते हुए आचार्य पद का दायित्व भी संभाल रहे हैं। आप पूज्यपाद स्वामी त्यागानन्द सरस्वती संस्थापक निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के सुयोग्य शिष्यों में हैं। आपके सानिध्य में कई कार्यकर्ता तैयार हुए हैं जो आर्यसमाज का कार्य कर रहे हैं। पं. देवनारायण पाठक जैसे कर्मशील, कर्तव्यपरायण कर्मठ आर्यसमाजी विद्वान् का सान्निध्य आर्य समाज टाण्डा को प्राप्त है।

अपने जीवन के शेष भाग में आर्यसमाज के वर्तमान आर्य बन्धुओं से पूर्ण सन्तोष अनुभव करता हूं एवं आशान्वित हूं कि आर्य समाज टाण्डा इनके हाथों में सुरक्षित है तथा उसकी गतिविधियां और प्रचार कार्य पूर्ववत् चलता रहेगा। प्रायः सभी मेरे पुत्रवत् हैं, प्रभु सबको वह शक्ति प्रदान करे जिससे वह सदैव आर्यसमाज की सेवा करते हुए अपने कर्तव्य का पालन कर सकें। इन शव्दों के साथ सभी को मेरा आशीर्वाद।

महिला आर्य समाज टाण्डा

आर्य समाज टाण्डा के अन्तर्गत महिला आर्यसमाज पूर्ण रूप से सक्रिय है। इसकी स्थापना आर्य समाज टाण्डा की हीरक जयन्ती सन् १९६५ के पश्चात हुई थी, तबसे निरन्तर नारी जाति के उत्थान एवं जागरण हेतु स्त्री आर्यसमाज, इस क्षेत्र में कार्यरत है। प्रत्येक रविवार को सायं इसका साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से होता है। सत्संग में अच्छी उपस्थिति होती है। वर्तमान में मेरी पत्नी श्रीमती रामप्यारी देवी प्रधाना हैं तथा स्वर्गीय श्री रामलखन जी की पत्नी श्रीमती सुन्दरा देवी महिला समाज की मंत्राणी हैं। आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में प्रत्येक वर्ष एक न एक विदुषी महिला को अवश्य आमंत्रित किया जाता है तथा महिला सम्मेलन का आयोजन निश्चित रूप से होता है, जिसमें डा. प्रज्ञा देवी, डा. सावित्री देवी शर्मा, डा. पुष्पावती, डा. सविता देवी, श्रीमती वेदवती, डा. शान्तिदेव बाला आदि आर्यजगत्की महान् विभूतियां टाण्डा पधार कर अपने उपदेशों से इस क्षेत्र की नारी जाति को

उद्‌बोधित करती हैं।

मानव समाज में नारी जाति के प्रति अन्याय, अत्याचार, असमानता का व्यवहार देखकर महर्षि दयानन्द अत्यन्त दुःखी थे। उन्होंने सभी मतवादों पर प्रहार किया तथा वेद और मनुस्मृति के अनुरूप नारी जाति एवं दलित जनों का उद्धार करके उन्हें समाज में उचित अधिकार दिलाया तथा सम्मानित किया। महर्षि ने मनुस्मृति के ब्रह्मवाक्य को साकार कर दिखाया :

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।"

अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है उन्हें सम्मान दिया जाता है, वहां देवताओं का, सज्जनों का निवास होता है।

इस तरह महर्षि के उपकारों को नारी जगत् कभी भी नहीं भुला सकता। टाण्डा का महिला आर्यसमाज उन आदर्शों पर अक्षरशः चल रहा है, उससे मुझे पूर्ण सन्तोष है, आशा है भविष्य में भी इसी तरह इसका संचालन होता रहेगा।

●●●

राजनीतिक-क्षितिज
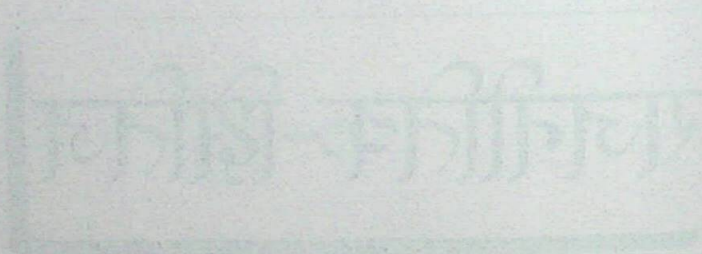
राजनीतिक-क्षितिज

मेरे जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध राजनीति से रहा है। टाण्डा में शिक्षा का साधन सीमित था जिससे अधिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका, जो उपलब्ध था, वहां तक शिक्षा प्राप्त करके राजनीति में प्रविष्ट हो गया। उस समय भारतीयों का एक मात्र लक्ष्य भारत से अंग्रेजी शासन को हटाना था। देश प्रेम की इस भावना से ओतप्रोत सभी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जुट गये, जिसमें आर्यसमाज की मुख्य भूमिका थी।

आर्यसमाज की स्थापना उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सन् १८७५ ई में बम्वई महानगरी में हो चुकी थी। महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मनुस्मृति के इस श्लोक को उद्धृत किया है, जिससे देश की राजनीति के प्रति स्वामी जी की रुचि तथा पीड़ा का बोध होता है-

सर्वं परवशं दुःखं
सर्वामात्मवशं सुखम्।
एतद्विद्यात् समासेन
लक्षणं सुखदुःखयोः।।

अर्थात् पराधीनता सबसे बड़ा दुःख और स्वाधीनता सबसे बड़ा सुख है। ऋषि ने यहां तक कहा कि विदेशी राज्य, किसी देश की जनता को पुत्र तुल्य भी रखे, तो भी अपने देश के राज्य की तुलना नहीं कर सकता। स्वामी जी के इन विचारों ने मुझे देश-स्वतंत्रता की भावना को और भी शक्ति प्रदान की, और मैं क्रान्ति की ओर अग्रसर हो गया।

भारत, सदियों से मुस्लिम और अंग्रेजी प्रशासन के कुचक्र से पीड़ित था। दोनों सभ्यताओं ने भारत की प्राचीन संस्कृति एवं उसकी मर्यादा को प्रायः नष्ट कर दिया था। महर्षि दयानन्द ने भारतीयों को

देश-प्रेम की भावना से जगा दिया था जिसका परिणाम हुआ कि सर्वत्र अंग्रेजो और ब्रिटिश प्रशासन के प्रति क्रोध एवं प्रतिशोध की भावना जाग उठी। देश की स्वतंत्रता हेतु, भारत माँ के लाल, ललनायें, हिन्दू , मुसलमान तथा सिक्ख नर-नारी बाल वृद्ध युवक, सन्त महात्मा, विद्वान एवं किसान सभी स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपनी बलि देने को उत्सुक हो गये। सम्पूर्ण भारत में स्वतंत्रता का स्वर गूंज उठा।

ए.ओ.ह्यूम नामक एक अंग्रेज के सौजन्य से सन् १८८५ में कांग्रेस की स्थापना हुई थी। प्रारम्भ में इस संस्था की नीति ब्रिटिश शासकों के प्रति सहयोग, ईमानदारी और विश्वास पर आधारित थी किन्तु जब अंग्रेज शासकों की दुर्नीति और धूर्तता समझ में आयी तब से उसके नेतागण सम्पूर्ण भारत में आन्दोलनो, सत्याग्रहों एवं अन्य साधनों से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील हो उठे तथा कांग्रेस का नेतृत्व जबसे महात्मा गांधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि कर्मठ नेताओं ने संभाला, तब से जो क्रान्ति आई उससे सारा देश जागृत एवं सुसंगठित हो गया। उन्हीं दिनों सन् १९१९ में जलियांवाला बाग की हिंसात्मक घटना हुई जिसने मेरे मस्तिष्क एवं हृदय को बहुत प्रभावित किया और मैंने अमृतसर, लाहौर आदि स्थानों पर हो रहे कांग्रेस के अधिवेशनों में भाग लिया और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में प्रत्यक्ष रूप से कार्य करने लगा। टाण्डा नगरी में महात्मा गांधी, पं.जवाहरलाल नेहरू, सरोजनी नायडू, श्री पुरुषोत्तम दास टंडन, आचार्य नरेन्द्रदेव, आचार्य कृपलानी आदि भारत की महा विभूतियां सन् १९२० से १९२८ तक बराबर आती रहीं। मेरे प्रयास से सन् १९२८ में गांधी जी का भाषण आर्यसमाज टाण्डा में हुआ था।

कारावास का दण्ड

सन् १९२५ से १९३० तक की अवधि में देशहित और आर्यसमाज के कार्यों में पूर्ण निष्ठा और लगन से जुट गया। सम्पूर्ण स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्यसमाज की मुख्य भूमिका रही है और यह ऐतिहासिक तथ्य है कि ७५ प्रतिशत स्वतंत्रता सेनानी आर्यसमाजी थ। आर्यसमाज ने अपनी पूरी शक्ति देश की स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दी थी। ब्रिटिश प्रशासन की दृष्टि में आर्यसमाज सबसे बड़ा शत्रु था तथा आर्यसमाजी प्रत्यक्ष रूप से बागी समझे जाते थे। आर्यसमाजियों पर

शासन के भयंकर प्रहार हो रहे थे, छापे डाले जाते थे और गिरफ्तारियां हो रही थीं। सन् १९३० में मद्य-निषेध आन्दोलन चल रहा था। अस्तु, उसी आरोप में सरकार ने मुझे बन्दी बनाकर धारा ४ के अन्तर्गत २३ सितम्बर १९३० ई. को जेल भेज दिया और मुझे ६ मास कारावास और एक सौ रुपये का दण्ड भुगतना पड़ा। श्री सीताराम वर्मा (ग्राम फतेहपुर), श्री लल्लन बाबू (टाण्डा) और मौलवी मो. बशीर (पुन्थर) आदि मेरे तत्कालीन कारावास के साथी थे। मुझे प्रथम, फैजाबाद कारागार में, बाद में गोंडा कारागार में स्थानांतरित कर दिया गया। कारावास की अवधि समाप्त करके मैं टाण्डा आ गया और पूरे जोश से आर्यसमाज तथा देशसेवा के कार्यों में जुट गया। अंग्रेजी सरकार एवं प्रशासन का व्यवहार दिन-प्रतिदिन कठोर एवं क्रूर होता गया।

किन्तु, दीर्घकालीन स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् १५ अगस्त १९४७ ई. को भारत स्वतन्त्र हुआ। यह स्वतंत्रता असंख्य बलिदानों के फलस्वरूप देश को विभाजन के साथ प्राप्त हुई तथा इसके पूर्व जगह-जगह साम्प्रदायिक दंगे हुये जिसकी भयंकरता अवर्णनीय है। देश के दो टुकड़े हो जाने से हिन्दू मुसलमान सद्भाव नहीं रह सका जिसका परिणाम आज भी देशवासियों को भुगतना पड़ रहा है। मेरी दृष्टि में धर्म और राजनीति का घनिष्ठ संबन्ध है। धर्म के अभाव में राजनीति अन्धी है और राजनीति के अभाव में धर्म लंगड़ा है। अतः राष्ट्र को सार्वजनीन-धर्मप्रेरित राजनीति की आवश्यकता है। धर्म का अर्थ है धारण करने की शक्ति। जिस मान्यता से हमारा वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय उत्थान हो, उस आधार पर राजनीति की नींव होनी चाहिए थी, और उसके द्वारा लोकतांत्रितक व्यवस्था का परिचलन। किन्तु देश का दुर्भाग्य है कि ऐसा न होकर धर्मनिरपेक्ष राजनीति की व्यवस्था के अनुसार भारतवर्ष का शासन लोकतंत्रात्मक प्रणाली से प्रारम्भ हुआ, जिससे सर्वत्र सम्प्रदाय का प्रभुत्व बढ़ा ओर सम्प्रदायवादियों को ही शासन से बल मिला। राजनैतिक नेताओं ने अपनी-अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए जातिवाद, आरक्षण, भाषा-विवाद, मन्दिर-मस्जिद के झगड़ों को बनाये रखा। परिणामस्वरूप देश के नर-नारी आपस में एक दूसरे के शत्रु बने, मित्र नहीं बन सके। जिन राष्ट्र के भक्तों ने राष्ट्रीयता की बात की, उन्हें साम्प्रदायिक होने की संज्ञा दी गयी।

देश की स्वतंत्रता के पूर्व महात्मा गांधी, आचार्य विनोवा भावे सहित अनेकों राजनैतिक नेताओं ने देश में गो-माता पर हो रहे

अत्याचार को बन्द करने का वचन दिया था किन्तु खेद है कि आज भी गो-हत्या होती है। समूचे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दीहोगी तथा सभी जाति के लोगों के लिए सामान्य विधि-व्यवस्था शासन का मुख्य कर्तव्य होगा। आज का वर्तमान शासन साम्प्रदायिकता के चंगुल में फंसा हुआ है, उसे कर्तव्य-बोध नहीं है तथा हर प्रान्त जाति के नाम पर अलग-अलग राज्य चाहता है जिसका भयंकर रूप कश्मीर, पंजाब आदि राज्यों में परिलक्षित है, सर्वत्र अशान्ति की लहर दौड़ रही है।

देश की वर्तमान राजनीति से मैं अपने को मुक्त समझता हूं, ऐसी राजनीति से मेरा कोई लगाव नहीं है। ऐसी परिस्थिति में धर्म में आस्था रखने के नाते देश से तो अलग नहीं हो सकता। अस्तु ईश्वर से प्रार्थना है कि वर्तमान देश के कर्णधारों को ईश्वर सद्बुद्धि प्रदान करें ताकि यह भारत ऋषि, मुनियों, राम, कृष्ण एवं धर्मात्माओं के उपदेशों तथा आदर्शों पर चलकर भारत की संस्कृति, सभ्यता को जीवित एवं सुरक्षित रख सके।

●●●

शिक्षा-प्रांगण
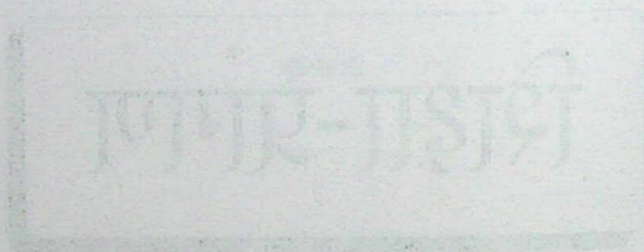
शिक्षा-प्रांगण

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का परमोत्कृष्ट साधन है। देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और उसकी सभ्यता, संस्कृति एवं शिक्षा-प्रणाली नष्ट प्राय थी। अंग्रेजों का भारत के इतिहास को दूषित तथा मौलिकता से परे करने का कुचक्र चल ही रहा था कि महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। ऋषि का ध्यान चतुर्दिक् गया और उन्होंने सभी का अध्ययन-मनन किया। महर्षि ने देश की राजनीति को प्रभावित किया और भारत का प्रत्येक नर-नारी बाल-वृद्ध-युवा जागृत हो गया। स्वामी जी ने देश के अस्त-व्यस्त सामाजिक ढांचे में आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव किया, जिसका मुख्य साधन शिक्षा ही हो सकती थी। अतः उन्होंने आर्यसमाज के दस नियमों में चौथा नियम- 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए' का प्रतिपादन किया।

शिक्षा के प्रति मेरा प्रेम या लगाव मेरे बाल्यकाल से ही था और टाण्डा में साधन उपलब्ध नहीं होने के कारण मैं उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर सका था, इसका उल्लेख मैं प्रथम अध्याय में कर चुका हूं। मैं अधिक शिक्षित न होते हुए भी शिक्षा-सम्बन्धी कार्यों में विशेष रुचि रखता था और आगे जाकर मैंने शिक्षा के प्रचार-प्रसार एवं उसके विस्तार के माध्यम से जनसेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया और जीवन पर्यन्त उसकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहा।

मैंने अपने जीवन के लगभग पचास वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य किया है, उसका संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करना समीचीन समझता हूं। मैं अपने क्षेत्र की निम्नलिखित शिक्षा-संस्थाओं से संस्थापक, प्रबन्धक एवं सदस्य रूप में सम्बन्धित और इस वृद्धावस्था में भी अपनी शक्ति के अनुसार कार्यरत हूं-

१. आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, टाण्डा (फैजाबाद) –संस्थापक एवं प्रवन्धक
२. दयानन्द बाल विद्या मन्दिर, टाण्डा – प्रबंधक
३. होवर्ट त्रिलोकनाथ इन्टरकालेज, टाण्डा – संस्थापक सदस्य
४. त्रिलोकनाथ महाविद्यालय, टाण्डा – संस्थापक सदस्य
५. जनता जूनियर हाईस्कूल, टाण्डा – संस्थापक सदस्य
६. श्रीरामनारायण उच्च माध्यमिक विद्यालय, फूलपुर (टाण्डा) – कार्यवाहक प्रबन्धक
७. कामता प्रसाद सुन्दरलाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साकेत, फैजाबाद – संस्थापक सदस्य
८. गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम रजोर, टाण्डा – मुख्याधिष्ठाता

किसी राष्ट्र और किसी संस्था का इतिहास उसका धरोहर होता है और इतिहास अपने को दोहराता रहता है, इसी उद्देश्य से प्रस्तुत है उपरोक्त शिक्षण संस्थाओं का संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण–

आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, टाण्डा (फैजाबाद)

अंग्रेजी शासन की क्रूरता से, मेरे टाण्डा-निर्वासन की अवधि में, हृदय एवं मस्तिष्क ने जिस चिन्तन को अधिक प्रश्रय दिया, वह था शिक्षा, विशेषकर नारी शिक्षा की आवश्यकता। टाण्डा निर्वासन की समाप्ति के पश्चात घर लौटकर मैंने टाण्डा में कन्या विद्यालय खोलने का दृढ़ निश्चय कर लिया, और इसे साकार रूप देने में प्रयत्नशील हो गया। उस समय मेरे सान्निध्य तथा विश्वासपात्रों में श्री रामयश आर्य (जो कालान्तर में कलकत्ता रहने लगे थे और अब इस संसार में नहीं हैं) थे, उनके साथ मैं कानपुर गया और घुमनीबाजार मोहल्ले में श्री मंहगूराम जायसवाल से सम्पर्क हुआ। मंहगूराम जी उस समय के अच्छे व्यापारी, धनाढ्य एवं सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। हमलोगों ने टाण्डा में एक कन्या विद्यालय प्रारम्भ करने का निश्चय उनके समक्ष प्रस्तुत किया, उन्होंने इस निवेदन को सहर्ष स्वीकार किया तथा दस हजार रुपये की धनराशि देकर टाण्डा में आर्य कन्या पाठशाला खोलने को कार्यरूप में परिणित कर दिया। उनके इस उपकार को टाण्डा निवासी कभी नहीं भुला सकेंगे। उस समय हमने श्री

मंहगूराम जी से रुपये नहीं लिए, क्योंकि संस्था की पूर्व योजना जो मेरे मस्तिष्क में थी उसके लिये विचार-विमर्श तथा कमेटी गठित करना और उसकी स्वीकृति से उसे प्रारूप देना आवश्यक कार्य था, अतः हमलोग टाण्डा वापस आ गये।

आर्य कन्या विद्यालय : स्थापना हेतु विचार-विमर्श

टाण्डा में माननीय सज्जनों से विचार-विमर्श प्रारम्भ कर दिया जिसमें सभी ने मेरे उत्साह को बढ़ाया और यह निश्चय प्रवल होता गया। इस हेतु श्री रामयश जी एवं श्री रामलखन जी के नाना श्री बिन्देश्वरी साहु के मन्दिर में टाण्डा के प्रमुख निवासियों की एक बैठक बुलायी, जिसमें संभवतः निम्नलिखित सज्जन उपस्थित हुए :

१. श्री रामयश आर्य
२. चौ. कन्हैयालाल जी
३. श्री महावीर प्रसाद आर्य
४. श्री सालिग्राम जी (खत्री)
५. श्री मिश्रीलाल आर्य
६. श्री लाल जी

बैठक की कार्यवाही ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के मन्त्रपाठ से प्रारम्भ हुई। मैंने, टाण्डा में बालिकाओं के लिए शिक्षा का प्रबन्ध होने की आवश्यकता पर बल दिया तथा उसकी रूपरेखा प्रस्तुत की, और इसके लिए कानपुर निवासी श्री मंहगूराम जी के शुभविचार तथा उनके दस हजार की राशि देने के आश्वासन को सबके समक्ष रखा। व्यापक विचार विमर्श के पश्चात् सर्वसम्मति से टाण्डा में आर्य कन्या विद्यालय खोलने का निश्चय किया गया। स्कूल के विधिवत् संचालन के लिये विद्या प्रचार संघ की स्थापना की गई और उसक अन्तर्गत आर्य कन्या विद्यालय की कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से मुझे प्रबन्धक का कार्यभार सौंपा गया।

आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना

टाण्डा नगर में, बसन्त पंचमी सन् १९४४ की शुभघड़ी में आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना हो गयी। यह दिवस टाण्डा नगर एवं नारी

जाति के इतिहास में सदैव अमर रहेगा।

श्री मंहगूराम जी से दस हजार की धनराशि प्राप्त हो गई। उनकी इस महती कृपा से संस्था को आर्थिक बल मिला।

विद्यालय, प्रारम्भ करने हेतु स्वर्गीय रायबहादुर श्री त्रिलोकनाथ कपूर ने टाण्डा में स्थित अपना भवन प्रदान किया, जिससे विद्यालय सुचारु रूप से प्रारम्भ हो सका। उनकी इस महती कृपा एवं सहयोग से ही यह कार्य सम्भव हो सका था। रायबहादुर जी टाण्डा नगर की उन प्रतिष्ठित विभूतियों में थे जिनका यश आज टाण्डा में ही नहीं अपितु देश, विदेश के कोने-कोने में फैला हुआ है। उनका विद्या तथा शिक्षा प्रेम संस्कार गत है। जिसका फल है, टाण्डा में शिक्षा का केन्द्र उनकी कृति होवर्ट कालेज, जो उनके मरणोपरान्त होवर्ट त्रिलोकनाथ इन्टर कालेज तथा त्रिलोकनाथ महाविद्यालय के रूप में अद्यावधि विद्यमान है। श्री कपूर जी ने अपने जीवन काल में धर्म, समाज और राष्ट्र की जो सेवा शिक्षा के माध्यम से की है उसका स्मरण टाण्डा नगर का इतिहास चिरकाल तक करता रहेगा। ईश्वर की कृपा से उनके सुपुत्र बाबू सुरेन्द्र नाथ कपूर (दादूबाबू) अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए सरस्वती उपासना (शिक्षा प्रेम) में पूरी तन्मयता से कार्यरत हैं, और उनकी प्रतिष्ठा अपने पिता के समान सर्वत्र व्याप्त है। दादूबाबू का स्वभाव, व्यवहार सौम्य एवं उदार है। मेरे प्रति उनका अगाध प्रेम है, तथा मेरे किसी भी आह्वान पर तन, मन से मेरा सहयोग करते हैं।

इस तरह विद्यालय में कन्याओं का प्रवेश होने लगा और विद्यालय सुचारु रूप से चलने लगा। प्रारम्भ में विद्यालय खोलने में बहुत संघर्ष करना पड़ा। देश पराधीन था, हमारे सामने सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक सभी समस्याएं अपना विकराल रूप धारण किए हुए थीं। सबसे बड़ी समस्या थी कि समाज में प्राचीन प्रचलित परम्परा के क्रूर संस्कारों ने घर कर रखा था और इसके कारण लड़कियों को शिक्षा देना लोग हेय समझते थे, किन्तु ऋषि के सिद्धान्तों पर चलते हुए हमलोगों को इसमें सफलता मिली और लोग अपनी बेटियों को हमारे विद्यालय में भेजने लगे और आज उसमें हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख सभी की बच्चियां शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

आर्य कन्या विद्यालय का स्थानान्तरण

टाण्डा नगर के मध्य में स्थित मिडिल स्कूल जिसमें बालकों के

लिए आठवीं कक्षा तक शिक्षा का साधन, जिला-परिषद् फैजाबाद द्वारा उपलब्ध था, किन्तु उसका रूप व्यवस्थित नहीं था। आर्य कन्या पाठशाला को स्थायित्व प्रदान करने हेतु उक्त स्थान को सुरक्षित एवं बालिकाओं के लिए सुविधाजनक समझ कर उसे जिला-परिषद से प्राप्त करने की चेष्टा प्रारम्भ की गई। इस कार्य में टाण्डा तथा फैजाबाद के हितैषी भद्रजनों का विशेषकर स्व. बाबू जगजीवनदास रईस, श्री भगौतीदीन वर्मा एवं श्री सुरेन्द्रनाथ कपूर के सतत् प्रयासों को भुलाया नहीं जा सकता। हम सभी का प्रयास सफल हुआ, और अन्ततोगत्वा १४ अगस्त सन् १९४७ को उक्त स्थान आर्य कन्या विद्यालय टाण्डा को पूर्णरूपेण प्राप्त हो गया। इसके लिए उस समय का जिला-प्रशासन एवं जिलाधिकारी वर्ग बधाई के पात्र हैं।

भारतवर्ष के इतिहास में १५ अगस्त १९४७ का दिन स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगा, जिस घड़ी में भारतमाता की सदियों से पड़ी बेड़ियां टूटीं, और देश स्वतंत्र हुआ, उसी शुभ घड़ी में आर्य कन्या विद्यालय, परिषदीय विद्यालय भवन में स्थानान्तरित हो गया। उल्लेखनीय है कि आज ४३ वर्ष बाद भी वह भवन ज्यों का त्यों सुरक्षित है तथा अपनी विस्तृत यादों को अपने में संजोए हुए है। इस तरह राष्ट्र के इतिहास के साथ विद्यालय की स्मृतियां सदैव लोगों को प्रेरणा देती रहेंगी। इसके साथ ही कपूर जी के आग्रह पर कन्या पाठशाला का प्रारम्भिक स्थान जिस पर उनके परिवार का स्वामित्व था, उन्हें १५ अगस्त १९४७ को ही सौंप दिया गया।

विद्यालय का विकास

विद्यालय, स्थानान्तरण के पश्चात् अपने निरन्तर प्रयास के विकसित होता गया। विद्यालय के बगल में तथा पीछे विशाल भूमि में तम्बाकू की खेती होती थी उसे क्रय करने में टाण्डा वासियों ने मेरी तन, मन, धन से जो सहायता की है तथा जिन किसानों ने अपनी भूमि विक्रय की है, उसे मैं कभी भुला नहीं सकता और विद्यालय का वर्तमान रूप उस प्रयास का ही फल है। विद्यालय-भवन निर्माण में जिन दानी महानुभावों ने मुक्तहस्त से दान दिया है वे धन्यवाद के पात्र तो हैं ही, उनकी स्मृतियां भी मेरे मानस पटल पर सदैव अंकित हैं।

विद्यालय के विकास में माननीय श्री जयराम वर्मा, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कुशल, ईमानदार एवं कर्मठ राजनीतिज्ञ, तीन दशक

तक विधायक तथा सांसद एवं बीच-बीच में उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री पद पर आसीन रहने वाले सरल स्वभाव के धनी, का सहयोग सराहनीय है। विद्यालय में, समय-समय पर आने वाली छोटी-बड़ी विपत्तियों में उनका जो सहयोग एवं धैर्य प्राप्त होता रहा उसके लिये यह विद्यालय उनका चिर ऋणी है तथा सदैव उनको स्मरण करता रहेगा। उनके आकस्मिक निधन से मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत आघात पहुंचा है, और मैं अपने को अकेला महसूस कर रहा हूं। वह मेरे साथी ही नहीं, मेरे हितैषी तथा शुभचिन्तक भी थे। वह जब टाण्डा आते, मुझसे अवश्य मिलते थे। आज उनकी स्मृति, उनका कृतित्व मेरे मानस पटल पर छाया हुआ है।

इस सन्दर्भ में एक और व्यक्तित्व का वर्णन आवश्यक है, वह है श्री देवीप्रसाद मिश्र (प्रिंसिपल साहब) जो मेरे अभिन्न मित्र एवं सुख दुःख के साथी हैं। विद्यालय के विकास में उनका सर्वांगीण सहयोग अविस्मरणीय है। टाण्डा, होवर्ट त्रिलोकनाथ का, हाईस्कूल से इण्टरमीडिएट तथा उच्चतर विद्यालय का प्रधानाचार्य पद सुशोभित करने वाले, रातदिन उसके तथा कन्या विद्यालय की प्रगति के लिए चिन्तित व्यक्तित्व के गुण, कर्म स्वभाव का कहां तक वर्णन करूं, उनके वर्णन का सामर्थ्य शब्दों में नहीं है, और इधर कई वर्षों से उनकी रुग्णवस्था के कारण उनका सानिध्य भी प्राप्त नहीं कर पा रहा हूं, जो मेरे हृदय को दहला देता है। मिश्राजी की हार्दिक इच्छा आर्य कन्या इण्टर कालेज को भी डिग्री कालेज बनाने की है, इसके लिए वह बराबर प्रोत्साहित करते रहते हैं और उनके प्रोत्साहन के फलस्वरूप ही विद्यालय की कुशल, अनुभवी तथा योग्य प्रधानाचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर ने साहसपूर्वक बिना मान्यता प्राप्त किये ही डिग्री की शिक्षा प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया है। मैं भी अवस्था अधिक होने के कारण असमर्थ होता जा रहा हूं फिर भी यदि वर्माजी का साथ नहीं छूटता तथा मिश्रा जी का स्वास्थ्य ठीक रहता तो यह कन्या विद्यालय अवश्यमेव महाविद्यालय का रूप धारण कर लेता।

वर्तमान में विद्यालय कमेटी के अध्यक्ष बाबू सीताराम आर्य, निवर्तमान मंत्री एवं संस्थापक सदस्य श्री सुरेन्द्रनाथ कपूर (दादूबाबू), उपाध्यक्षा श्रीमती गुणवती ग्रोवर, वर्तमान मंत्री श्री श्रीराम आर्य, श्री विट्ठलास अग्रवाल, श्री वीरेन्द्र कुमार (बिल्लूबाबू), श्री कृष्णदास नागर, श्री हरिराम आर्य, श्री रामदेव आर्य (मुनीमजी), श्रीमती सुन्दरी

देवी (धर्मपत्नी स्व.श्री रामलखन आर्य) एवं मेरे ज्येष्ठ पुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य सहित सभी सदस्य सक्रिय तथा योग्य हैं। मुझे पूर्ण सन्तोष और विश्वास है कि इन लोगों के हाथ में विद्यालय की प्रगति एवं विकास तथा उसका भविष्य निश्चित रूप से उज्ज्वल है। विद्यालय को अभिभावकों का हर सम्भव सहयोग प्राप्त है। नगर के हिन्दू, मुसलमान सहित सभी सम्भ्रान्त नागरिकों की शुभकामनाएं एवं समर्थन विद्यालय के साथ है, सभी का मुझमें विश्वास है, अतः सभी धन्यवाद के पात्र हैं एवं सभी को मेरा आशीर्वाद।

पाठशाला से प्रारम्भ होकर आज विद्यालय इन्टरमीडिएट कालेज पहुंचकर जनता जनार्दन की निरन्तर सेवा में रत है। विद्यालय की सर्वांगीण उन्नति का ध्यान तथा उसकी पूर्ति सीमित साधनों से यथा सम्भव करने का प्रयास किया गया है, और संतोषजनक विकास भी हुआ है जिसकी सफलता आपके समक्ष है। विद्यालय में आज दो हजार से अधिक छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

विद्यालय में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की व्यवस्था

विद्यालय खोलने का उद्देश्य जहां नारी जाति को शिक्षा प्रदान करने का था वहीं उन्हें धर्म का वास्तविक ज्ञान भी देना था जिससे वह अपने जीवन को उसके अनुरूप बना सकें। इसके लिए प्रति शनिवार को यज्ञ, भजन तथा उपदेश की व्यवस्था है जिसमें विद्यालय की सभी कन्याएं सम्मिलित होती हैं ओर विशेषता यह है कि प्रधानाचार्या जी की देख-रेख में समस्त शिक्षकवर्ग की उपस्थिति में सम्पूर्ण कार्यक्रम कन्याओं द्वारा ही सम्पन्न कराये जाते हैं। भारतवर्ष की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृतिका बोध कराया जाता है। गुरु व शिष्य का मधुर सम्बन्ध एवं उसके अनुरूप आचरण इस विद्यालय की विशेषता है। समय-समय पर विद्वानों, मनीषियों के प्रवचन, उपदेशों की व्यवस्था है जिससे हमारी देवियां लाभान्वित होती हैं। नैतिक शिक्षा नियमित रूप से प्रदान की जाती है।

विद्यालय का अनुशासन

ईश्वर की असीम कृपा से विद्यालय का अनुशासन बहुत सुन्दर है, सभी कार्य व्यवस्थित रूप से सम्पन्न होते हैं। शिक्षकवर्ग तथा विद्यालय के प्रशासन में काफी सामंजस्य है। सभी अपने उत्तरदायित्व के

प्रति सजग हैं तथा विद्यालय की मर्यादा को ध्यान में रखकर अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। इस विद्यालय का अनुशासन पूरे क्षेत्र में प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। मुझमें, सभी की आस्था तथा आदर विद्यमान है। मैंने इस विद्यालय को अपना परिवार समझा है, सभी मेरी बेटियां हैं, सभी इस वाटिका की सुन्दर कली हैं, इन्हें विकसित तथा प्रसन्नचित्त देखकर मेरा मन हर्षित होता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि विद्यालय का अनुशासन मेरे जीवनपर्यन्त तथा उसके पश्चात् भी इसीतरह बना रहे।

विद्यालय का परीक्षाफल

विद्यालय के शिक्षक वर्ग के परिश्रम एवं कर्तव्यपरायणता का प्रतिबिम्ब है इस विद्यालय का परीक्षाफल, जो समूचे प्रान्त में अपना उच्च स्थान रखता है। आज के भौतिक युग में, नैतिक शिक्षा के अभाव में, युवा वर्ग दिशाविहीन होकर उच्छृंखल हो गया है जिसकी झलक सर्वत्र व्याप्त है, किन्तु इसका प्रभाव हमारे विद्यालय पर लेशमात्र भी नहीं है और जिसका प्रमाण आपके समक्ष है, इस विद्यालय का परीक्षा फल।

उपर्युक्त शब्दों में विद्यालय के विकास तथा उसकी व्यवस्था का वर्णन हो चुका है किन्तु इस सबके साथ जुड़ी हुई है श्रीमती गुणवती ग्रोवर प्रधानाचार्या का कर्तृत्व, जिनके अथक परिश्रम एवं योग्यता का फल है, आज का वर्तमान आर्य कन्या इण्टर कालेज टाण्डा।

श्रीमती गुणवती ग्रोवर

आर्य कन्या विद्यालय अपनी स्थापना के समय से निरन्तर प्रगति करता आ रहा था किन्तु उसमें योग्य, अनुभवी तथा आर्य विचारों में आस्था रखने वाली प्राचार्या की कमी बनी हुई थी। इसके लिये मैं चिंतित रहता था, क्योंकि योग्य तथा आर्य संस्कृति की पोषक विदुषी के अभाव में, विद्यालय के, निर्माण करने का जो स्वप्न और उद्देश्य मेरे मस्तिष्क में था, उसकी पूर्ति सम्भव नहीं थी। ईश्वर की महती कृपा तथा सौभाग्य से सन् १९६२ में श्रीमती गुणवती ग्रोवर विद्यालय को प्राप्त हुईं। श्रीमती ग्रोवर का आवेदन मुझे प्राप्त हुआ, वह लखनऊ में रहती थीं, उनकी योग्यता पूर्ण थी, और उनके साथ विशेषता थी कि उनकमें आर्य संस्कार भरे हुए थे। उनके पतिदेव डा.ऋषिदेव ग्रोवर

सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के स्नातक एवं आर्य जगतके उच्चकोटि के विद्वान हैं। गुणवती जी को साक्षात्कार के लिए टाण्डा बुलाया गया। साक्षात्कार में वह हर दृष्टि से खरी उतरीं, तथा साक्षात्कार कमेटी का प्रत्येक सदस्य उनके आचार-विचार-व्यवहार एवं योग्यता से सन्तुष्ट था। परिणामस्वरूप उनकी नियुक्ति विद्यालय के प्राचार्या पद पर कर दी गई। किन्तु उनके समक्ष समस्या यह थी कि टाण्डा छोटा नगर है, तथा उनके लिए उचित आवास की व्यवस्था नहीं थी, फिर भी उन्होंने मेरे आग्रह को स्वीकृति प्रदान की और प्राचार्या का कार्यभार ग्रहण कर लिया। उनकी योग्यता, कर्मठता तथा कुशल प्रशासन की क्षमता से विद्यालय की सर्वांगीण प्रगति हुई। विद्यालय के अनुशासन तथा अध्ययन स्तर में आश्चर्यजनक उन्नति हुई। उनके प्रयास से विद्यालय को जो ख्याति मिली उससे इण्टरमीडिएट कक्षायें प्रारम्भ करने में सुविधा हुई, तथा शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त करने में विशेष कठिनाई नहीं उठानी पड़ी। विद्यालय का हाईस्कूल तथ इण्टर का परीक्षाफल निरन्तर उत्तम होता है, तथा प्रदेश में विद्यालय को उच्च स्थान प्राप्त है।

ग्रोवर जी ने २५ वर्ष से अधिक समय तक मेरे विद्यालय की सेवा की है, और मुझे एक क्षण भी ऐसा स्मरण नहीं है कि किसी भी विषय को लेकर मुझसे उनका विवाद हुआ हो। विद्यालय की हर छोटी-बड़ी समस्या का समाधान वह स्वयं कर लेती थीं, जिससे मैं निश्चिन्त रहता था। जिस तत्परता एवं निष्ठा से उन्होंने विद्यालय की सेवा की है वह अनुकरणीय तो है ही, साथ ही साथ अद्वितीय भी है। विद्यालय उनका अपना परिवार था, उस परिवार की वाटिका को सजाने, संवारने में उन्होंने अपना तन, मन, धन सभी कुछ अर्पित कर रखा था। मेरे हृदय में इस बात का कष्ट सदैव बना रहा कि साधन के अभाव में, जो सुविधा प्रबंधक के उन्हें आवास वगैरह की प्राप्त होनी चाहिये थी, नहीं हो सकी। उनके कार्यकाल में मैं जितना सन्तोष एवं निश्चिन्तता अनुभव करता था उसे व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

प्राचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर को उनकी सेवाओं एवं कार्यकुशलता के फलस्वरूप प्रशासन ने उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से सुशोभित किया, ऐसा करके प्रशासन ने अपने कर्तव्य का पालन किया है, जिसके लिए प्रशासन को धन्यवाद है। इससे ग्रोवर जी जहां गौरवान्वित हुई हैं, वहीं पर विद्यालय का गौरव भी बढ़ा है, तथा पूरे विद्यालय के लिये गर्व की बात है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात फैजाबाद जनपद की वह प्रथम

महिला हैं जिनहें राष्ट्रपति पुरस्कार से अलंकृत किया गया है। इस शुभ सूचना से मुझे जो हर्ष प्राप्त हुआ था उसकी अभिव्यक्ति शब्दों में सम्भव नहीं है। मैं उन्हें कुछ और तो नहीं अपितु आशीर्वाद देना अपना अधिकार समझता हूं और वह आशीर्वाद उनके जीवनपर्यन्त उन्हें प्राप्त होता रहेगा।

इण्टरमीडिएट कालेज के प्राचार्या पद से मुक्त होने के पश्चात् भी उन्होंने हम सभी तथा नगर के सम्भ्रान्त नागरिकों के आग्रह पर विद्यालय में रहना स्वीकार कर लिया तथा डिग्री कक्षायें उन्होंने अपने उत्तरदायित्व पर तथा अपने स्रोतों के आधार पर प्रारम्भ कीं जो कि निरन्तर दो वर्ष तक प्रगति पर रहा। किन्तु विधि का विधान जिसके समक्ष हम सभी नतमस्तक हैं, वह व्यवधान ग्रोवर जी के समक्ष उपस्थित हुआ और वह था उनके पतिदेव आदरणीय श्री ऋषिदेव ग्रोवर की अस्वस्थता, जिन्हें इस आयु में उपचार और देखभाल की आवश्यकता थी। गुणवती जी को अपने कर्तव्य का पालन करना पड़ा और परिणामस्वरूप डिग्री कक्षाएं सुचारु रूप से संचालित नहीं हो सकीं। मैं भी अवस्था अधिक होने के कारण अपना दायित्व नहीं निभा सकता था और डिग्री की कक्षायें बन्द कर देनी पड़ीं।

उल्लेखनीय है कि विद्यालय प्रांगण के जिस ओर डिग्री कालेज खोलने के लिये स्थान निश्चित किया गया हे और जिसमें एक भव्य यज्ञशाला बनी हुई है तथा प्रतिवर्ष आर्यसमाज टाण्डा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न होता है, उस स्थान तथा इण्टर कालेज के स्थान के मध्य में विद्यालय के स्वामित्व में ही एक अवैध मार्ग बना हुआ था जिसके बाहरगेट लगवाने में ग्रोवर जी ने जिस साहस एवं धैर्य का परिचय दिया वह सराहनीय है।

श्रीमती गुणवती ग्रोवर की सेवाओं तथा विद्यालय के लिए समर्पित उनके जीवन से प्रभावित होकर विद्यालय कमेटी ने उन्हें कमेटी की उपाध्यक्षा निर्वाचित किया है। वह वर्तमान में लखनऊ में रहते हुए भी विद्यालय के प्रत्येक कार्य में भाग लेती हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें स्वस्थ रखे, तथा भविष्य में उनके जीवन पर्यन्त उनका सहयोग एवं आशीर्वाद विद्यालय को प्राप्त होता रहे।

इन शब्दों के साथ ग्रोवर जी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता, तथा उनको आशीर्वाद प्रदान करता हूं।

आर्य कन्या विद्यालय – वर्तमान में

श्रीमती गुणवती ग्रोवर के सेवा से निवृत्त हो जाने के पश्चात उनके साथ रहकर उनके गुणों तथा योग्यता से अनुभव प्राप्त विदुषी कु. वीना वर्मा कार्यवाहक प्राचार्या का पदभार बड़ी ही योग्यता तथा परिश्रम से संभाल रही हैं। विद्यालय के अनुशासन और शिक्षण में किसी भी प्रकार की कमी नहीं है तथा हाईस्कूल और इन्टर का परीक्षाफल पूर्ववत् ही उत्तम हो रहा है। वीना जी स्वभाव से सरल एवं मृदुभाषी हैं, अपने उत्तरदायित्व के प्रति पूर्ण सजग रहती हैं। मुझमें उनकी आस्था एवं आदर है। वह मेरे अनुरूप हैं तथा मैं पूर्णरूपेण उनके कार्यों से सन्तुष्ट हूं। इधर दो वर्षों से मैं अपनी अस्वस्थता तथा दीर्घायु के कारण अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह पूर्ण रूप से नहीं कर पा रहा हूं, और इस कारण से वीना जी को स्थायी प्राचार्या की नियुक्तिके लिए जो प्रयास विभाग से होना चाहिए था, वह नहीं हो पा रहा है और यह कमी बनी हुई है। मेरा आशीर्वाद उनके साथ है तथा मुझे विश्वास है कि विद्यालय का भविष्य उनके हाथों में सुरक्षित एवं उज्ज्वल है।

विद्यालय की शिक्षिकाएं पूरी तन्मयता तथा उत्तरदायित्व के साथ अपना कार्य कर रही हैं। प्रायः सभी में प्रेम एवं सौहार्द है, किन्तु कुछ त्रुटियां हैं, और वह है कि कुछ अध्यापिकाएं अधिकार के प्रति अधिक सजग रहकर कुछ कार्य कर रही हैं जिससे विद्यालय की गरिमा पर प्रभाव पड़ता है तथा उससे पारस्परिक संबन्ध में भी तनाव आता है। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूं कि उनका उचित अधिकार हमेशा सुरक्षित है तथा किसी के प्रति कोई भेदभाव की भावना नहीं है। ईश्वर उन सभी को सद्बुद्धि प्रदान करें जिससे वे अपने कर्तव्य का पालन करते हुए विद्यालय की सेवा, प्रेमभाव से करती रहें। *[वर्तमान में सभी शिक्षिकाओं का पारस्परिक सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण है और सभी का विद्यालय के प्रत्येक कार्य में पूर्ण सहयोग प्रबन्धक जी को प्राप्त है।]*

विद्यालय की सम्पूर्ण व्यवस्था एवं प्रगति के साथ जुड़ी हुई है श्री रामबहोर मौर्य (विद्यालय के बड़े बाबू), श्री त्रियुगी नारायण त्रिपाठी, श्री लालजी पाठक एवं श्री रामसूरत मौर्य की सेवायें, जो अपने अपने पदों पर पूरी ईमानदारी और तत्परता से कार्यरत हैं। सभी आज्ञाकारी हैं तथा सभी की मुझमें आस्था है। इन सभी में, विद्यालय के प्रत्येक कार्य में इनके अपनत्व तथा त्याग की भावना है। मेरे व्यक्तिगत जीवन

में तथा विद्यालय के कार्यों में हर सम्भव सहयोग मुझे प्राप्त होता है तथा सभी मेरे सुख-दुःख के साथी हैं। मुझे इन सभी पर पूरा भरोसा है तथा इनके हाथों में विद्यालय का भविष्य सुरक्षित है। ईश्वर सभी को दीर्घायु प्रदान करें जिससे वे इस विद्यालय की सेवा सर्वदा, पूर्ववत् करते रहें।

विद्यालय का सेवक वर्ग जिसमें रामअचल, धर्मराज *(वर्तमान में नहीं हैं)*, रामानन्द, तीजू वगैरह हैं तथा दो महिला सेविकायें कार्यरत हैं, सभी आज्ञाकारी और स्कूल के प्रति वफादार हैं, सभी से मैं सन्तुष्ट हूं।

विद्यालय का भविष्य

विद्यालय की स्थापना से विद्यालय के वर्तमान स्वरूप तक का संक्षिप्त वर्णन मैंने अपनी स्मरणशक्ति से प्रस्तुत किया है इसमें भूल भी स्वाभाविक है और यदि कोई खास प्रसंग अछूता रह गया हो तो उसके लिए पाठकगण क्षमा करेंगे। मेरे ४६ वर्ष के प्रबन्धक काल में अनुभव के आधार पर मैं निश्चित रूप से पूर्ण विश्वास के साथ यह कह सकता हूं कि विद्यालय का भविष्य स्वर्णिम है तथा हर प्रकार से सुरक्षित है। इण्टरमीडिएट में विज्ञान विभाग की कमी है जिसके लिए प्रयत्न जारी है। मेरी इच्छा है कि मेरे जीवनकाल में यह पूर्ण हो जाय किन्तु यदि किसी कारणवश सम्भव नहीं हो सका तो भी विश्वास है कि इसकी पूर्ति भावी अधिकारी लोग अवश्य करेंगे। एक और प्रबल इच्छा है, कन्या विद्यालय को डिग्री कालेज में परिवर्तित करने की जिसके लिए मेरे मित्र पूर्व प्राचार्य देवी प्रसाद मिश्र भी बराबर प्रोत्साहित करते रहते हैं। अपने स्वास्थ्य की स्थिति को देखते हुए मेरे जीवन काल में इसकी पूर्ति सम्भव नहीं प्रतीत होती किन्तु मैं पूर्ण आशान्वित हूं कि भविष्य में यह विद्यालय अवश्य डिग्री कालेज का रूप धारण करेगा।

मैं अपने कार्यकाल में प्रत्येक दृष्टि से सन्तुष्ट हूं तथा सभी की मुझ में पूर्ण आस्था है। टाण्डा नगरवासियों में हिन्दू मुसलमान सिक्ख सभी ने मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान किया है और आशा है कि संस्था को इसी प्रकार का सहयोग, आशीर्वाद सदैव प्राप्त होता रहेगा। इन शब्दों के साथ सभी के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं और सभी को मेरा आशीर्वाद।

['शिक्षा-प्रांगण' अध्याय में पूज्य पिता श्री द्वारा वर्णित उन विन्दुओं पर प्रकाश डालना आवश्यक प्रतीत होता है जिनसे उनकी अंतिम इच्छायें सम्बन्धित हैं। २८ दिसम्बर १६६० को उनके देहावसान

के उपरान्त 'आर्य विद्या प्रचार समिति' की कमेटी ने मुझे विद्यालय के 'प्रबन्धक' का कार्यभार सौंपा और तब से मैं उस गुरुत्तर दायित्व का निर्वहन करते आ रहा हूं।

प्रथम - पिताजी, आदरणीय बहन ग्रोवर जी के सेवा निवृत्त होने के पश्चात् विद्यालय की ही योग्य, कर्मठ, कर्तव्य पारायण विदुषी कु. वीना वर्मा को प्रधानाचार्या के पद पर देखना चाहते थे, ईश्वर की कृपा से उनके निधन के थोड़े समय के पश्चात् वह स्थायी प्रधानाचार्या के रूप में कार्यरत हैं, और कोई भी विद्यालय अथवा उसका प्रबन्धक भाग्यशाली माना जायेगा जिसे कु. वीना वर्मा जैसी कर्मठ, निष्ठावान और चरित्रवान प्राचार्या प्राप्त हो।

विद्यालय की व्यवस्था में श्री रामवहोर मौर्य (विद्यालय के बड़े बाबू) एवं श्री त्रियुगीनारायण सहायक लिपिक के योगदान को विद्यालय कभी भी भुला नहीं पायेगा, कुसमय में ही दोनों का आकस्मिक निधन विद्यालय की अपूरणीय क्षति है। सम्पूर्ण विद्यालय परिवार उनके कृत्यों के प्रति सदा आभारी रहेगा। श्री लालजी पाठक ने बड़े बाबू का कार्यभार ग्रहण करके बहुत उत्तरदायित्व से अपने दायित्व को निभाया है विद्यालय उनके प्रति कृतज्ञ है। पूज्य पिताश्री की भावनाओं के अनुरूप श्री रामवहोर मौर्य के सुपुत्र श्री वेदप्रकाश मौर्य तथा श्री लालजी पाठक के सुपुत्र की सेवक श्रेणी में स्थायी नियुक्ति हो गई है। उनके ही समय में सेवारत श्री रामपूजन मौर्य की नियुक्ति भी सहायक लिपिक पद पर हो चुकी है। वर्तमान में बड़े बाबू के पद पर अनुभव प्राप्त श्री रामसूरत मौर्य कार्यरत हैं, जो बहुत ही जिम्मेदारी के साथ विद्यालय के सम्पूर्ण कार्यालय का दायित्व निभा रहे हैं। प्रत्येक छोटी, बड़ी समस्याओं के निदान के लिये अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना लगे रहते हैं। उनके सभी सहयोगियों में सर्वश्री रामपूजन मौर्य, श्री वेदप्रकाश मौर्य, श्यामजी का आपस में सामंजस्य है और सभी निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करते हैं और सभी का पूर्ण सहयोग बड़े बाबू को प्राप्त है तथा सभी विद्यालय के प्रति समर्पित एवं निष्ठावान हैं। उल्लेखनीय है कि स्व. श्री रामबहोर मौर्य के सुपुत्र श्री वेदप्रकाश ने विद्यालय प्रांगण में सुन्दर यज्ञशाला अपने पूज्य पिताश्री की भावनाओं के अनुरूप निर्मित कराया है-ईश्वर ऐसे ही आज्ञाकारी पुत्र सभी को दें।

द्वितीय - इण्टरमीडिएट में विज्ञान-विभाग की कमी भी शीघ्र ही

कुछ वर्षों के पश्चात् सन् १९९५ में पूरी हो गई और विज्ञान की मान्यता प्राप्त करके विज्ञान-विभाग बहुत ही सुव्यवस्थित रूप से संचालित है।

तृतीय - पिताश्री इन्टर कालेज को डिग्री कालेज के रूप में देखना चाहते थे, उसके लिए अथक प्रयास किये गये किन्तु शिक्षा-प्रशासन की अनेकों जटिलताओं से विवश होना पड़ा, किन्तु भविष्य में डिग्री कालेज भी स्थापित होगा, ऐसा हमारा प्रयास जारी है।

गत ११ वर्षों में विद्यालय की सर्वांगीण उन्नति हुई है। सर्वप्रथम विद्यालय-कमेटी तथा टाण्डा के नागरिकों की पूज्य पिताश्री में श्रद्धा एवं विश्वास के अनुरूप विद्यालय के नाम के साथ उनका नाम जोड़ दिया गया और वर्तमान में उक्त विद्यालय 'मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज' के नाम से प्रसिद्ध है।

विद्यालय में कक्षा-कक्ष की काफी कुछ कमी माननीय अभिभावकों के सहयोग से पूर्ण हो रही है। नवीन आधुनिक शिक्षा क्षेत्र में 'कम्प्यूटर शिक्षा' का समुचित प्रबन्ध विद्यालय की उपलब्धि है।

नगर में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा की नितान्त आवश्यकता थी उसको अनुभव करके गत ४ वर्षों से 'डी.ए.वी.एकेडमी' नामक संस्था संचालित है और अच्छे प्रगति के पथ पर अग्रसर है। ईश्वर की कृपा होगी तो कन्या विद्यालय की भांति यह विद्यालय भी अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त करेगा।]

दयानन्द बाल विद्या मंदिर, टाण्डा

आर्यसमाज ने, शिक्षा के क्षेत्र में दक्षिण दिशा छोड़कर समूचे भारतवर्ष में जो कार्य किया, उस तरह से व्यवस्थित एवं संगठित रूप से अन्य किसी संस्था ने नहीं किया, और आज भी देश में आर्यसमाज के अन्तर्गत जितनी शिक्षण संस्थाएं कार्यरत हैं उसकी तुलना कोई भी संस्था नहीं कर सकती। आर्यसमाज के इस योगदान से जो क्रान्ति आयी उसका परिणाम है आज का स्वतंत्र भारत। किन्तु देश का दुर्भाग्य है कि १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उस समय के राजनैतिक कर्णधारों ने अपने राजनैतिक स्वार्थ की सिद्धि के लिये भारत वर्ष को धर्मनिरपेक्ष राज्य की संज्ञा दी, तथा धार्मिक संस्थाओं द्वारा

संचालित संस्थाओं के ऊपर अंकुश रखना प्रारम्भ कर दिया। जो शैक्षणिक संस्थायें सरकार से सहायता प्राप्ति के आधार पर चलती थीं उन्हें अंकुश को स्वीकार करना पड़ा, जिससे संस्था के मूल उद्देश्य की पूर्ति में बाधा उत्पन्न होना स्वाभाविक था। राजतन्त्र के इस कुचक्र से बाधित होकर आर्यसमाज ने निर्णय किया कि शिशु-बालक तथा बालिकाओं के लिये निजी स्रोतों से विद्यालय खोले जांय। आर्यसमाज के इस निर्णय के सूत्रधार थे आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान एवं कर्मठ आर्य नेता स्व. पं. प्रकाशवीर शास्त्री।

सन् १९७५ में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी दिल्ली में मनाई गयी जिसमें टाण्डा के लगभग ५० आर्यपरिवार सम्मिलित हुए। वहां से लौटने के पश्चात टाण्डा के आर्यों ने भी आर्यसमाज प्रांगण में बालमंदिर खोलने का निश्चय किया और नामकरण दयानन्द बाल विद्या मन्दिर किया गया तथा विद्यालय की आचार संहिता बनाने का दायित्व सर्वश्री पं. विज्ञमित्र शास्त्री, घनश्याम जी आर्य तथा पं.देवनारायण पाठक को सौंपा गया। तीनों व्यक्ति शिक्षाविद् हैं और शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। इन लोगों के परिश्रम से दयानन्द बाल विद्या मंदिर टाण्डा की आचार-संहिता तैयार हो गई और विद्यार्थ सभा ने सर्वसम्मति से विद्यालय खोलने की अनुमति प्रदान कर दी। फलस्वरूप दयानन्द बाल विद्या मंदिर का प्रारम्भ यज्ञोपरान्त कर दिया गया। विद्यालय के संचालन के लिए एक विद्यालय कमेटी का गठन किया गया जिसके श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य (बिल्लूबाबू) अध्यक्ष, श्री मिश्रीलाल आर्य संरक्षक, श्री घनश्याम आर्य प्रबन्धक बनाये गये। विद्यालय के आचार्य पद पर पं. देवनारायण पाठक बी.ए.बी.एड. की नियुक्ति की गई।

लगभग ६ माह पश्चात् पाठकजी ने एम.ए. की परीक्षा देने हेतु अवकाश के लिए आवेदन-पत्र दिया जिसे प्रबन्धक महोदय ने स्वीकृति नहीं प्रदान की। अस्तु, पाठकजी त्यागपत्र देकर विद्यालय के उत्तरदायित्व से मुक्त हो गये।

पाठकजी के पश्चात श्री युगलकिशोर भाटिया को आचार्य का कार्यभार सौंपा गया किन्तु वह भी अधिक समय तक कार्यरत नहीं रहे। तत्पश्चात् श्री पं. सत्यप्रकाश आर्य की नियुक्ति आचार्य पद पर की गयी। उन्होंने लगभग तीन वर्ष तक बड़ी योग्यता एवं परिश्रम से विद्यालय की सेवा की, साथ ही आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में भी उनका सराहनीय योगदान रहा। सत्यप्रकाश जी की प्रेरणा से पाठकजी

तीन वर्ष पश्चात् पुनः दयानन्द बाल विद्या मन्दिर की सेवा शिक्षक के रूप में करने लगे। ज्ञातव्य है कि पाठकजी उस तीन वर्ष की अवधि में १ जनवरी १९७६ से १८ फरवरी १९८१ तक स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित एवं संचालित गुरुकुल वेदव्यास आश्रम, राउरकेला (उड़ीसा) के अधिष्ठाता पद का कार्यभार संभाल रहे थे, किन्तु पारिवारिक अशान्ति के कारण पाठकजी को वहां से मुक्ति लेनी पड़ी। श्री सत्य प्रकाश जी के पश्चात पाठकजी से आचार्य पद स्वीकार करने का आग्रह किया गया किन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया तदुपरान्त श्री सियाराम मौर्य को प्रधानाचार्य नियुक्त किया गया। मौर्य जी का व्यवहार उत्तम रहा। लगभद दो वर्ष पश्चात उनकी नियुक्ति राजकीय विद्यालय में हो गयी और वह दयानन्द बाल विद्या मंदिर से सेवा निवृत्त हो गये।

श्री सियाराम मौर्य के उपरान्त, बहुत अनुरोध पर श्री देवनारायण पाठक ने लगभग दो वर्ष तक पुनः प्रधानाचार्य पद पर रहकर विद्या मन्दिर की सेवा की और बाल शिक्षा निकेतन टाण्डा में नियुक्त हो जाने पर विद्या मंदिर से अवकाश प्राप्त कर लिया।

पाठकजी के पश्चात् श्री ओमप्रकाश चौहान दयानन्द बाल विद्या मंदिर में प्रधानाचार्य नियुक्त हुये और वर्तमान में पूरी योग्यता एवं निष्ठा से सेवारत हैं।

उल्लेखनीय है कि कुछ समय पश्चात श्री घनश्याम आर्य ने प्रबन्धक पद से त्यागपत्र दे दिया और तब से मैं दयानन्द बाल विद्या मंदिर के प्रबन्धक का कार्यभार संभाल रहा हूं। वर्तमान में सात शिक्षक कार्यरत हैं तथा लगभग ३५० छात्र-छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

विद्यालय में शिक्षा का स्तर उत्तम है। शिक्षकगण पूरा पारिश्रमिक नहीं मिलने पर भी सेवा भावना से काम कर रहे हैं और सन्तोषजनक ढंग से सीमित साधनों के अन्तर्गत विद्यालय का विकास हो रहा है। विद्याालय में न्यून से न्यून आय के लोगों के बच्चों को ध्यान में रखकर विद्यालय का शुल्क अति अल्प रखा गया है। इस तरह आर्यसमाज, अपने कर्तव्य का पालन करते हुए जनता-जनार्दन की सेवा में रत है। *[उक्त विद्यालय में कक्षा ७ तक शिक्षा दी जाती है।]*

आर्यसमाज टाण्डा के वर्तमान सदस्य तथा आर्यजन सभी उत्साही एवं कर्तव्य परायण हैं। अतः मुझे सन्तोष है कि आर्यसमाज व उसके अन्तर्गत कार्यरत संस्थाओं का भविष्य उज्ज्वल है।

जीवनादर्श

जीवनादर्श

अपने जीवन के अनुभव के आधार पर यह निवेदन करना चाहता हूं कि आस्तिकता और सदाचार के बल पर मनुष्य बहुत उन्नति कर सकता है। मैंने इन दोनों वातों को आर्यसमाज से सीखा और यथासम्भव उन्हें अपने जीवन में उतारा है। मुझे सामाजिक कार्यों में वहुत रुचि है इसीलिए विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ मैंने अपना घनिष्ठ संपर्क बनाये रखा। समाज की उन्नति देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता होती रही है। भगवान की कृपा से मैंने जब-जब सार्वजनिक कार्यों को करने का शुभ संकल्प किया तब-तब मुझे उदारचेता सज्जनों की सहायता मिलती रही और मेरा उत्साह बढ़ता रहा। लोगों से मिलते जुलते रहने, उत्सवों और सत्संगों में आते-जाते रहने पर मेरे व्यक्तिगत संकीर्ण विचार निर्वल पड़ते गये और समष्टिगत विचार सामाजिक कार्यों तथा संस्थाओं के रूप में उभरने लगे। वैदिक मान्यताओं, आर्यसमाज के सिद्धान्तों और अपनी आर्य सभ्यता और संस्कृति के प्रति लगाव बढ़ता गया। वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए टाण्डा आर्यसमाज के उत्सवों का समारोह बड़ी निष्ठा और आस्था के साथ मनाने में गौरव वोध करने लगा। यह परम्परा अब तक तो सुचारु रूप से चलती रही है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्यत् में भी भगवान की कृपा से और अधिक उत्साह के साथ मेरे पुत्र-पुत्रियों, सगे संबन्धियों एवं इष्ट मित्रों द्वारा चलायी जाती रहेगी।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित ग्रन्थों यथा सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय और उनके वेद भाष्यों आदि के अवलोकन, पठन-पाठन , प्रचार-प्रसार से सामाजिक कुरीतियां, धार्मिक अंधविश्वासों, राजनैतिक कुचक्रों एवं देश-द्रोह सरीखे

क्लेषों का उन्मूलन हो सकता है, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। वेद-शास्त्र-सम्मत मान्यताओं से ही सामाजिक और राष्ट्रीय उन्नति के साथ-साथ व्यक्तिगत तथा पारविारिक मर्यादाएं सुदीर्घ काल तक सुरक्षित रूप में स्थिर रह सकती हैं। इसीलिए इस वैज्ञानिक आधुनिक युग की आपा-धापी में से कुछ समय निकाल कर हमें अपने धार्मिक जीवन का नित्मकर्म यथा संध्या, हवन, भजन, मनन, ध्यान और स्वाध्याय करते रहना चाहिए।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह दिनचर्या प्रत्येक वैदिक परिवार का कर्तव्य है। मुझे संतोष इस बात का है कि मैंने यथाशक्ति इस वैदिक दिनचर्या को अपने परिवार में सुरक्षित रखा। अब आगे की बात भविष्यत् में उन सुरुचि सम्पन्न युवा आर्य कर्णधारों पर है जिनका मन, वचन और शरीर पुण्य रूपी अमृत से परिपूर्ण है, परोपकार द्वारा तीनों लोंक को प्रसन्न करने वाले हैं, दूसरों के छोटे से छोटे गुण को पर्वताकार मानकर आनन्दित होने वाले हैं किन्तु ऐस सज्जन कितने हैं? बहुत कम। ऐसे ही सत्पुरूपषों से संबन्ध में महाराज भर्तृहरि ने लिखा है-

मनसि वचसि काये पुण्य पीयूष पूर्णा-
स्त्रि भुवन सुपकार श्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुण परमांणून्पर्वती कृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः क्रियन्तः।।

जब सन् १८७५ में आर्यसमाज की संस्थापना महर्षि ने बम्बई महानगर में की थी उस समय ऋषिवर की उदात्त कल्पना सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने की रही जिसकी सफलता के मूल रूप में सत्य ज्ञान के के प्रचारार्थ ऋषि ने विपुल साहित्य सृजन किया और स्वयं आजीवन वैदिक मान्यताओं के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। बाल्यकाल के मूलशंकर को प्रौढ़ावस्था तक अनेक बार कालकूट के प्याले भी पीने पड़े। किन्तु यह सब किसलिए? मानव समाज के उद्धार के लिए ही तो ऋषिवर ने अपने प्राणों की आहुति परोपकार की पावन वेदी पर चढ़ा दी। महर्षि ने अपने तपःपूत वैदिक विचारों के रूप में हमें दिया ग्रन्थ रत्न- 'सत्यार्थ प्रकाश'। इस ग्रन्थ की एक-एक बात मानव जीवन और मानवता के हित संवर्धन में कही गयी है। इस ग्रन्थ ने मुझे आर्यसमाज के कार्यों में अपना तन-मन-धन समर्पित कर देने की प्रेरणा दी है। इसमें लिखा है, देखिए ऋषिवर दयानन्द के निपक्ष्क्ष हार्दिक उद्गार-

"इसीलिए जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तों कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। ... .क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।" (सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास)

ऋषि पुंगव के ये बेलाग, दो टूक, निर्भ्रान्त और सुस्पष्ट उद्गार मुझे अपने राष्ट्र और समाज के प्रति अपार निष्ठा, आस्था, श्रद्धा, प्रेम एवं भक्ति भाव से आपूरित कर सतत प्रेरणा देते रहे और मेरा मन-मानस ऐसे उदात्त, उदार तथा सार्वजनीन विचाराम्बार के प्रवेग से उड्डीयमान, होता हुआ वैदिक मान्यताओं, वैदिक धर्म और राष्ट्र सेवा में अजस्त्र उत्साह एवं पूर्ण मनोयोग से लगता रहा। इसके साथ ही साथ जब मैं यह सुनता और देखता कि मेरे ज्येष्ठ पुत्र आनन्द कुमार आर्य अपने सम्पूर्ण परिवार, मित्र मंडली और सुपरिचितों के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल और कलकत्ता की आर्यसमाजों के कार्यों को सर्वात्मना समर्पित भाव से संभाल रहे हैं और उनके साथ हमारे समस्त परिजन ऐसे पावन कार्य में उनका सहयोग दे रहे हैं तब मेरा हृदय और मन गद्गद् हो उठता है। यदि मेरी यह लघु आत्मकथा आप महानुभावों को यत्किंचित सद्प्रेरणा दे सकी तो वही आपका परितोष मेरे इस लघुजीवन ज्योति का यथेष्ट स्नेहिल संबल, पाथेय और पारितोषिक बनेगा।

इत्यलम।

सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

ओ३म् स्वस्ति, ओ३म् स्वस्ति, ओ३म् स्वस्ति।

●●●

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ज्ञानी जैल सिंह द्वारा
भू. पू. प्रधानाचार्या श्रीमती गुणवती ग्रोवर का राष्ट्रीय सम्मान

मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कालेज का मुख्य द्वार
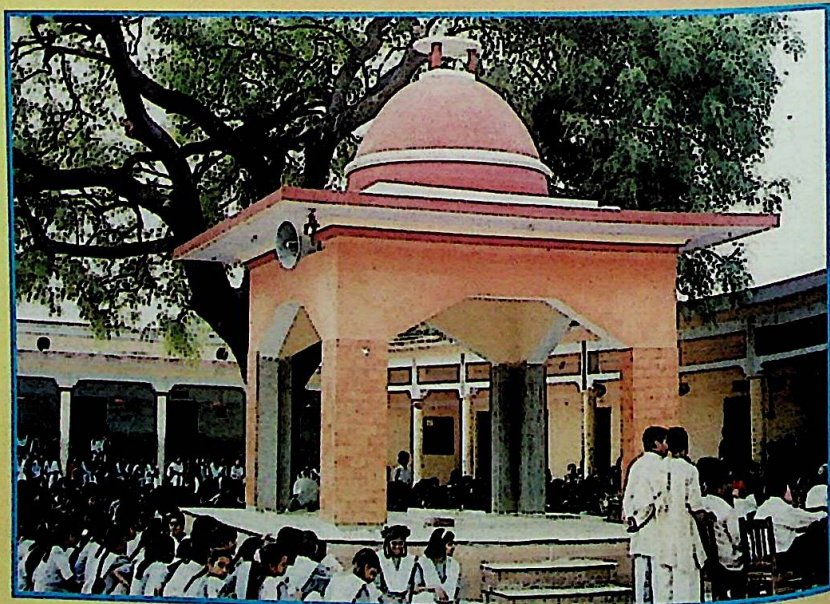
आर्य कन्या इन्टर कालेज की भव्य यज्ञशाला

बाबू मिश्रीलाल जी अपनी पत्नी, समधिन श्रीमती रामादेवी
एवं समधी पूरनबाबू (पटना) के साथ
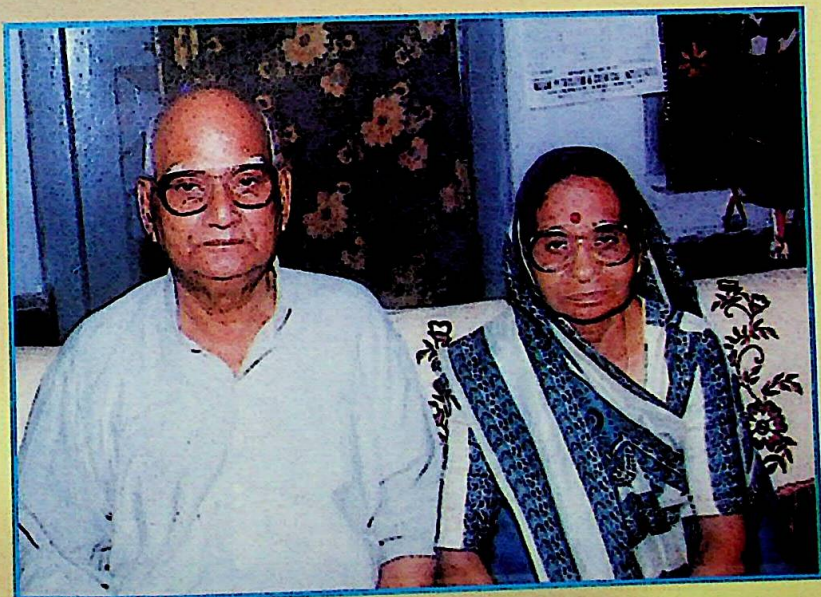
श्रीमती सुशीला देवी तथा उनके
पति श्री मनोहरलाल वर्मा (बहराइच)

बाबूजी के द्वितीय पुत्र राजेन्द्र कुमार आर्य, बहूरानी नीला आर्य, पौत्र सतीश, पौत्री एकता व संगीता के साथ
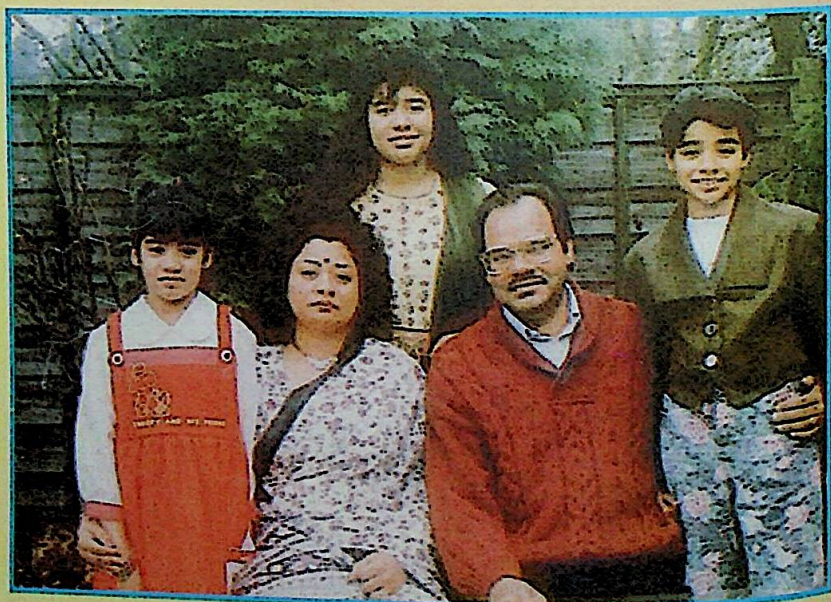
बाबू जी के तृतीय पुत्र डा. नरेन्द्र कुमार, बहूरानी शमा, पौत्रियां प्रियंका, नवीनता एवं श्रद्धा
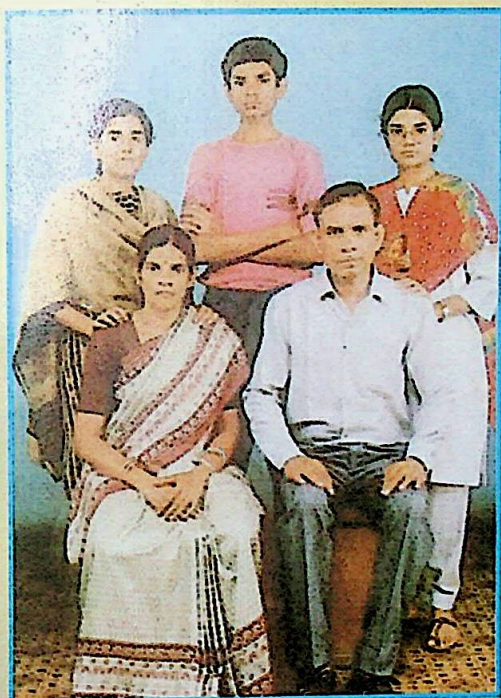
पुत्री श्रीमती विद्योत्तमा देवी, दामाद श्री राजेन्द्र प्रसाद,
नतिनी रश्मि व सोनी तथा नाती सौरभ

कनिष्ठ पुत्री श्रीमती राजकुमारी गुप्ता
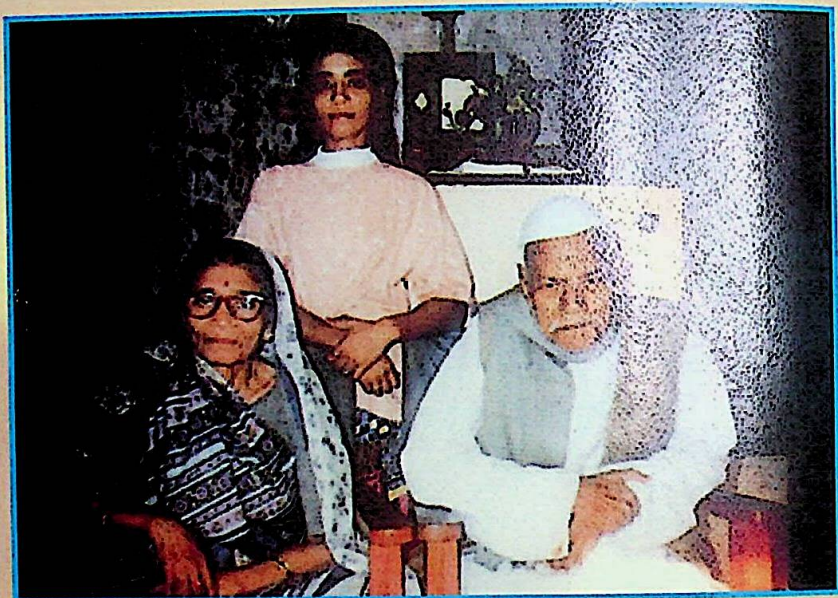
नतिनी रिनी अपने नाना एवं नानी के साथ

प्रसिद्ध भजनोपदेशक कुँवर महिपाल सिंह को सम्मानित करते हुए माताजी श्रीमती रामप्यारी देवी
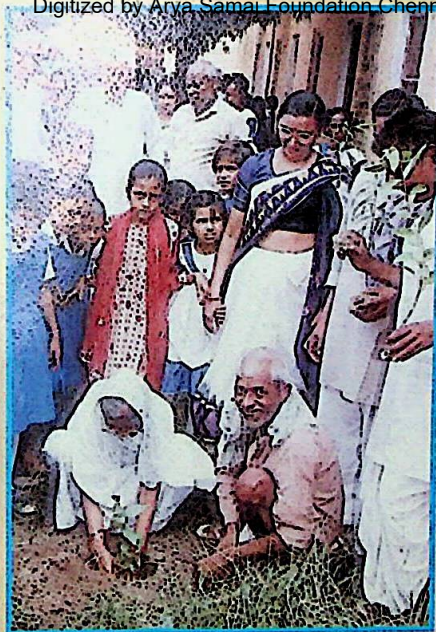
वृक्षारोपण करती हुई माता जी श्रीमती रामप्यारी देवी
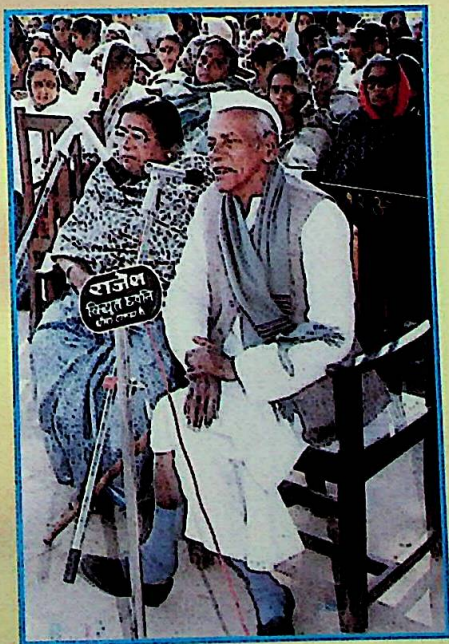
विद्यालय के एक कार्यक्रम में
बाबू जी श्रीमती गुणवती ग्रोवर के साथ

बाबू जी की दौहित्रियां आराधना एवं करिश्मा

बाबूजी – प्रसन्न मुद्रा में

ज्येष्ठ भ्राता स्व. जियालाल जी आर्य

बहन – शान्तिदेवी जी (बलिया)

बाबूजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य, बहूरानी मीना आर्य, पौत्री चि.ममता, पौत्र चि. मनीष एवं चि. अमिताभ
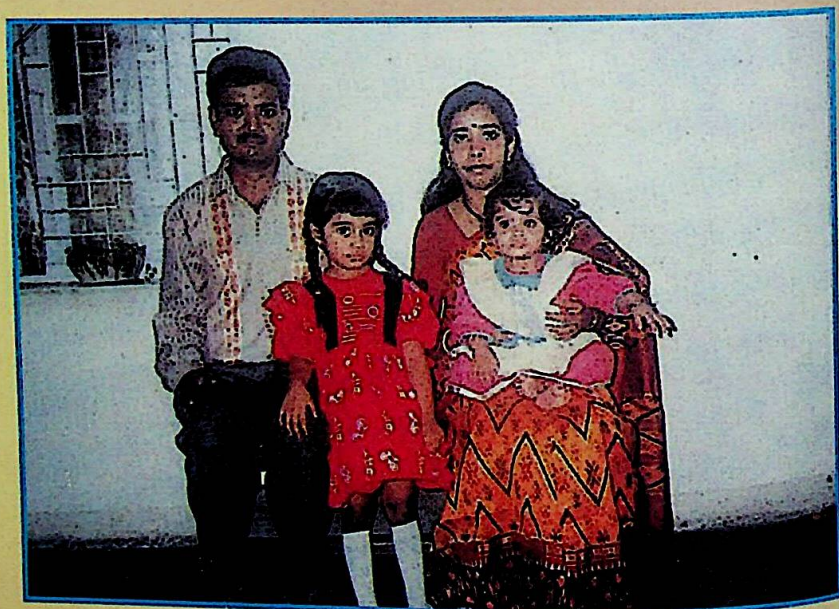
पौत्री चि. मीता (पुत्री श्री आनन्द आर्य), दामाद चि. जयेन्द्र जायसवाल (बड़ौदा) अपनी दोनों पुत्रियों के साथ

बाबू मिश्रीलाल आर्य

जीवन यात्रा के प्रमुख बिन्दु

पिता —स्व. गयाप्रसाद जी आर्य
जन्म स्थान —टाण्डा, फैजाबाद, उ.प्र.
पुण्य तिथि —क्वार सुदी तेरह
सं. 1960 वि.

कार्यकलाप :

धार्मिक क्षेत्र

यज्ञ में अपार निष्ठा, स्थान स्थान पर यज्ञशाला का निर्माण, आर्यसमाज की स्थापना, वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार का बीड़ा, बाल–विवाह, छुआ–छूत, मृतक–भोज आदि कुप्रथाओं का प्रबल विरोध, शिक्षा के माध्यम से धर्म शिक्षा

सामाजिक क्षेत्र

निर्धन विद्यार्थियों का आर्थिक सहयोग व आश्रम,संन्यासियों, महात्माओं, विद्वानों का आदर आर्यसमाज, टाण्डा के पांच दशकों से अधिक समय तक प्रधान

राजनीतिक क्षेत्र

स्वदेश–प्रेम, स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय योगदान, जेल की यात्रा

शैक्षणिक क्षेत्र

शिक्षा से प्रेम, सम्बन्धित संस्थायें : ●आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, टाण्डा (फैजाबाद) – संस्थापक एवं प्रबन्धक ●दयानन्द बाल विद्या मन्दिर, टाण्डा – प्रबंधक ●होवर्ट त्रिलोकनाथ इन्टरकालेज, टाण्डा – संस्थापक सदस्य ●त्रिलोकनाथ महाविद्यालय, टाण्डा – संस्थापक सदस्य ●जनता जूनियर हाईस्कूल, टाण्डा – संस्थापक सदस्य ●श्रीरामनारायण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, फूलपुर, टाण्डा – कार्यवाहक प्रबन्धक ●कामता प्रसाद सुन्दरलाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, साकेत, फैजाबाद – स्थापक सदस्य ●गुरुकुल

आर्य समाज के दस नियम

(1) सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

(2) ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसीकी उपासना करनी योग्य है।

(3) वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना, और सुनना–सुनाना सब आर्यों का पर धर्म है।

(4) सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

(5) सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

(6) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

(7) सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथा योग्य वर्तना चाहिए।

(8) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

(9) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

(10) सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।